


ड० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature' (1935)
Page 162:—

"Sadayavatsa kathā' has charmed Gujarat for about five hundred years. Sadayavatsa and Sāvā-
lingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated. Ultimately they meet after undergoing fearful experiences, in all of which the fantastic vies with the miraculous. The story is taken probably from some unknown Prākṛit source. Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488."



संकलना

भरण

चपोद्घात ~~~~

पृष्ठ अ-ई

प्रस्तावना~~~~~

पृष्ठ उ-न

श्री सदयवत्स वीर प्रबंध (मूल मात्र)

पृष्ठ १-१०५

परिशिष्ट १-सदयवत्स सार्वलिंगा पाणिग्रहण चतुर्थी पृष्ठ १०६-१३४

परिशिष्ट २-कवि केशववृत्त

पृ. २३५-१८५

टिप्पणी-सदयवत्स सार्वलिंगा चतुर्थी

पृ. १८७-२०

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिश्रुत 'माघवानल कामकंदला प्रबंध'
(१६१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीरप्रबंध' (१६१५)
के प्रथम निवेदक ।

अनेक अप्रकट संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और
प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य संशोधक ।
(पट्टण ग्रंथ-भण्डारों की सहाय से आघार लेकर)
'गायकवाड़ प्राच्य ग्रंथमाला' के आद्य संपादक

राजरत्न

पं० चीमतलाल दलाल की स्मृति में

सविनय

अपभ्रंश



मंजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिकर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुयायी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सीमाव्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से सत्या लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, संवे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सम्शोधनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और धन की आवश्यकता है। भाषा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्राप्ति द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होने ही निवट नविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशन करने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और धन-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विखाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं बल्कि राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं.—

१. कल्लायण, ऋतु वाच्य । ले० श्री नानूराम सस्वर्ता ।
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।
३. घरस गाठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

‘राजस्थान-भारती’ में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितार्ये, कहानियाँ और रेखाचित्र आदि छप रहे हैं ।

४. ‘राजस्थान भारती’ का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एक अल्प कठिनाइयों के कारण, अंशमय रूप से इसका प्रकाशन संभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ ‘डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक’ बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री में परिपूर्ण है । यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है । इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और बृहत् विशेषांक है । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएँ हमें प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओं के लिये ‘राजस्थान भारती’ अनिवार्यतः सग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि वि-
लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरेश-
स्वामी और श्री मगरचंद नाहटा की बृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

• राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित एवं उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन तथा के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे पा जा रहा है—

• पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से ध्रुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ भ्रंश 'राजस्थान भारती' में काशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व के कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

• राजस्थान के अज्ञात पवि जान (ग्यामतखा) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अंक में काशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासो' तो प्रकाशित भी खाया जा चुका है।

राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबन्ध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं सलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल लोचगीत, सोरियाँ, रर लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो ाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणभाटा के गीत, पावूजी के पवाडे और राजा रयरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल ग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित। चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुंहता नैलसी रो ख्यात और अनोखी भान जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है ।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है ।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्ट वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं ।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है । इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है ।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिमो तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोक-मान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं ।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विषय मनीष साहित्य का निर्माण होता रहता है । विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं ।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है । डा० बामुदेवशरण मगवाल, डा० बैलारानाय वाटवू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० हवलू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिमो-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं ।

गत दो वर्षों से महानवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है । दोनों वर्षों के आसन-प्रतिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, इ. डलोद थे ।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है । अधिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो भीन और एकान्त साधना की है वह, प्रकार से घाने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-मंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अल्पतम अंश ही प्रकाश में आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलम्ब्य एवं अनर्थ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थान्तर के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये (१५०००) २० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विनास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास सोनी की वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	" " "
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिगम् गीत—	" " "
८. पवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पौरदास सानू स ग्रंथावली—	श्री भगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती बेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री भगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री भगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भाषाणी
१५. सदयवत्स पौर प्रबंध—	श्री० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजमूरि कृतिकुमुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुमुमाजलि—	" " "
१८. कविवर धर्मवर्द्धन स ग्रंथावली—	श्री भगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा द्रष्टा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. बीर रस रा द्रष्टा—	" " "
१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२. राजस्थानी व्रत कथाएँ—	" " "
३. राजस्थानी प्रेम कथाएँ—	" " "
४. चंदावन—	श्री रावत सारस्वत

२५. बहुली—	श्री अमरचंद नहाय मोर म विनय सागर
२६. जिनहपं ग्रंथावली	श्री अमरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयानी—राजस्थान का बुद्धिबर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरता भाद्रा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जंजलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अमरचंद नाहटा), नामदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावर कोरा (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु पर्याभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुस्ती की लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त करने में पूरा पूरा योगदान रहा है । अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं ।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव श्रुती रहेगी ।

इनने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो गराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं ।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अमय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय बलरत्ना, जैन भवन संग्रह बलरत्ना, महानोर तीर्थक्षेत्र अनुमया समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयश्री, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराधो, प० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जंतलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतिपा प्राप्त होने में ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है । अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्तव्य समझते हैं ।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का संपादन अमसाध्य है एक पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है । हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये छुटियों का रह जाना स्वाभाविक है । गुरुद्वयः स्वल्पनं क्वपि भवम्येव प्रमाहृतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः ।

आशा है विद्वद्बृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें सामान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास की सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बढ़ी सकेंगे ।

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिनांक २००८

निवेदक
लालचन्द्र फोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट

उपोद्घात

‘सदयवत्स वीरप्रबन्ध’ का पहला परिचय- प्रस्तुत प्रबंध

के अस्तित्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई ॥ १९१५ (वि स १९७१) में गुजरात के प्रख्यात शहर सूरत में आयोजित की गई (१) पाचवीं गुजराती साहित्य परिषद के समक्ष उन्होंने “पट्टण के ग्रंथ भांडार और उसमें बहुतायत रहा हुआ अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य” (“पाटणना भंडारो अने खास करीने तेमा- रहेलु अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य”) नाम का एक बड़िया निबन्ध पढ़कर मुनाया था। उसमें एक अजिन कवि ‘भीम’ की रचना (लिपि वि स १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होंने ही सर्वप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री काँटावाला से संपादित ‘साहित्य’ मासिक पत्रिका के अगस्त ई स १९१४ (वि स १९७०) के अंक में आम्रपद्र (आमोद) जिला भरुच के फायस्य कवि गणपति की रचना-कृति “माधवानल कामकदला प्रबंध” (रचनाकाल वि स १५७४) कि, जो २५०० दोहा छंद का काव्य-ग्रंथ था उसके प्रति सबसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठकों एवं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रंथागार में से अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रंथों का परिचय एक सूचिके रूप में पहले एकत्र किया था। क्योंकि उनके पहले पट्टण के ग्रंथागार के साहित्यिक ग्रंथों की सूचि (नोष) या सकलित यादी तैयार करने के लिये डा० व्युलर, डा० पीटरसन, एवं प्रा० भणिलाल न द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहाँ के ग्रंथागार के सरसको-का सहकार प्राप्त नहीं हुआ था। किन्तु श्री दलाल महोदय, स्वयं जिन होने के नाते, उन्होंने उन ग्रंथागार के सरसको का सहकार एवं सद्भाव प्राप्त कर लिया था। और अत्यंत परिश्रम करके यहाँ के (पट्टण के ग्रंथा-

गार वे) साहित्यक या द्वारा उग साहित्य का साहित्य जगत में परिचय दिया। गुदरी के लान की तरह, साहित्य प्रकाश में लाया गया। साहित्य जगत में नई रोशनी आई। पत्रस्वरूप बढोदा रियायतकी श्री गायकवाड प्राच्य ग्रयमाला (G O Series) के पढे सपादन एय तनी-पद पर उनवी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय यह एय मानन्दजनक एय आदचर्यकारक पदना घटी है ऐसा बहने में मन्नेच नहीं होता है। क्याकि श्री दलाल महोदय न जिस अ-जैन वाक्यग्रया की सर्व प्रथम उद्धोपणा की थी, वही दोनो प्रयो क सपादन करने का सद्भाग्य मुमें प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह कार्य मुमसे होगा? किनु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसमें ईश्वर का कुछ सबेत्त होगा ऐसा मैं समझता हू।

ई स १९४२ (वि स १९९७) में "माधवानन्द कामकदला प्रबन्ध" मूल-मात्र, एय परिशिष्ट और उपोद्धात सहित प्रथम भाग श्री गाय-कवाड प्राच्य ग्रयमाला में ९३ पुष्प के रूप में प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तैयार होने जा रहा है।

सपादन का इतिहास- प्रस्तुत "सदयवत्सवीर प्रबन्ध" नामका ग्रन्थ का सपादन कार्य करने का निर्णय ई स १९३९ (वि स० १९९५) में किया गया था। उसके बाद अय हस्तलिखित पोथियाँ एय उपयोगी साहित्य की खोज में कुछ वर्ष निकल गये। प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रकाशन-कार्य अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर स होने वाला था। उससे मैंने कहा एय प्रेस-वापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहा के 'नवजीवन' छापखाने से ई स १९५० (वि स २००६) के आसपास के समय में देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई कुछ गलतियाँ वाली प्रूफ-प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। मैंने इन गलतियों की दुरुस्ती करने की प्रार्थना की। किनु वहाँ के कार्यवाहको को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नहीं होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर इस कार्य को अपने

रङ्गाने मे अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालों ने यह सिरपन्की वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका कार्य यथायक रुक गया।

श्री नाहटाजीकी प्रेरणा- श्री अमरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके "राजस्थान भारती" नामके मासिक पत्रिका के अंक मे सन् १९५८ मे प्रकाशित एक विस्तृत लेख मे 'उस प्रबन्ध का प्रकाशन होने वाला है,' ऐसा नोट के रूप मे उल्लेख किया था। बाद मे (वि स २०१६) ई स. १९६० के सितम्बर मास मे श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रबन्धको श्री सादूल राजस्थानी रिमचं इन्स्टीट्यूट बीकानेर ग्रन्थमालामे प्रकट करनेकी, संस्था के सेक्रेटरी (मन्त्री) के नाते, मुझे सूचन किया, प्रार्थना की। मैंने धन्यवादके साथ उनकी प्रार्थनाको सहर्ष स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रबन्धके प्रकाशन-कार्य की कहानी या पूर्व इतिहास अब पूर्ण होता है।

आभार दर्शन- इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशमे लाने की सुविधा एवं सहायता देने के लिये, तथा तत्सब धी अनेक हस्त-लिखित प्रतिया एवं अन्य सामग्री भेजकर रचनाकृतिके संपादन, संपादन एवं प्रकाशन आदि कार्यों मे जो सहायता प्रदान की है, इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धन्यवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

उस संपादन की प्रस्तावना लिखने मे उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का "राजस्थान भारती" मे प्रकाशित "सदयवत्स सावलिंगा की प्रेमकथा" नामके अत्यन्त अम्यासपूर्ण एवं विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका श्रुण-स्वीकार करते हुये अत्यन्त हर्ष होता है।

प्रस्तुत ग्रन्थमे मैंने सशोधित की हुई एवं अन्य सब गुजराती सामग्री का हिंदी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एवं साहित्यिक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यपरतन-प्रयाग) जी को मैं धन्यवाद देता हूँ।

इस प्रबन्ध के सम्पादन में मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गांधीजी ने पाठ निरूपण और टिप्पणी में हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हूँ ।

फोटोग्राफ- 'प्रवच' और 'चउपाई' की प्राचीन प्रतियों के आदि एव अन्तभागके फोटोग्राफ (चित्र-रूपी) भी दिये हैं । जी प्रतिया यहीदा प्राच्यविद्यामंदिर के निर्यामक श्री डा० भोगीलाल जी साडेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं । जिससे लिपियों के प्रकारान्तरका परिचय भी होगा । और सुविधा रहेगी ।

टिप्पणीमें कई अरन्ध्र शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने में सुविधा रहेगी ।

प्रबन्ध में से एक दिलचस्प प्रसङ्ग का चित्र की प्रतिकृति एक सचित्र प्रति में से दी गई है ।

"चैतन्यधाम" ३४ प्रतापगंज

भंजुलाल मजुमुदार

यहीदा ०

(गुजरात राज्य)

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप- वीररस प्रधान एवं भोजपूर्ण शैलीवाला काव्य 'प्रबंध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई सार्थक रचना का नाम है 'प्रबंध' (मणिलाल बकोरभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबंध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई. स. १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योंके नाम, खास करके 'प्रबंध' रचे गये हैं। जैसेकि कुमारपाल प्रबन्ध, भोजप्रबन्ध, चतुर्विंशति प्रबन्ध, प्रबन्ध वितामणि, प्रबंध श्रेणि, जैसे संस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रंथों में एक या अनेक वीरव्यक्तियों के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबंधों में संबंधित व्यक्तियों में विमल मंत्री जैसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एव जगड् जैसे दानवीर, और विक्रम जैसे युद्धवीर, और सद्यवत्स गा पृथ्वीराज जैसे शृंगारवीर भी उल्लेखनीय हैं। यो प्रबंध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोंके चरित्र-निरूपण के ही काव्य है।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमें बयान करना चाहिये। क्योंकि वीररस उत्तम पुरुषों में ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी कार्य में वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य में उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यून पाँच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह, धर्म करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अर्जुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कर्ण दानवीर हैं। शिबिराज दयावीर हैं। भगवान् कृष्णचंद शृंगारवीर के रूप में विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, पृथ्वीवीर जैसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पाँच ही भेद क्यों कहे गये ? इसका समाधान इस प्रकार हो सकता है कि क्षमाका अन्तर्भाव दया में हो जाता है । तथा सत्य आदि का सन्निहित धर्म में ।

अंग्रेजी वीरपूजा की भावना-कालाइट के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रों में वीरता दिखाने वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है । इसमें वीरता को व्यापक अर्थ में सूचित किया गया है ।

कवि, धर्मगुरु, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षेत्र में हरेक को वीरता दिखलानेका पूर्ण अवकाश रहता है । और वीरता दिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य हैं । उपर्युक्त दिखाये गये पाँच प्रकार के भेद में इसका भी अंतर्भाव हो जाता है ।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोंके चरित्र 'प्रबन्ध' रूपमें 'पद्याडो' रूप में, श्लोक (सलोका) रूप में, या 'रासो'के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे 'छंद' में रचे जाते हैं । और रचे भी गये हैं । जिसके हृष्टांत ऊपर दिये गये हैं । सामान्य मनुष्यों के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नहीं हैं, या ऐसे सग्वारण मनुष्यों के चरित्र काव्य में वर्णित किये नहीं जाते हैं, या योग्य भी नहीं होते । इसलिये गुजराती एवं राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबन्ध, पद्याडो, रासो तथा छंद, एवं श्लोका, ये मन्त्र करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हों, ऐसा समझना है ।*

* ५

कान्हडदेवों

कुछ प्रतियों में

पद्याडो,

कान्तिलाल

वीरगाथा काल- वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियों एवं

भाट चारणों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य पराक्रम एवं प्रभाव
आदि के वर्णन अपनी ओजपूर्ण सनकदार बानी में काव्यों में किये हैं।
ये लोग कभी कभी रणभेद में जाते थे, तलवार भी चलाते थे। और
अपनी वीर बानी से सैन्य में शौर्य का संचार करते थे। खुद भी युद्ध
में प्राणापेक्ष कर देते थे। ऐसी रचनाओं की पीढ़ीगत रक्षा भी की जाती
थी एवं वृद्धि भी।

हमें वीरगाथाएँ दो रूप में मिलती हैं। (१) मुक्तक रूप में, और
(२) प्रबन्ध में। जिस तरह युरूप में वीरगाथाओं के विषय (Age of
Chivalry) युद्ध एवं प्रेम थे, वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है।
किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लश्कर
के साथ उस राज्य पर घावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती
या अपहृत की जाती थी। इसमें वीरा का वीरत्व, गौरव, शौर्य, अभिमान,
बल, प्रभाव, आदि माना जाता था। इस तरह प्रबन्ध काव्यों में वीररस
के साथ दृढ़ गार रस का भी मिश्रण होता था, हुआ है।

वीररस के मुक्तक- वीररस के प्राचीन मुक्तकों का सप्रह
मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य ने 'प्राकृत व्याकरण' ग्रन्थ में दृष्टान्त के रूप में
प्राप्त होता है। इसके सिवा भी प्रबन्ध भाव्य एवं वीरगीतों के स्वरूप में
रचना हुई है।

रासा साहित्य- गुजराती के रासा युग के समसामयिक काल
को हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल" नाम दिया गया है। इस काल
में 'सुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' 'हम्मीर रासो'
'जगनिक ना आल्हाखंड' आदि रचना हुई हैं।

गुजराती में वि.सं. १३७१ के आसपास श्री अबदेव सूरि रचित
"समरासु" में पट्टण के समरसिंह नामक एक खोसवाल वणिज बनिपा
ने स.घ. (माना) निवाल के शत्रु जय पहाड पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर
का जीर्णोद्धार किया। और घर सौट आया उसकी शासक या तीर्थ-

यात्रा आदि का वर्णन आता है। इसमें नमरसिंह स्वयं दानवीर एवं धर्मवीर भी दिसाई देता है।

श्री वपपमूरि के वि. सं. १३९२ में संस्कृतमें रचित ग्रन्थ 'नाभि-नदन जिनोद्धार प्रबन्ध' में भी इसका वर्णन है। श्री अम्बदेवमूरि इस यात्रा में सम्मिलित थे। ऐसा उसमें उल्लेख है।

गुजराती प्रबन्ध साहित्य- 'विसलनगरा नागरखम्' पद्मनाभने वि. सं. १५१२ में 'कान्हडे प्रबन्ध' की रचना की है। यह बिना सुपरिचित तथा सुविदित हो गई है। वि. सं. ११६८ में श्री तावण्यसमयने 'विमल प्रबन्ध' की रचना की है वह भी प्रसिद्ध है। कायस्थ कवि गणपति ने 'माधवानल कामकदला प्रबन्ध' की रचना वि. सं. १५७४ में आन्नपद, बामोद जिला भडोच में की है।

शील से, शोभित नायक नायिका का दृग्गार इसका धर्म्य विषय है। इसमें माधव चारित्र्य-शुद्ध दृग्गारवीर है। कामकदला अभिज्ञात गणिका-पुत्री है। और वह मृच्छकटिक की पात्र वसन्तसेना का स्मरण कराती है। इसीलिये उनका मिलन साहसवीर तथा परदुःखमञ्जन ऐसे राजन विजय द्वारा होता है। इस प्रबन्ध में विप्रलम्भ तथा रतिश्रीडा ये दोनों प्रकार के दृग्गार रसप्रद बाणी में वर्णित किया गया है। फिर भी इसमें कविने शीलका, चारित्र्यका, माहात्म्य अधिक भावपूर्वक स्थापित किया है।

वैष्णव कवि श्री गोपालदास ने "श्री बल्लभाद्यान" श्री बल्लभाचार्य (जीवनकाल वि. सं. १५२९-१५८७) तथा श्री विट्ठलनाथजी (जीवन-काल वि. सं. १५७२ से १६४२ में) धर्मवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्ठल नाथजी की प्रशस्ति की, प्रबन्ध-रूप में नौ गेय पद्यों में रचना की है।

संस्कृत गद्य कथा- श्री रत्नसेखर के शिष्य श्री हर्षवर्धन-गणिने वि. सं. १५२७ में "सदयवत्स कथा" संस्कृत गद्य में रची है। यह शायद एक जैनोत्तर कवि भीम ने रचित "सदयवत्स धीर प्रबन्ध" की वि. सं. १४८८ में श्रीपट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम प्रतिकृति प्राप्त हुई है। इस बिनासे इस कृतिकी रचना के संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानतः वि. सं. १४६६ में हुई होगी, ऐसा कुछ लोगों ने अनुमान किया है। दूसरी प्रति वि. सं. १५९० में एवं तीसरी प्रति वि. सं. १६६२ की प्राप्त है। इस परसे कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सार्वलिङ्गा की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एवं उपलब्ध संस्करण है।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने जिस प्रति की जांच की थी उसमें पद्य-संख्या ६७२ थी। दूसरी प्रति में ६८९ पद्य-संख्या है। किंतु सर्व प्रतियां का मिलान करनेके बाद प्रबन्ध की ७३० जितनी कड़ियां प्राप्त हुई हैं।

संस्कृत कथानक भीम के प्रबन्ध का मुख्यतः अनुसरण करता है। किंतु उसमें जिनघर्म की महिमा का गुथन करलेनेकी तक श्री हर्षवर्धन-ने छोड़ दी नहीं है। इन प्रसंगों का उल्लेख कथा-सार देते समय कौंस या कोष्टक में सूचित किया जायेगा। खरतर गच्छ के यति श्री कीर्ति-वर्धन ने इस कथानक में जिनमत का कुछ भी प्रचार नहीं किया है।

कथानक का मूल- 'कथा सरित् सागर' जो कि लोककथाओंके महासागर स्वरूप गिना जाता है। उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नहीं है। फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाना, प्रतिष्ठान नगर, शालिवाहन, बावनवीर, और खापर घोर इत्यादि उल्लेखों से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता-भरे वर्णनों से या साधारणतः इस लोक-कथा की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'विक्रम कथा-चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है।

* संस्कृत में 'सदयवत्स', प्राकृत में 'सुदयवत्स' 'सुदवत्स' एवं सुह, गुजरातीमें 'सदयवत्स' और 'सदेवत्स' इस तरह राजस्थानी-मारवाड़ी में 'सूदो', एवं 'सदेवत्स' शब्द हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सर्व शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाले हैं। कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं।

रगा का निर्देश कहीं कहीं सार्वलिङ्गी के रूप में भी प्राप्त है।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमे सद्यवत्स कथा के विषय में दो प्राचीन उल्लेख प्राप्त होते हैं। (१) मलेक मुहम्मद जायसीकृत रचना पद्मावत में इस कथानक का उल्लेख उसन किया है। और श्री सुधाकर द्विवेदी वाला जो स स्वरण हैं उसमें यही पाठ है।

(२) शिरफ ने जायसीकृत 'पद्मावत' के अपने अंग्रेजी अनुवाद में पृ० १४४ को पादटिप्पणी में भी 'सद्यवत्स' पाठ का उल्लेख किया है।

अपभ्र शमे उल्लेख-एक दूसरा उल्लेख भी प्राचीन समय का प्राप्त होता है, जो अब्दुल रहेमानके अपभ्र श काव्य 'स देश रासक' में है। जिसका रचनाकाल वि स १४०० के आसपास है। उसने मुल्ताननगर का वर्णन किया है। उसमें वहाँ के विचक्षण नागरिकों की साहित्यक विनोद की चर्चा के प्रसंग में उन्होंने लिखा है कि मुल्ताननगर के सर्व नागरिक पंडित थे। ये विचक्षणों के साथ नगर में परिभ्रमण करते समय कही कही प्राकृत के मनोरम्य छंद के आलाप सुनने में आते थे। तो वही भेष परिवर्तन करने वाले लोग (बहुरूपी) 'रासक' करते देखन को मिलते थे, तो वही वेद, सद्यवत्स कथा, नल चरित्र, महाभारत एवं रामायण (रामचरित) सुनन में आते थे।*

* देखिये, मूल अपभ्र श रचना की स स्मृत टिप्पणी--

“यदि विचक्षणं सह पुरान्त परिभ्रम्यते तदा मनोहर छन्दः प्राकृत श्रूयते।

कुत्रापि शतुर्वेदिभि वेद प्रकाश्यते।

कुत्रापि बहुरूपिभिनिबन्ध रासको भाष्यते ॥४५॥

कुत्रापि सुदयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम्।

कुत्रापि विविध विनोदं भास्त उच्चरित श्रूयते ॥

यन्यच्च कुत्रापि कुत्रापि आशिय त्याग्निभिद्विजवरं

रामायणमभिनूयते ॥४४॥

यहा नरवरिव, महामारत एव तामायग के साथ 'सदयवत्सक्या' का उल्लेख प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि उस समय यह कथा उन ग्रथा की तरह ही लोकप्रिय एव प्रसिद्ध होगी ।

प्रान्त प्रान्तमे प्रचार- जायसी के पद्मावत मे इस कथा का उल्लेख है इससे ज्ञात होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश मे भी इसी रूप में होगी । यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है ।

अब्दुल रहमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पंजाबकी ओर इस कथा के प्रचार का द्योतक है । राजपुतानी (राजस्थान) एव गुजरात मे भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है । यह बात भी उस सप्ताहिन सशोधित एव प्रकाशित ग्रथ से ज्ञात होगी ।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध- जिन कवि के संस्कृत कथानक मे जिनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जुटाया है । एव कथा में उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता (देवी), प्रतिष्ठाननगर एव शालिवाहन राजा वादन वीर, और सापरा चोर आदि के उल्लेख किये हैं । और इस प्रकार से विक्रमकथाओ के वार्ताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध व्यजित किया है ।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबन्ध मे अपने निर्देश के अतिरिक्त अन्य कोई भी परिचय नहीं दिया है । नामवा निर्देश निम्नलिखित काव्य पंक्ति में मिल जाता है, जो यहा उद्धृत किया गया है ।

“इम भणइ भीम तस गुण शुणिसु,
जो हरिसिद्धि-वर-लवष ।”

नाम का निर्देश प्राप्त होता है । किंतु कवि ने अपनी जाति जाति एव जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया है । साथ साथ प्रबन्धके रचना कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन-

तम प्रतिवृत्ति थी पट्टन में वि. सं. १४८८ की लिखी हुई प्राप्त हुई है।
(विद्वद्जन मनः प्रमोदाय) इससे काफी अनुमान किया जा सकता है कि
यह रचना विक्रम की १५ वीं शती के उपराध से अवांचीन नहीं है।

कविका निवास स्थान- कविने अपने निवास स्थानके बारेमें
कुछ भी संकेत नहीं किया है। किंतु कविका निवास स्थान गुर्जर भूमि हो
ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि जब कामसेना के व्याधिकी चिकित्सा केवल
गुर्जर वैद्यराज से ही हो सकी थी। और इससे गुर्जर वैद्यकी कवि भीम
ने काफी प्रशंसा भी की है।

प्राचीन काल की गुर्जर भूमि का विस्तार भी गुर्जर प्रतिहार राजाओं
के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है। जिस राज्य में सोरप्ट,
आनर्त, एवं समस्त राजस्थान का भी सम्मिश्रण होता था; और इसकी
व्यापक लोक भाषाये भी समान थी।

कवि की ज्ञाति- कवि का ग्राहण होना सम्भव है। क्योंकि
उसने गणेश, शंकर, एवं हरसिद्धि माता परमेश्वरीका उल्लेख किया है।
साथ साथ बैलाशपति भगवान् शंकर के प्रासाद का सुन्दर बयान दिया
है। (दे० कड़ी २१७, १८, १९)। प्रतिष्ठान नगर वर्णनके प्रसङ्गमें विक्रम,
त्रिविक्रम, विष्णु एवं सूर्य का भी उल्लेख है। शारंगिका के अग्निप्रवेश
की पूर्व तैयारी के रूप में जो प्रार्थना दी है इसमें भी पता चलता है।
जैसे कि 'करुण साक्षि त्रिकम ने तरणी' कड़ी (२९९)।

कवि रामायण एवं महाभारत से भी विशिष्ट रीति से परिचित थे
ऐसा जान पड़ता है। कुछ छंद एवं काव्य पद्धतियों के द्वारा इसका पता
चलता है। सदयवत्स के गुण एवं कार्यों की प्रशंसावली के अनुसंधान में
मल, कंदर्प, मुष्णिष्ठिर, माणव भीष्म पितामह, भीमसेन, कर्ण एवं दुर्योधन
जैसेके उपमान भी कविने दिये हैं। (दे० छप्पय कड़ी २८७) कविके जमाने
में जिनधर्म एवं जीवदया अहिंसाका भी काफी प्रचार था। इसके द्योतक
निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ हैं। इससे पता चलता है। जैसे कि 'जिन
शासन गाढच गहगहद। जीवदया देसी मन रहइ ॥' (दे० कड़ी ४५१, ४५२)

✓ प्रबन्ध की भाषा- प्रस्तुत प्रबन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रंथ की भाषा से प्राचीन जान पड़ती है। प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द और प्रयोगों के रूप में उसमें इतनी सामग्रियाँ भरी पड़ी हैं कि न पृथी बात। यदि प्रारम्भ के मंगलाचरण में कवि ने गणपति का नाम-स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप में गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटोरीने जूनी पश्चिम राजस्थानी का नामाभिधान जिस भाषा स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान् महाशयोने 'अतीम अपभ्रंश' और 'जूनी गुजराती', ऐसे शब्दों से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' में प्रतीत होती है। वास्नव में वि.स. १४८८ की प्रति की 'उपलब्धि' से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमें कुछ परिवर्तन एवं आधुनिककरण नहीं हुआ है।

सरस या सुन्दर रचना—कवि इस प्रबन्धके प्रारम्भ में 'सरस' 'सुमर्थ' एवं सुच्छन्द प्रबन्ध के रचयिता सर्व कोई प्रौढ एवं लघु छोटे बड़े ऐसे कविजनों को नमस्कार करते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने किसी प्राकृत किंवा प्राकृत अपभ्रंश ग्रन्थों में से इस प्रबन्ध के विषय में प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमें निम्नलिखित काव्य पक्तियों से मिलता है। जैसे कि "गुरुलहय जि कवि कवियण, सरस सुप्रत्य सुच्छन्द बघयरा।" कवि के पुरोगामी काल में ऐसी प्रबन्ध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावत् प्राप्त जिनेत्तर रचनाओं में कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है—ऐसा कहने में सकोच नहीं है।

भीम कवि की रचना एवं काल-समय—सदयवत्स चरित कथानक के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य से निर्णय किया जाता है कि उन रचनाओं का प्रारम्भ वि.वी. १५ वीं शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा में रचित भीम कवि की रचना 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रंथ उपलब्ध रचनाओं में सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि. सं. १४८८ की प्राप्त हुई है। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना निदान २० बीस साल पहले की होना सम्भव है। अतएव इनकी रचना वि. सं. १४६६ की है। ऐसा निर्देश कई लेखकों ने किया होगा। वास्तव में कवि का इसके बारे में कही भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद- कवि ने प्रस्तुत प्रबन्धमें दूहा, दूहासोरठा, पदड़ी, चउपड़ी, अडयल, वस्तु, छप्पय, कुंडलिया, चामर एवं भौतिकदाम इन मात्रामेल छंद एवं एकताली केदारराग, और घउल घनासी, जैसे गेय काव्य-छंद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कडियो में वह कृति प्रसादयुक्त एवं वैविध्यपूर्ण और सुन्दर बन पाई है।

वस्तुछंद 'पिंगलसारोदार' के नियमानुसार, १२५ मात्राओं का नवपदी छंद है। पहले तीसरे और पाँचवें पदमें १५ मात्रायेँ, दूसरे एवं चौथे पद में ११ मात्रायेँ, और अंत्यके चार पदों से दूहा बनता है।

पदड़ी पदड़िका और पाधड़ी छंद कडवक के अंत में अपभ्रंश काव्यों में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचंद्र जी ने 'छंदानुशासन' में चौः पदड़िका' चार चरणों से पदड़िका छंद बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चरण संज्ञा है। एवं १६ मात्रा का एक पाद, इस तरह के चार पाद पदड़िका छंद में रहते हैं। इसमें उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध में रस- कवि ने इसमें नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एवं अद्भुत रसका संचार अधिक है। शृंगार रस उसमें गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' नाम के गुजराती कवि की रचना प्रयः वीर रस से ही प्रेरित है।

गुजराती रूपान्तर उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्वसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन के सावलिंगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयंवर में जाने के लिये आमंत्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने मंत्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठानपुर भेजा। मंत्री कृपण होने से कुमार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वयंवर में सदयवत्स ने अपने गुण एवं कला से आकर्षित कर सावलिंगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी में महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा में उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत् और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हूँ। राजा ने उसके इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीक्षार्थ अपने निकटवर्ती जयमगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहर को मर जायगा। राजा ने कोपित होकर उसे बँद कर लिया और नौकरों को जयमगल हाथी की विशेष रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुये कहने लगे, देखो इस ज्योतिषी ने हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने ब दीखाने में पड़ने की बात को नहीं जानी।

इधर बँधो की देखरेख में जयमगल की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भवितव्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मदी-न्मत हो भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अघरणी उत्सव का बरघोडा उसके पीहर से समुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहुँचा। उत्सव में सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये, पर ब्राह्मणी गर्भभार के कारण भाग न सकी। अतः हाथी ने उसे पकड़ ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुये उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पड़ी और उसने हाथी को मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इससे प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने कुमार को युवराज पद देने का

निश्चय किया। स्वयंवर में साथ जाने वाले मन्त्री ने कुमार को युवराज-पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इसे आवश्यक द्रव्य व्यय के लिये नहीं दिया था सम्भव है वह उसे और वा बदला मुझ से ल। अतः इस युवराज पद नहीं मिले ऐसा साच राजा को उल्टी मन्त्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिये "जयमगन"-जैसे राजमान्य हाथी को मार डाला यह उचित नहीं किया। राजा का मन्त्री की बात जेंब गई उसने कुमार के कार्य को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोड़कर चने जाने की आज्ञा दे दी।

कुमार न भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नहीं समझा और जाने की तैयारी कर ली। माता ने समझाया पर उसने नहीं माना। सार्वलिङ्गा भी उसके साथ हो गई। चलते चलते वे एक वन में आ पहुँचे वहाँ सार्वलिङ्गा को जोरो से प्यास लगी। कुमार पानी की खोज में इधर उधर घूमते हुए एक प्रपात पर नज़र आई। पानी लेने के लिये पास पहुँचने प्रपालिका वृद्धा ने कहा यह हरसिद्धि भाता की प्रपात है। जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही खल ले सकते हो। कुमार ने सार्वलिङ्गा के प्रेमवश बहु दातं स्वीकार कर, पानी ले जा कर, सार्वलिङ्गा को पिलाया। वृद्धा भी साथ गई और खून माँगा। कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ। इससे देवी ने प्रसन्न हो कर माँगने को कहते हुए कहा- कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जगल की रचना की है। और मैं उज्जैन एव प्रतिष्ठान नगर की कुसुदेवी हूँ। कुमार ने सग्राम एव युद्ध में जय होने का वरदान माँगा।

देवी ने सारियों के छूत में जय होने के लिये दो पासे, वपर्दक छूत में जय होने के लिये वपर्दिकायें, और सग्राम में जय होने के लिये सोहछुरिका दी। आगे चलते हुए स्त्रियों के समूह के बीच में एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सार्वलिङ्गा ने उससे पास जाकर वृत्तान्त पूछा। कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरी के राजा क्षत्रवीरवीर स्त्री सारिणीकरी में सीतावती नामक पुत्री हूँ।

बन्दीजनों के मुख में सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसे पाने के लिये इस कामितप्रद तीर्थ में ६ महीने से ध्यान कर रही हूँ। सदयवत्स के न मिलने पर कज्ञ चित्ता में जल भरूंगी। सार्वलिंगा ने यह वृत्तांत सदयवत्स को कहा। कुमार सबके साथ नगरी में आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की।

[इसी समय धर्मघोष नामक जैनाचार्य वहाँ पधारे और "थोड़ा बहुत भी धर्म जरूर ही करना चाहिये" ऐसा उपदेश देते हुये मृगाक की कथा कह मुनाई। सदयवत्स ने उसे सुनकर थावक धर्म स्वीकार किया।]

लीलावती को पितृगृह में रखकर सार्वलिंगा के साथ कुमार आगे बसा। रास्ते में एक पर्वत पर शिला में ढकी हुई गुफा देखी, दोनों ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चोर बैठे देखे। चोरो ने सदयवत्स को अकेला देख उसे मारकर सार्वलिंगा को ग्रहण कर लेने का विचार किया। उन्होंने द्यूत रमने के लिये सदयवत्स का आव्हान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पड़े यह शर्त रखी गई। देवीके वरदानसे सदयवत्स जीता पर सज्जनतासे उसका शिर छेदन नहीं किया। इससे चोर प्रभावित हुए। और अहृष्टांजन, श जीवनी, रससिद्धि आदि विचार्य देने को कहा पर कुमारने उन्हें नहीं लिया। फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छोर से पद्मिनिपत्र वेष्टित लक्ष मूल्य का कंचुक बाध दिया। चोरो ने यह भी कहा कि कभी आप स'कट में पड़ जायें तो हम स्मरण करते ही हम आकर आपकी सहाय करेंगे।

कुमार आगे चलते हुए एक निर्जन नगर में पहुँचा। राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का रोना सुन कर उसके पाम जाके रोने का कारण पूछा। उसने कहा मैं नंद राजा की लक्ष्मी हूँ, अनाथ होने से रो रही हूँ, तुम मेरे स्वामी बन जाओ।

[नगर का निर्जन होने का कारण पूछने पर लक्ष्मी ने कहा कि इस

बीरपुर नगर में एक तापस आया था। वह ब्रह्मचारी था। लोगो पर प्रभाव जमाने के लिये स्त्री का स्पर्श हो जाने पर बड़ा गुस्सा दिखलाने का ढोंग करता था। एक बार नगरी की वेश्या ने उसका स्पर्श किया, इससे उसने राजा के पास फरियाद की। वेश्या ने उम्मे ढोंगी बनलाया राजा ने उसकी परीक्षा के लिये उसे महल में लाकर रानी के मर्मरंग में अधिक रूप से आने की व्यवस्था कर दी। रानी को देख कर वह कामा-तुर हो उठा और भोग के लिये प्रार्थना की। रानी जोर से चिल्लाई तब राजा ने आकर तापस को मार डाला। वह तापस मरकर राक्षस हुआ और पूर्व भव के वर से नगरी की यह स्थिति कर दी।]

लक्ष्मी ने कुमार को धन का ढेर पडा बतलाया। कुमार सावलिंगा से कहा कि यह धन अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चले। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुँचे और पास के गाँव में एक ब्रह्मभट्ट के यहाँ जा कर ठहरे। ससुराल होने के कारण नगर प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एवं रचनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर में जाने लगा तब साव-लिंगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन में वापिस नहीं लौटे तो मैं चित्ता-प्रवेश कर लूँगी।

कुमार को नगर में प्रवेश करते हुए एक टूटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एवं खाद्यादि भागतिक वस्तुओं को लेकर पास में आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूँ। कौतुकवश ५०० हाथी एवं करोड़ मोहर लेकर नगर देखने के लिये यहाँ आया था पर मैं उसको जूए में हार गया। जुदारियों ने मेरे हाथ कान भी काट डाले। दैव रूढ़ता है वही जूआ खेलता है।

टूटक के साथ कुमार ने नगर में प्रवेश किया। रास्ते में सूर्य-प्रासाद में विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमान्य कामसेना वेश्या ने स्वप्न में देखा कि त्र्येष्टि दत्तक के पुत्र सोमदत्तने उसके

घर आकर उससे भोग किया। अतः सोमदत्त से अपनी द्रव्य मुद्रा रूप में गृहित कार्यों की शुल्क लेने के लिये वेश्या ने अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार को देख उसे इसका न्यायाधीश चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमान्य से विरोध करना उचित नहीं। अतः तुम इसे धन दे दो। कुमार ने श्रेष्ठि से धन मंगा कर उसका आधा भाग लेने के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेने को स्वीकार नहीं किया। तब कुमार ने एक दर्पण भाग कर उसके सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योंकि स्वप्न एवं प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस न्याय से अक्का लज्जित हो मिलखती हुई लौट गई।

कामसेना यह वृत्तांत जानकर नृत्य करने के बहाने सूर्यप्रासाद में आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसने कुमार को अपने घर चलने को कहा। टूटक ने जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नहीं होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहा रहा। कुमार नगर में जूआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उसमें से कुछ धन सावलिगा के लिये आभूषणादि खरीद करने के लिये टूटक को दे दिया बाकी वेश्या को दे दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आज्ञा मागी। वेश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सावलिगा से वचनवद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अतः रवाने हुआ। जाते समय वेश्या ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खेंबा तो उससे चोर का आधा हुआ पद्मिनीवेषित कंचुक खुल पड़ा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रतनमय कंचुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारतापूर्वक दे दिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा में जा रही थी, इसी समय एक सेठ ने कंचुक को देख, वह अपना चोरी गया था वही है यह निश्चय

वर राजा से इसकी फरियाद की। राजा द्वारा वेश्या का पूछन पर उसने कहा हमारे यहाँ अनेक चोरादि आत हैं मैं उनका नाम नहीं बनला सकती। तब राजा ने वेश्या को शूलों की सजा का हुक्म दे डाला। कुमार ने जब यह बान सुनी तो वह शूलों के स्थान पर पहुँचा और कोतवाल को जाकर कहा 'चोर मैं हूँ, वेश्या का छाड़ दो' पर उसके नहीं छोड़न पर जबरदस्ती उस छड़ा दिया राजाने कुमार का पकड़न के लिये अपनी सना भेजी पर कुमार ने उस भी हरा दिया।

उधर ५ दिन तक कुमार के न आन के कारण सार्वलिङ्गा ने चिता-प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार ने यह सुनत ही अपने वदन सोमदेव को कहा छोड़ वापिस आने की प्रतिज्ञा कर रहा पहुँचा। और सार्वलिङ्गा को जलन से बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार शूलस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरो को कुमार से युद्ध करने के लिये भेजा। नारद से सूचना पाकर कुमार के पूर्व परिचित ५ चोर वहाँ सहायता के आ पहुँचे अतः ५२ वीर भी हार गये।

राजा ने बल से वाम निकालता न देख नम्रता से कुमार का नाम पूछा और उसके न बनलाने पर वेश्या से पूछा। तो वेश्या ने उसका नामाङ्कित खड्ग लाकर राजा को दिखलाया। राजा को छानने के लिये कुमार ने कहा इस तलवार को तो मैं सदयवत्स से जूए में जीता था। राजा ने उसे वश में करने को गजघटा बुलाई। उसे भी सिंहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अतः म राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सार्वलिङ्गा को भी बुला ली।

अवन्तर कथा। कुछ समय तक दोनों वहाँ आनदपूर्वक रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ बनिक्, १ क्षत्रिय एवं ब्राह्मण जाति के तीन व्यक्तियों से हो गई। इतने में ही एक विदेशी के मिलने पर कुमार ने पूछा कि कहीं कुछ कौतुक देखा हो तो कहो। उसने कहा तुम्हारे नगर में धनपति सेठ के मृत पिता बहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था में घर पर आ जाते हैं। यह बड़ा आश्चर्य है। कुमार कौतूहलवश तीनों मित्रों के साथ वहा गया। तुम्बन में प्रवेश करते हुए एक ब्राह्मणकन्या को सौकोत्तरी पीडा दे रही थी, उसे छुड़ाकर उसका विवाह ब्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आगे चल कर मित्रो सहित कुमार सेठ के घर पहुचा। और अमुक धन लेने का तय कर वे उसके पिता का शव जला देने के लिये स्मशान ले गये। उसे प्राण काल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर बारी बारी पहरा देने की कर ली गई।

पहली बारी बणिक की थी। पहरा देते हुए उसे एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। बणिक शव को अपनी पीठ पर बाँध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मैं उसके लिये धाली में भोजन लाई हूँ पर शूली के ऊँची होने के कारण उस तक पहुँच नहीं सकती। इसी दुखसे रो रही हूँ। बणिक ने करुणावश उसे पीठ पर चढ़ा कर ऊँची कर दी। स्त्री ने ऊँची चढ़ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का मांस खाना शुरू कर दिया। जब एक मासखंड बणिकके ऊपर पड़ा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पड़ते ही वह स्त्री भागने लगी पर बणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ फाट डाला और उस हाथ को बालुका में डाल दिया।

दूसरे पहर में एक ब्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस को राजकुमारी से भोग की प्रार्थना करते देख पीछे से ब्राह्मण ने उसे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी बारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खोज में निकला तो उसने भूतों को खीर पवाते देखा। उनके पास ७ पुरुष सिचडी के साथ साग की जगह खाने के लिये बधे हुए थे।

क्षत्रिय पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर सिचडी की हाडी को फोड़ डाला। व धे ७ पुरुष राजकुमार थे।

धीमे प्रहर सदयवत्स उठा तो शव ने उसे जूआ खेलने को आह्वान किया। शव में रहे हुए बैतानने अपने बाहु प्रसारित कर एक राजमहल में से जूआ खेलने की सामग्री उठाकर ले ली। जो हारे उमका भस्तक छेदन कर दिया जाय। इस प्रतिज्ञा पूर्वक माय बैतालको जीतकर कुमार ने शव को जला दिया।

प्रभात में श्रेष्ठि के पास जाकर पूर्व निश्चित धन माँगा। श्रेष्ठि ने वहाँ कल रातरी बरके दू गा। कुमार ने राजा के पास फरिफाद की और रात का सारा यत्न वह मुनाया। राजा के प्रमाण मागने पर बालू में गढ़ा हुआ हाथ उपस्थित किया और वह हाथ रानी का होने से रानी सोकोतरी साबित हुई। राजकुमारी राजकुमारों को भी उपस्थित किया गया। श्रेष्ठि ने कुमार को अपनी कन्या ब्याह दी।

सदयवत्स वहाँ से वापिस लौटते हुए निर्जन नगर को जिसे देख आया पा वहाँ गया। वहाँ राक्षस की आराधना कर वीर कोट नामक नगर बसाया। सदयवत्स के लीलावती रानी से वनवीर और सार्वलिगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए।

[सदयवत्स ने चतुर्थी को संवत्सरी करने वाले जैनाचार्य बालकमूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैनमंदिर की प्रतिष्ठा करवाई।]

इसी समय उज्जयिनी, जो कि अपनी भूल राजधानी थी, पर शत्रुओं के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने सर्वन्य वहाँ जाकर शत्रुओं को परास्त किया। प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया। वीरकोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया।

[अन्यदा कालकाचार्य उज्जयिनीमें पधारे और पूछने पर सदयवत्स का पूर्व भव कह सुनाया कि तू विष्णुचल की पत्नी के गोत्रक नगर में व्याघ्र राजा की चारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एवं दयावान पुत्र था। श्यामाचार्य के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण कर उसने सम्यक्त्व सहित श्रावकोचित १२ व्रत ग्रहण किये। गुणसुन्दर मुनियों को अघ्रादि का दान और प्राणियोंको अभयदान देने में सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान में क्रीडा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होंने कहा कि बैताल नगर में देवी के बलिदान के लिये हमें पकड़ा गया था पर हम वहां से भाग कर यहाँ आ गये हैं। वहाँ के लोग बड़े निर्दयी हैं और मनोनी मानकर थोड़ेसे स्वार्थके लिये भीमे और विशेष कार्य से मनुष्य तक की बलि दे देते हैं। गुण-सुन्दर का हृदय कष्टार्द्र हो गया। अतः वहाँ जाकर बलि देनेवाले लोगों को भगाकर मनुष्यों को बचाया। और अपनी बलि देने के लिए कठ पर नलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एवं साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तब उसने देवी को प्रतिबोध देकर सदा के लिये बलिप्रथा बंद करवा दी। मृत्यु समय में आराधन करते से तुम इस जन्म में सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रबल पराक्रम और मुनि दान के फल से सब प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूर्व वृत्तान्त सुन सदयवत्स को पूर्व-भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान में प्रचलित सदयवत्स कथा में नैराव की प्रति सबसे प्राचीन है। अतः तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाता है।

पूर्व दिशा के कोकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मन्त्री सोम के सावलिगा नामक पुत्री थी। योग्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को बुला विद्याध्ययनार्थ कुमार को उसके सुपुर्द कर दिया। इसी प्रकार मन्त्री सोम ने सावलिगा को भी पढ़ाने के लिए उन्हीं की पाठशाला में भेज दिया। और उसे पाठशाला के छात्रों से अलग रखकर पढ़ाने का निर्देश कर दिया।

सावलिगा की पढाई परदे में होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पंडितजीने उसवे परदे में पढ़नेका कारण उगवा अन्धी होना बतलाया । और कुमारी को कुमार का कोढ़ी होना कह दिया जिसने परस्पर कोई सम्बन्ध न हो सके । एक दिन किसी कारण से पंडितजी नगरमें गये थे और सबको पढ़ाने का काम कुमार को सौंप गये । पढ़ते हुए परदे में स्थित कुमारी ने कोई पाठ अशुद्ध बोला । तब कुमार ने कहा 'अन्धी ! अशुद्ध क्यों बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमें कुमारीने कहा-'कोढ़ी ! जैसा पाटी में लिखा है वैसा ही पढ़ रही हूँ ।' कुमार का भ्रम इस उत्तर में दूर हो गया । उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाटी पर लिखा वह पढ़ने की बात वह नहीं सकती, और मुझे कोढ़ी कहने का कारण भी क्या ? अतः हम दोनों एक दूसरे को देख न सकें इसीलिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है । भ्रम दूर होते ही कुमार को कुमारी के देखने की उत्कठा बढ़ी । और एक दूसरे को देख करके प्रेममूढ में बंध गये । फिर परस्पर दूहा-गूठादि निखते व कहने रहने के द्वारा प्रीति दृढ़ होती गई ।

गुरुजी के बाग में खेत थे । उसकी रखवाली के लिये चारों २ से शिष्य वहां जाते थे । नियमानुसार सदयवच्छ अपनी चारों पर खेत पहुंचा और साबलिगा उसे भाता (भोजन) देने खेत गई । वहां एकान्त होने से प्रीति विशेष रूप से दृढ़ हो गई । साबलिगा ने किसीके भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया ।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकुमारी से कर दिया । और साबलिगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेंट धनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया । सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेष में कुमारी से उसके घर जाकर मिली । तब उसे देवी मन्दिर में मिलने का कुमारी ने सवेत किया ।

निश्चित समय पर पुष्पावती से धनदत्त आया और उसके साथ साबलिगा का विवाह हो गया । सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एवं वचन निवाहने के लिये दैवी मन्दिर में अपनी पूर्व मनीषी पूर्ण करने को पति से आज्ञा लेकर वहाँ पहुँची ।

सदयवच्छ ने उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमें जाके सो गया । नशे की अधिकता से उसको इतनी प्रगाढ़ निद्रा आगई कि सार्वलिङ्गा ने उसे जगाने के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये । तब निराश होकर वह अपने घर लौटते समय अपने आने के सूचक चिन्ह एवं फिर मिलने का संकेत-सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया ।

निद्रामग होने पर कुमार ने सार्वलिङ्गा के न आने का बड़ा अफसोस किया । दतीन के समय हाथ की ओर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पड़ा । और अपनी गलती महसूस कर, योगी होकर दोहे की सूचनानुसार पोहपावती नगर पहुँचा । रास्ते में हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अतः बावड़ी में पशु की भाँति मुँह से पानी पिया । इस प्रसंग में पतिहारियों से बातचीत करते हुए कुंभारिन से पता लगा कर वह धनदत्त सेठ के घर पहुँचा और सार्वलिङ्गा से चार आँख होने पर दोनों अधीर हो उठे ।

उस समय सार्वलिङ्गा ने अपने पति को कहकर नया महल या मंदिर बनानेका काम शुरू कर रखा था । सदयवच्छ उसीके निर्माण-कार्यमें मजदूरी करने लगा । एक बार जोगीका वेष धारण कर भिक्षा लेने सार्वलिङ्गा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब सार्वलिङ्गा देने आई और पुनः चार आँखें होने पर स्तम्भित में हो गये ।

राजगवाक्षमें बैठी हुई राजकन्या ने यह स्वरूप देख उपानम सूचक दोहे कहे । इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया । राजकन्या ने सार्वलिङ्गा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया ।

इधर सदयवच्छ ने सैन्य संग्रह कर पुहपावती के राजा भोज को राजकन्या देनेका कहलाया । और उसके न मानने पर युद्ध कर, उसे हरा दिया । तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया । कर-

मोचन के समय कुमार ने अन्य वस्तुयें न लेकर धनदत्त मेट को बांधकर मगवाया और उगमे मार्वालिगा देने का स्वीकार करके छोड़ दिया ।

सावलिगा और सदयवच्छरा युगल जोड़ा मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ । कुछ दिन बहा रहने के पश्चात् सपरिवार अपनी नगरी नोट राज्यपालन करना हुआ विनाग करना रहा । मार्वालिगा आदि रात्रियों के माघ विषय-मुख भोगते हुए उसके ४ पुत्र हुए । यही कथा की ममाप्ति होनी है ।

कथा के विविध स्थान-उपयुक्त कथा में प्रेम और विरह प्रधानतः है, अर्थात् दुःखारण प्रधान है । सावलिगा ने भी अपनी प्रीति वचन निभाया । इसके परवर्ती रूपांतरों में सदयवच्छ की नगरी का नाम किसी में मुंगीपुर किसी में आनन्दपुर और किसी में पुष्पावती मिलता है । उसके पिता का नाम सालिवाहन व महीपाल, माता का नाम कही चपवमाला वही सोभाग्यमुन्दरी, एव गुरु का नाम सगुण महात्मा लिखा है । मार्वालिगा के पिता का नाम पदममन, कही पदमस्त, और माता का नाम लीलावती लिखा है । विद्याध्ययन के लिये गुरु के पास कहीं सावलिगा पहले गई और कही पीछे, समुद्राल का स्थान धारानगर समुर का नाम हीरा, पति का नाम रतनपाल एव वहा राजा का नाम विजयपाल लिखा है । पुष्पावती में सदयवच्छ के पहुंचने पर कई कथानकों में घर में आग लगा कर सावलिगा का बगीचे में उससे जाके मिलना, कही वहाँ भी सदयवत्स का नहीं पहुंच सकना लिखा है । वहाँ के राजा का नाम कही भिक्षु ही लिखा है और उसकी कन्या के विवाह का कारण कन्या का सावलिगा से अनुराग हो जाना बतलाया है । कही स्वयं विधि से उसके साथ विवाह होने का उल्लेख है । कई रूपांतरों में सदयवच्छका अपने नगर लौटने का कारण पिता अन्धेपण कर बुलवा भेजना लिखा है । और भी कई घटनाओं में अंतर व बमीवेशी पाई जाती है । अर्थात् अनेक व्यक्तियों की सूझबूझ से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोड़ा एवं रूपांतरित किया गया है ।

कई कथानकों के प्रारंभिक भाग में उसके पूर्वभव का प्रसंग देकर

प्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एक स्थावर मे अन्य अनेक कथानको की भाँति शिव पार्वती का प्रसंग भी जोड़ दिया गया है।

कथारूपों में भिन्नता-अब गुजरात और राजस्थानी संस्करण में मुख्य रूप से जो अन्तर है उस पर प्रकाश डालता हूँ।

(१) गुजराती संस्करण धीरे-एव अद्भुतरस प्रधान है राजस्थानी शृंगार प्रधान है।

(२) गुजराती संस्करण में कई उटनायें हैं। तब राजस्थानी कथा में घटनाओं का प्राधान्य व अधिकता नहीं है, पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा हैं।

(३) गुजराती संस्करणानुसार सावलिगा सदयवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी संस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदयवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती संस्करणानुसार सदयवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आणन्दपुर, मु.गोपुर, या पुष्पावती के राजा महिपाल या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरात एव राजस्थान में प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता है अर्थात्-गुजरात में भी प्राचीन कथानक को अब भुला दिया गया प्रतीत होता है। इनमें पूर्वभवों के प्रेम सम्बन्धों की कथा ७१८ भवों तक बढ़ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक-कीर्तिवर्धन की 'सदयवत्स चउपई' और मारवाड़ राजस्थान के अन्यान्म गद्य पद्यात्मक 'सदेवत सावलिगा' नाम के कथानको में प्रधान रूप में शृंगार रस पाया जाता है।

सदयवत्स कथा एवं दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओं में "सदयवत्स सावलिगा" की प्रेमकथा का कई शततन्त्रिंशे तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रसार अधिक, सन्धे समय तक

पड़ती है। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रंथों में पूर्ववर्ती केवल १-२ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोड़ा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मनका प्रचार एवं प्रसार सदयवत्स कथा का संस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हर्षवर्धन ने इस लोक कथा को अन्य जैन विद्वानों की भाँति ही जैन स्वाग या चोला पहना दिया जान पड़ता है। जैसे कि सदयवत्स ने अपने बसाये हुए नगर में बीर जिनेश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा वतुर्षी की सबसरी मनाने वाले बालकाचार्य के हाथों से करवाई है। जैन कवि ने जैनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूर्वभूव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जानि-स्मरण तब हुआ। हर्षवर्धन के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक धर्म स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवर्धन) ने उसे राजस्थान में प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १-मे-प्रकाशित 'सदयवत्स सार्वलिंगा पाणिग्रहण चउपई' की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्रायः उसका रचयिता जैन होना सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का उस चउपई में उल्लेख है। जैसे कि 'ए पहिलु हुब अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार। इसकी भाषा १६ वीं शती के अन्त भाग की अथवा १७ वीं के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना-केशव कवि की 'सदयवत्स सार्वलिंगा चउपई' की रचना (परिशिष्ट २) विप्रलम्ब स्रुगार रस में ही भरपूर है। इसमें जो छंद हैं दूहा (दोहे), चद्रायणा एवं बवित्त, मनोवेषक है। एवं सुभाषित, अन्योक्ति, अर्थान्तरन्यास कहावतें, और मुहावरों के द्वारा काव्य रसपूर्ण बनाया है। कवि ने वडी ४५४, ४५५, ४५८, मे वस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अन्त में 'फल

श्रुति दी है ।

पूर्वभव का कथानक-संस्कृत कथानक में पूर्वभव की कहानी दी गई है । वह कीर्तिवर्धन की चउपड़ी में नहीं है । सद्यवत्स एवं सावलिंगा के प्रेमी मुगल का सम्बन्ध नायक एवं नायिका के रूप में है । इसमें पराक्रम की कोई भी बात नहीं है । केवल पुष्पावती के राजा को पद-दलित करने, सावलिंगा को सद्यवत्स प्राप्त करता है इतने पराक्रम का ही उल्लेख है । परन्तु इसमें कुछ अद्भुतता नहीं दिखाई देती । सद्यवत्स शौर्यवीर के रूप नहीं दिखाई देता, किंतु प्रेमीवीर के रूप में दृश्यमान होता है ।

सदेवन्त सावलिंगा के आठ भव की कहानी कवि या लेखक इस कहानी के रचयिता का पता नहीं चलता ।

कथानक का प्रारम्भ जगन्माता पारवती जी ने बनलीला देखने का हठाग्रह किया । इसलिए भगवान् शंकर उनको साथ में लेकर वनमें चल आये । रास्तेमें एक नारियल नामक प्राचीन बाव देखने में आयी । तृपा लगी हुई थी जिससे पार्वती जी ने भगवान् शंकर से पानी सार्ने के लिये प्रार्थना की । शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया । सती उमा पानी पीने की तैयारी करती है कि वहा शिर उठाने पर एक नर एवं मादा बदर की जोड़ी देखी । पार्वती ने भगवान् शंकरसे पूछा कि ये वन्दर कौन से विचार में इतने मग्न हो गये हैं । शिवजी ने उत्तर दिया कि यह बात बहुत लम्बी चौड़ी है, छोड़ दो इसे । उत्तर सुनकर यह रूठ गयी, और भारे श्रोण के जब भगवान् शंकर के शिर के बालों में छुप गई । तब आखिर में शिवजी वह बात सुनाने के लिये तैयार हो गये ।

अष्ट भव के नाम-(१) ब्राह्मण-ब्राह्मणी (२) चकवा-चकवी (३) हिरन हिरनी (४) मयूर-ढेंसणी (५) हंस हसी (६) राजा-रानी (७) बदर बदरी, और बाद में (८) नर-नारी

पहले भव की कहानी ब्राह्मण ब्राह्मणी-धारापुर नामका

एक देहात था। उस गाँव में दो ब्राह्मण रहते थे। दोनों निःसन्तान थे। जिससे उन्होंने वनमें जाकर तपश्चर्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होते ही इन दोनों की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याप्ययन करके घर वापस आ रहा था। रास्ते के बीच में समुद्रसे भेंट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनों तक वह समुद्राल में रहा। और बाद में ये दोनों पति पत्नी (युवक-युवती) अपने घर जाने के लिये निकल पड़े।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनों की तृपातुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पार्वतीजी ने भगवान् शंकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोड़ी को जिन्दा कीजिये। तो शंकर भगवान् ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नहीं हैं। फिर भी पार्वतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद में मस्त बने हुए वे भट-भटाणी एक शिवालय में आये। विषयवासना बढ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल में जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाडकर कहीं बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवाञ्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान् शंकर क्रोधित हो गये और श्राप दिया कि तुम्हें सात भव (अवतार) तक विमोग सहना पड़ेगा।

शंकर भगवान् का श्राप सुनकर ये दोनों काशी में करवट जेने के लिये निकल पड़े। रास्ते में एक गाँव आया भट। (युवक) खुराक की तलाश में गया। जब वापस आया तब देखा तो पत्नी का पता नहीं था। भव क्या करे। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गले पर करवट लगवा दिया और मौत के कारण हो गया।

जब भट खुराक की तलाश में गया था, उस समय बड़ा एक राजा आया और भटाणी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

चुपचाप राजा ने पजे में से छुटकर निकल पड़ी। और उसने भी काशी (बनारस) की राह पकड़ी। और गठे पर करबट लगवा दिया। इस लोक को छोड़कर चली गई।

कहानी दूसरी, चकवा चकवी-किसी एक जंगल में एक पेड़ पर एक चकवा और चकवी रहते थे। उसी जंगल में एक बार अचानक अग्नि संचार हो गया। दावाग्नि का भीषण वाह दुरु हो गया। और जिस वृक्ष पर ये दोनों पछी रहते थे यह वृक्ष भी जलने लगा। किंतु दोनों को ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वृक्ष जल जाय और हम गहासे भाग छूटें। यह बात ठीक नहीं है। ऐसा विचार बरके ये दोनों पछी भी दावाग्नि में आग के शोलों से जलकर भस्म हो गये-मर गये।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी की-एक जंगल था। वहां एक हिरन एक हिरनी रहते थे। ये वन में घूमते थे और अपना गुजर-बसर करते हुये आनन्द में जीवन व्यतीत करते थे। उस जंगल में एक बार एक पारोधी आया उसने हिरनी को फँसा दिया, हिरनी ने बहुत आक्रान्त किया। हिरनीका आफ्रान्त सुनकर उस शिकारीके मन में दया उमड़ पड़ी। उसने हिरनी को मुक्त कर दी। अब तो हिरनी अपने पति हिरन की खोज में निकल पड़ी। किंतु रास्ते में एक पहाड़ के पास हिरन को मृत अवस्थामें पाया। हिरनकी मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेट की। वह भी चल बसी।

कहानी चौथी, मयूर डेलणी-इस कहानी के बारे में कुछ लिखा गया प्राप्त नहीं होता।

कहानी पांचवी, हंस और हंसी की-हंस एक हंसी की एक जोड़ी जंगल में रहती थी। उसकी रहने की जगह पर एक बार एक साँप आया। और उनको निगल जाने लगा। किंतु दैवसंयोग से उनके वर्णपट पर भगवान का नाम सुनाई पड़ा। दोनों की मृत्यु न हुई। किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म में (भव में) ये दोनों राजा एव रानी के रूप में अवतरित हुये।

कहानो छटवीं राजा और रानी-एक नगर था उसका नाम देवपुर । वहाँ के राजा का नाम था सालवाहन और रानी का था दुर्मति उनके पुत्र का नाम था बल्लभ ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था । वहाँ सुप्रत नाम का राजा था । उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी । उसके पिताने उसका विवाह सवय किया था बल्लभ के साथ । किंतु उसकी मा भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एवं अलग २ व्यक्तियों के साथ सगाई कर दी थी । खूबी यह थी कि इन सब रिश्तेदारों ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी ।

शादी के दिन चारों वर बरात लेकर सजधज के साथ आ गये । राजकुमारी आश्चर्य में पड़ गई । शादी किसके साथ की जाय । क्योंकि यहाँ तो एक के स्थान पर चार चार वर आये हैं । इससे उसके मनमें बहुत दुःख हुआ । अपनी जिदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि में जल गई । दुनिया से विदा ली ।

शादी करने के लिये जो यहाँ चार वर आये थे । उनमें से एक वर ने कुंवरी की मृत्यु से अपनी बलि देदी । दूसरा कहीं भाग गया । तीसरे ने उसकी हड्डियों की राख गंगाजी में बहा दी । चौथा बल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा ।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था । उसके हाथमें अकस्मात् एक अमृत का घट आ गया । उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहाँ आया । और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया । फलस्वरूप वह राजकुमारी एवं उसके साथ जलजानेवाला राजकुमार दोनों जीवित हो गये । बाद में चारों के बीच में लड़ाई शुरू हो गई ।

इन लोगों ने इस लड़ाई का फैसला करने के लिये एक पंच चुना । और पंच से न्याय करने की प्रार्थना की । क्योंकि पंच में परमेश्वर का निवास है । पंच ने सारा हाल सुन लिया । बाद में फैसला दिया कि

राख बहानेवाला पुत्र हुआ । कुंवरीके साथ जलजानेवाला तथा उससे साथ फिर जन्म लेनेवाला उसका भ्राता होगा । और बल्लभ को उसका हक्दार पति ठहरोया गया । यो आखिर में राजकुमारी की शादी बल्लभ के साथ हुई ।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दोनों एक बार एक जगल में सैर करने निकले । वहाँ एक वाघ (शेर) आया । वह राजकुमार का भक्षण कर गया । राजकुमारी उसकी खोज में घूमती थी । इतने में वहाँ एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया । उससे सब कुछ ले लिया । इससे दुखित होकर इस स्त्री ने एक कुएं में गिरकर आत्म-हत्या कर ली । दूसरे भव में ये दोनों बदर एव बदरी के रूप में अवतरित हुये ।

कहानी सातवी बंदर और बंदरी- एक जगल में बदर और बदरी रहते थे । वहाँ से एक दिन शिव जी और पार्वती जी गुजरे । उस समय पार्वती ने बदर-बंदरी की जोड़ी देखकर भगवान् छकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध में क्या बात है । तो शिवजी ने उनके गत जन्मों की (भवों की) बातें कह सुनाईं । बात सुनकर सती पार्वती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया । प्रार्थना की । तो भगवान् छकर ने कहा कि “इस मुहूर्त में यदि यह बदर एव बदरी इस वाघ में गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा ।”

बदरी ने यह बात सुन ली । और पतिदेव बदर को भी अपने साथ इस वाघ में गिर जाने को कहा । किंतु बंदर ने न माना, बंदरी की बात को स्वीकार न किया । बंदरी अकेली वाघ में गिर पड़ी । तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह बंदरी एक सुंदर स्त्रीके रूप में पलट गई । बंदर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, “जब चिड़िया चुग गई खेत ।” यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी ।

इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वहा

आ पहुँचा वहाँ उसने इस रूपसुंदरी को देखा । वह प्रसन्न हुआ । और उस सुंदरी को रथ में बैठाकर अपने साथ ले चला । बंदर वन में फल लेने गया था । वह वापस आ गया । स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया । रानी राजा से प्रार्थना की कि इस बंदर को भी साथ में ले चलिये । राजा ने स्वीकार किया । बंदर को भी साथ में ले लिया गया । स्त्री ने छः महीने के बाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया ।

राजा नगर में आ गया । राजा ने इस बंदर को सुवर्ण की शृंगला से बांध रखने की व्यवस्था की । राजा की जो एक सम्मानित रानी थी । उससे मिलने के लिये राजा जाता था । किन्तु उस रानी से मिलने में बंदर रुकावट डालता था, रानी से नहीं मिलने देता था । इसलिये उसने रानी के बंदर का घाट घड़ने को युक्ति सोच ली । किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये । तरकीब की गई ।

उस रानी ने इस बंदर को एक मदारी के हवाले किया । इस कृत्य से रूपसुंदरी एवं बंदर दोनों अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसुंदरी ने इस मदारी को फिर एक बार आकर अपना तमाशा दिखा जाने के लिये कहा ।

छः महीने की अवधि बीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया । इसी बीच में रूपसुंदरी ने अपना अमूल्य हार तोड़ दिया । मदारी ने उस हार के मोती (मोक्तिक) बीनकर इकट्ठे कर देने के लिये बंदर को मुक्त कर दिया । उस बंदर ने राजा की माननीया रानी से बैर लेने के लिये फलाग लगाई, किन्तु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया । बंदर की मृत्यु होते ही रूपसुंदरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई ।

बंदर दूसरे भव में सदेवन्त हुआ । सुंदरी सार्वलिगा हुई । शादी की अभिलाषा रखनेवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रुपाशा के रूप में अवतरित हुआ । और प्रधान, लाल ब्रह्मभट हुआ मदारी गोरक्ष साधु हो गया ।

कहानी ८ वीं सदयवत्स और सावलिगा-शान्तिवाहन

नामक एक राजा था उसके पुत्र का नाम सदयवत्स था। उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावलिगा नाम की लड़की थी। वह रूप का जंवार थी। मानो रूपराशि यहाँ खड़ी हुई हो। उसके रूप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते, फीके भी पड़ जाते। अधिक सुंदरता के कारण उसका नाम रोशन हुआ। उसके अनुपम सौंदर्य की बातें सदयवत्स ने भी सुनी, इससे वह उसको देखने के लिये आमुल-ब्याकुल हो गया था। मन भी अधीर हो गया था।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिक्षा के लिये उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया। उसने लड़की सावलिगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया। इतने में उसका गुरु भी वहाँ आ पहुँचा। और उसको वहाँ से ले गया, इस पड़बड़ी में सदयवत्स भी वहाँ आ गया। और उसने अपने पित्र लाल बारीट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहाँ सावलिगा कौन है और कहाँ है ?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावलिगा के दर्शन करने हैं तो यह कार्य यहाँ नहीं बनेगा। किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावलिगा गीत गरबी गाने के लिये जाती है, वहाँ आप जावेंगे तो दर्शन होंगे। सदयवत्स वहाँ पहुँच गया। वह स्त्रीमंडल के बीचमें छाकर खड़ा हो गया। और सावलिगा ने कहा कि "अरी तू तेरे घूँघटका ओजल दूर कर दे और तेरा मुखचंद्र दिखा दे।" तब सावलिगा ने उत्तर दिया "कि मैं जिस शालामें पढ़ती हूँ उस शाला में आना।"

यद्यपि सदयवत्स सदेवंतकी पढ़ाई सत्तम हो गई थी। फिर भी पिता-जी से आज्ञा पाकर वह शाला में गया। किंतु वहाँ मेहताजी के भय से सावलिगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चंपाबाग में प्रीतिभोज का प्रबन्ध करो। उससे मेहताजी को भी आमंत्रण भेज दो

इससे हम मिलेंगे और शांति से बातें करने का मौका भी मिल जायगा ।

दूसरे दिन गुरुजी को आमंत्रण भेजा गया । इससे वह चपावाग में भोजन करने गये और सभी बच्चों को निकास दिया और बाद में इन दोनों ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बातें की । दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए ।

किंतु यह सब प्रेम-विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गई । गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई तो वे दौड़ते वहा आ गये । तब दोनों शर्मिंदे होकर वहा से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदैवत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय, और सावलिगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय । निर्णय के अनुसार सदैवत्स ने गुरु जी से कहा कि आप सावलिगा को भोजन देने के लिये आज्ञा देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूलो न मरे । गुरुजी ने स्वीकृति देदी । और सावलिगा को आज्ञा दी गयी । तो सावलिगा भोजन में बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहाँ गयी बात कही गयी थी भात चावल देने की किंतु वह तो भाति भातिके उत्तम खाद्य पदार्थों की सामग्रिया लेकर गयी । अधिक प्रणयकलह के बाद सदैवत्स एवं सावलिगा ने भोजन किया । दोनों ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया ।

प्रतिदिन दोनों एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं । सावलिगा के पिता पदमशाह सेठ ने लडकी की शादी फौरन करने के लिए निश्चय कर दिया । और रूपशाह एक बड़ी बरात लेकर बड़े सजधजके साथ शादी करनेके लिये वहा आ भी गया ।

सावलिगा ने सदैवत्स से सदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल में आ जाना । सदैवत्स भेष बदल कर वहा महलमें आया किंतु वहाँ उसकी लीलावती नाम की ननद आ घमकी । जिससे इन दोनों में बातें न हुई । इससे सावलिगा ने सदैवत्स से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मंदिर में आ जाना । मला यह बात याद रखना । भूल

मत जाना ।

सदेवत की पाटमदे नामक एक रानी थी । उसने पति को परस्त्री दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना । और उसने रानी को पत्नी दी । भनी बुरी मुनाई, रानी चुप हो गई ।

शादी का समय हुआ तो सावलिगा ने एक युक्ति की । ब्राह्मण देव को पोट दिया गया, प्रपच किया गया । और सावलिगा ने अपनी लविका नाम की चेरी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमंडप शादी के स्थान चोरी (शादी की वेदी) के सम्मुख बिठा दी । इस तरह पशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई ।

रात को सावलिगा रूपशाह सेठ के पास आयी । और धूध के पटल दिया । उसका रूप सौंदर्य देखकर मोहित हो गया, और उसने बलिगा का हाथ पकड़ लिया किंतु सावलिगा ने बहाना दिखाया कि मैं एक शरत की हूँ । प्रण किया है कि यदि मुझे रूपशाह, पति के रूप में प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन करूँगी । बाद में पति से मिलूँगी ।'

सावलिगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय और अकेली जाना चाहती हैं, यह बात अच्छी और ठीक नहीं है । रात समझायी किंतु उसने सावलिगा ने नहीं माना । पूजन का धाल कर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शंकर के मंदिर में आ पहुची । देवत भीतर से द्वार बंद करके नये की खुमारी में नींद ले रहा था । रात कोशिश की, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नहीं हुआ । इससे बलिगा ने मंदिर पर चढ़कर ऊपर के शिखर को उतारकर मंदिर में बेश किया । और मोह-निद्रा में पड़े हुए उस सदेवत को जाग्रत करने के लिए अनेक प्रयत्न किये । किंतु ये सब प्रयत्न बेकार साबित हुए, निष्फल हुए । बाद में हताश होकर उसने सदेवत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पक्तियाँ) लिखीं । जैसे कि

"कोरे घड़े कुंवारि का, जेने खोले आखाणुनी जार ।

एवा शुक्ने तमो आपणो, तो मलसे साबलिगा नार ।

×

×

×

मुणो सदेवतराय, अमल कर्मा आकरे ।

हु छु बालकुमार, जाउ छु सासरे ।"

देह दर्द और हृदय के दर्द से पीड़ित होकर अपने हथेली में घाव के रूप में काव्य-पक्तियाँ लिखीं। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर वापस आ गई। तुरन्त वह पति के साथ पति के देश सिधार गई।

इधर सदेवत नदी से जाग उठा और साबलिगा का मिलन न होने से शोधित होकर अपने महल में वापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमदेन उसको एक बनियेकी कन्यास प्रेम करने के कारण कई अयोग्य बातें सुनाई, बहुत कुछ कोसा। महेण्डे टाण्डे लगाये। इससे शोधित होकर सद्यवत्स ने कड़ी प्रतिज्ञा की कि साबलिगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महाराणी या पटरानी बनाकर छोड़ूंगा। ऐसा कहकर वह अद्वयशालामें पहुँचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आहट होकर अकेला चल दिया।

सद्यवत्स साबलिगा के नगर के बाहर पहुँचा। उसको तृप्ता लगी हुई थी। हाथ में काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु, वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुँह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहाँ की पतिहारियाँ उसकी दिस्लगी करने लगीं कि यह कोई गवार है क्या?। किन्तु वहाँ साबलिगा की बेटी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी-तट पर आयी हुई थी। इन दोनों ने ताड़ लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आदमी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूँगी, अन्य से नहीं।

समुराल में आकर भी साबलिगा ने अपने पति के साथ बहाने बाजी

बढ़ा दी। और पति से यह दिया कि पीहर आते समय मैंने एक व्रन लिया है निश्चय किया है कि यदि मैं ममुराल में क्षेमकुशन पहुंच जाऊंगी तो मैं सात दिनों तक अकेली शयनगृह में नींद लूंगी।

पति रूपशाह ने इस बात को सत्य मान लिया। इस घटना से हमारे देश में उस समय समाज में व्रत मानता के विषय में चिंतनी दिल-जखरी थी इसका पता चलता है। कितना था प्राबल्य व्रतों के विषय में हमारे हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सदयवत्स ने एक मालन को साथ लिया और उनकी सहायता से सार्वलिगा से मिलने का निर्णय किया। सार्वलिगा ने मालन से कहा कि तुम सदयवत्स को साधु का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालन उस नगर की राजकुमारी के यह चले दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालन को कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तू मेरी शादी सदयवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिन्दगी भरके लिये तेरी श्रेणी रहूंगी तेरे उपकार को न भूलूंगी।

मालन दोनोंके संदेश लेकर सदेवतके पास आयी और राजा सदयवत्स से कहा कि मैं सार्वलिगा के साथ आपका मिलाप करा दूंगी। किंतु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हूँ, सदयवत्स ने कहा क्या कह दो। मालन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होतें हैं तो मेरी शर्त यह है कि यहाँ के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पड़ेगी। है यह शर्त मंजूर? राजा ने शर्त को स्वीकार कर लिया। हाँ भर ली। क्योंकि उसका मन सार्वलिगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप इसने यह शर्त स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालन के द्वारा सदयवत्स के मनोभावों की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना । इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली । साथ ही पितासे सार्वलिगा की सब बातें कह सुनाई । और उनका निश्चय भी बतला दिया । राजा ने इस कार्य में सहायता देने के लिए हा भर ली ।

अब राजा ने सार्वलिगा की शादी के विषयमें निर्णय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारी बातें बतला दीं । रूपशाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सार्वलिगा के साथ नहीं हुई है एक चेरी के साथ हुई है । दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एक सार्वलिगा इन दोनों की परस्पर अत्यंत एक हृदय से भी चाह है । ये सारी बातें जानकर उसने सार्वलिगा को सुपुद कर देने की सम्मति देदी । सदेवत को दे देने की भी रूपशाह ने हा भरी । अब राजा वीरमदे ने एक बड़ा लग्न-महोत्सव निश्चित किया और सदेवत के साथ ये दोनों स्त्रियो सार्वलिगा एक कनकावती की शादी कर दी ।

कुछ समय महा वितावर राजा सदेवत दोनों रानियो को साथ में लेकर बड़े सज्जज के साथ अपने देश वापस लौट आया ।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा है । यह जानकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और बड़ी धमधाम से लेने के लिए सामने गये ।

सदयवत्स की मा भी उमंग में आ गई । उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियो से शादी करने आया है, पॉलि (सादी की विधि के अनुसार) लिमे । सदयवत्सन निणयानुसार इन तीनों रानियोमसे सार्वलिगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूण किया । सदयवत्स न कई वर्षों तक सुख से राजकाज किया । खाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एक आनन्द में जीवन व्यतीत किया ।

प्रबन्ध में मासाजिक जीवन-नृपति एक प्रजाजनों के बीचका सब व बहुतायत से नगरों में एक राजधानी में भी सदेवतवि एक प्रम-भावना से युक्त रहता था । फिर भी राजा की अमाप सत्ता के समिके प्रजाजनों का कुछ बस नहीं चलता था । राजा किसी का मित्र नहीं

प्राचीन सुभाषित के अनुसार, सद्यवत्स के पिता प्रभुवत्स का आचरण या वर्तव्य मयानक को नया मोड़ देता है। एक दिन पुत्र के पराक्रम पर सतुष्ट होने वाले पिता दूसरे दिन प्रधान मंत्री के पद्म-शिवार बनता है। स्वयं युवराज-पद पर स्थापित किये गये पुत्र को (राज कुमार को) राज्य की हद छोड़कर चले जाने की आज्ञा देते हैं। यदि राजा किसी पर सतुष्ट (प्रसन्न) होता है सब उसे 'पसाय' (स. प्रसाद) देते थे।

राज्य की कार्यवाही में अनेक प्रकारके प्रपञ्च एवं पद्म-शिवार की कार्यवाही चलती थी, यह बात हम प्रधान के पद्म-शिवार (पृ० १४) की कार्यविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत से राजा लोग निष्क्रिय रहते हैं।

क्षणतुष्ट एवं क्षणरुष्ट ऐसी राजा की उदास भावनायें भी गणना-पात्र हैं ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजनो ने जो चीजें प्रदान की थी उनका राजा ने स्वीकार भी नहीं किया था। किंतु वापस लौटा दी थी। (कड़ी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन सद्यवत्स राजा एक प्रसंग देता है (पृ ६४) वहाँ होता है। खास करके कानून के चक्कर में पड़ने के बजाय सरस समझदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके ही न्याय का फैसला या निर्णय लिया जाता था।

त्यौहार या उत्सव-प्रसंगकपर नगर जनो द्वारा नगर-की जोसजावट या शृंगार व दनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर बयान दिया है। (पृ १२-१३)

नगर में एक ओर जैसे शणिकागहों की अनिवार्यता देखने में आती है, वैसे दूसरा ऐसा अनिवार्य स्थान छूतस्थान (जू-ठाण) प्रख्यात गिना जाता था ऐसा हमें पता चलता है (कड़ी ४०१) छूतस्थान छूत के क्षेत्रीय अखाड़े) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है। नगर-जगदियोंके नाम भी कविने अंकित किये हैं। (कड़ी ५०९-५१०)

वैसे ही प्रसिद्ध वाराणसी के नाम भी (कडी ५४२, ५५२) अमरवद्ध एव व्योरेवार गिनये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमें होती है और इस समाजमें जितना महत्व का गिना जाता है उतना प्राचीन समय में गणिका एव चूतका स्थान होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोकीसत्ता-नगरो में उनके व्यापार के क्षेत्र में अबाधित रूप में रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठियों के नामों की जानकारी भी हमें प्राप्त होती है। (कडी ५३२, ५३५)

वारहट्ट और ब्रह्मभट्ट-या चारन का स्थान राजा एव प्रजा के बीच में स योग जोड़ने वाली शृंखला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह 'प्रतिभू' यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमान्य भी गिना जाता था। (पृ० १२) साबलिगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गाव का वारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (प्रास) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पाच दिनों के लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरण-नीय जान पड़ता है।

राजा की आज्ञा का पालन करने वाले-‘तसार’ और (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८०-८१) दंड के भेदों में शूलि, मग-प्लेय एव कारागृहवार जेलखाना इतने भेद जानने समझने के लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरान्त स्वेच्छा से लोग स सार असार जानते ही जीवन से तग आकर वाशी में जाते थे, और यहाँ करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्मके प्रति कितनी बढग श्रद्धा रहती थी इसका हमें दर्शन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किसी धातु या सिक्का गरम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

कवि भीम-विरचित

श्री सद्यवत्सकीर प्रबंध'

ॐ नमः । श्री सारदार्ये नमः । श्री सद्यवत्स्यो नमः ।

[मंजतावरण]

(गाहा)

MSA. 11. 1251

माई महामाई-मज्जे, भावप्र सन्न जो सारो ।
सो विदु ओंकारो, स ओंकारो नमस्कारो ॥ १ ॥

जिए रचीय आगम निगम, पुराण सर-अक्खराण वित्थारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय^१ पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥

गयवयण गवरीनंदण, सेवइ सुहकरण अमुह-अवहरणो ।
बहु-बुद्धि^२-सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥

गुरु लहुय जि केविकवियण, सरस-सुअत्य सुच्छंद-बंधयरा ।
एकत्थ^३ ताण सज्जे, करजुअल जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[नव रसात्मक सद्यवत्स प्रबंध]

सिंगार हास करुणा, रुहो वीरो भयाण बीभच्छो ।
अदभूत संत नवइ रसि, जसु जंपिसु^४ सद्यवत्स्यस्स ॥ ५ ॥

१. 'सुदयवत्सकीर चरित्र' भा.; 'सुदयवत्स्यपञ्चप्रबंध' भा. २. 'बीत-
शोभाव नमः' भा. ३. 'पय पूजवि द्वैय मग्गेसु' भा. ४. 'लज्जि', 'दधि'
भा. ५. 'एकंत भाणि सज्जे', भा. ६. 'वसित', भा.

[सद्यकुमार परिचय]

(छन्दः)

मालवदेस-मज्झारि, नयरि ऊजेणि अणोपम^१ ।
 ५३ पहु पहुवच्छ नरिद, नारि^२ बहु लच्छि लच्छि-सम ॥
 तिह सुअ सद्यकुमार, सबल सामलि-भत्तारह ।
 साहसि^३ पवर-प्रसिद्ध, जय जगि जयत जूमारह ॥
 तित्ततणि^४ खित्तोय सोहकर, रायरोति वीर^५ जि विबुध ।
 इम^६ भणइ भोम तस गुण गुणिसु, जो हरसिद्धि वर सबध ॥६॥

[उज्जयिनी नृप प्रभुवत्स]

(गद्यः)

ऊजेणि अवणि-मज्झे, नयरीवर^१ नयर-सयल-सिंगारो ।
 तेणि पहु पहुवच्छो, पत्तंतह पूरण अत्तो ॥७॥
 [नगरी-निवासी ज्योतिषी विप्र]
 तिणि नयरि एक निवसइ, विण्णो विज्जा-निहाण चउवेई^२ ।
 जोइत्तिक-कला-कुसलो, निद्धण कणवित्तियाजीवी ॥८॥
 तस घरणि इक्क अवत्तरि, अखय मंत कंत एक तत्स ।
 "पिय ! पहुवच्छ नराहिंवे, पच्छसे^३ पत्थि हो पत्थि" ॥९॥
 मनि घरवि घरणि-वयणां, विण्णो संपत्त^४ राय अत्थाणां ।
 लेई अक्खय करपत्तं, आसीय-वयणां पयासिपुं तत्स^५ ॥१०॥

१. 'निहाम' भा. २. 'महिव' भा.; 'बहुवच्छि' प्र. ३. 'साहनि जयि' प्र. ४. 'तित्ततणइ सत्तोय' भा. ५. 'वीरति विबुर नर' प्र. ६. 'वि भोम' तामु गुण वप्रवद, जो हरसिद्धि सबधवर' भा. ७. 'नारीवर' भा. ८. 'चउवेयो' प्र. ९. 'पच्छसे पत्थि हो पत्थि' प्र. १०. 'संपत्त' प्र. ११. 'प्रप्याखो' भा.

[आशीष वचनार्थं राजसभा-गमनं]

सुविष्णुः (हृदा)

विष्णु^१ सुविज्जित ऊलखित, कीउ पट्टवच्छि^२ प्रणाम ।
आदरि आसण अप्पोउ^३, “कहिन्^४ देव ! कुण ठाम ?” ॥११॥

पुच्छं पुच्छं. (छंद पदयो)

पट्ट^५ प्रच्छइ जंपइ विष्णुराउः

“सुरिण^६ नरवर ! अम्ह ऊत्रेणि ठाउ” ।

“दिन एता^७ दिट्ठि न दिट्ठ देव !

त काई कारण ? कहिन हेव” ॥१२॥

“जां लगइ कुकम्म-वसि हुइ कोई,

ता सुपुरिस-सरिसी भेट न होइ ।

जव^८ टलिउ देव ! दारिहुनु भाउ,

तव पामिउ मइ^९ पट्टवच्छ राउ !” ॥१३॥

[प्रसुवत्स वचन]

(हृदा)

विष्णु-वपणि^१ राउ रजित, पूछइ वलीअ विगति ।

“कवण कला गुण तू^२ अ-तराइ?, कवण तुज्ज^३ कुल-वित्ति ?” ॥१४॥

[विप्र वचन]

(वस्तु)

विष्णु जंपइ, विष्णु जंपइ: “निसुरिण नरनाह ।

जयवंती ज्योतिष कला, कुलकम्मि अम्ह अच्छइ अगइ ।

१. ‘पट्टणा’ भा. २. ‘सवि जउ’ भा. ३. ‘कहुन’ भा. ४. ‘पट्ट
पूछित’ भा. ५. ‘सणि’ भा. ६. ‘काइ’ भा. ७. ‘तट्ठम’ भा. ८. ‘शुत’ भा.
९. ‘वित्ति’ भा.

बरतारउ^१ संवच्छरह, नष्ट जन्म नवि बित्ति लग्गइ ॥
 जं सुरपुदि जं नरमुवणि, जं जं हुइ पायालि^२ ।
 नरवर ! निज मंदिर-यिक्कं, तं जाणू तिणि कालि^३ ॥१५॥

(दूहा)

यिष्प-तणइ प्रति वड वयणि, वसित राउ-मनि रोस ।

[पधुवरस वचन]

जोसो

"जं वंभण ! तू^४ वरुलिउ, तं^५ जाणिमु तूं^६ अ जोस" ॥१६॥

तिणि^७ अवसरि अगलि रहिउ, गलि गज्जइ गजराउ ।

[ज्योतिष ज्ञान परीक्षा । गजराज जयमंगल आयु प्रश्न]

"अयवंतु^८ जयमंगलह, एह कहि, केतू^९ आउ ?" ॥१७॥

लगन लेई^{१०} तव ततखणि, कहिय खडी करि भल्लि ।

[जयमंगल फलादेश कथन]

"जइ पूछिसि पडुवच्छ पडु, मरइ ति कुंजर कल्लि !" ॥१८॥

वंभण-केरइ बोलइइ, राउ चमक्किउ चित्ति ।

"जउ कुंजर कल्लि नवि मरइ, तउ तूं^{११} अ कहि, कुण गति ?" ॥१९॥

ॐ. आगइ एक अणजाणतां. तइ^{१२} वड बोलिउ बोल ।
 आ तिहू पाहिइ^{१३} अधिक, जाणइ निरस निटोल" ॥२०॥

विष्प भणइ: "नरवर ! निमुणि, देव भदु छि अनंत ।

जे जयमंगल हत्थीउ, तेअ^{१४} यिइ दिणि अंत ॥२१॥

१. 'बरतक' था. २. 'दियास' था. ३. 'तई' था. ४. 'सिउ जाणिस तूं' था. ५. 'तोणि' था. ६. 'अइवंतु' था. ७. 'किशू' था. ८. 'विहंठ' था. ९. 'स' था. १०. 'स' था. ११. 'स' था. १२. 'स' था. १३. 'स' था. १४. 'स' था.

ॐ

चिह्नै दिसि चिह्नै थम्मे सरिस, जइ बहु बंधणि बढ ।
तोइ बि प्रुहरे [बंधण भणइः] "चल्लइ मत्त मदंघ ॥२२॥
गरुअ गुफा भल भु^{लोधइ}हिरइ, चिह्नै पक्खे पुंतार ।
इम रक्खंतइ राय ! सुणि, बि-पुहरि मंडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्स नृप कोप-कथन]

(वस्तु)

राउ जंपइ, राउ जपइ: "वयण निसुणि^१ विप्प ।
मुक्क परतन्या पुव्व लगइ, अधिक उच्छ बोलइ स बाल^२ ।
जो^३ भलीअ न चल्लइ अम्ह-तणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारु^४ ।
जउ बंधण ! वि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खंम ।
तउ तू^५ आगा तिलयनइ ठामि दिवारिसु^६ डभ ॥२४॥
(चउपई)

"जउ जोसी ! तू ज्योतिष साच, तउ थिर थापउ^७ माहरी वाच ॥"
[कलादेस मिथ्या करणोपाय]

इम बोली तुरी पाठविउ, राइ^८ गज-राखण आठविउ ॥२५॥

एकि भणइ: "ए बांभण^९ बूड", एकि भणइ: "ए^{१०} काचउ कूड"
एकि भणइ: "ए पडिउ अपाइ, किम छूटेसिइ राखिउ राइ^{११} ?" ॥२६॥

गज-पाखलि^{१२} पायक सइ^{१३} पंच, ते^{१४} पुंतारि मुणइ प्रपंच ।
सीह् आपी आंकुस नइ आर, राइ^{१५} मेल्हपा राखणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आंकुस लेई ऊपरि चडइ ।
इणइ^{१६} परि राखिउ सघली राति, पुहतउ तिहां पहुवच्छ प्रभाति ॥२८॥

१. 'निसुणि वर विप्प' आ. २. 'तल तणइ' अ. ३. 'दिवारिसु' अ. ४. 'बूड'
अ. ५. 'कीधउ' आ., ६. 'जे' अ. 'कुणइ प्रपंच' अ. ७. 'धूणी धरा पाडपा पुंतार'
आ. ८. 'इम इप्पु गज' आ.

[विशेष गज-रक्षण-प्रबंध]

धली अधिकि बंधाविउ बंधि, सवा-भार लोह-संकल कंधि ।
नवि सलसली सकइ थिउ ठामि, किरि^१ चित्र कि लिखिउ
^{हाला माली २१३} ^{११५} चित्रामि ! ॥२६॥

राई तइं तेडभा पुंतार, "रे ! रुडि-परि करिज्यो सार ।
गाढा थई राखउ^२ गजराज, बांभणि बि पुहर लहिणा आज" ॥३०॥

[उच्छृङ्खल गज-गमन]

हम करतां सिरि आविउ सूर, गज चानिउ पावरिसनू पूर ।
घाइ घसइ अनइ घडहडइ, किरि आसाढि अंवर गडगडइ ॥३१॥

थोडी संकल मोडणा खंभ, चुहुटइ चालिउ गुरुआरंभ ।
नवि लेखइ^३ आकुस नइ आर, धूणो घरा^४ पाडणा पुंतार ॥३२॥

[उन्मत्त गज पय-विहार-परिणाम]

गजि चउहुटइ जई मंडिउं गाह, पान-तणां सवि लाख्यां लाह ।
फूल-तणा तिहां पूर्या पगुर^५, मइगलि माथइ कीघउं नगर ॥३३॥
पुहुतउ अणि सुगंधी-तणी, राज-वस्त मेसी रेवणी ।
लाखइ केसर अनइ कपूर, वास्यां तेल वहाव्यां पूर ॥३४॥

[लोक-संभ्रम] ^{अपसठि} ^{सोड}

तीणइ दीठइ दोसी दडवडइं, पारिखिने पगि पीडो चडइं ।
फडोआ फोफलीआ सोनार^६, नाठा लोरु : न जाणइं सार ॥३५॥
हाट-मांहि थिउ हालकनोल, किरि कमलापति करइ कलोल ।
पोतां लाख्यां पारिखि-तणां, कापडि सरिस किरिआणां घणां ॥३६॥

१. 'जाणे गज लखीउ चित्रामि' या. २. 'राख्यो' या. ३. 'मानइ'
या. ४. 'धरि' या. ५. 'सूनार' या

एक अटालि मालि गढि चडइ, एक पावरि दह दिसि दडवडइ ।
 एक^१ छावडा अछइ छडछोक, ते सीकिइ^२ -^३ ^{३१७७७ ३६५५५७७७७} ^{३६५५५७७७७} लूसइ लोका ॥३७॥
 गिउ गयद गुर-हटनी वाट, तिहा^३ मदिराना दीठा माट ।
 मधु महुअडा द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्या लाख^४ ॥३८॥
 आगइ पचायण पाखरिउ, आगइ पन्नग पखावरिउ ।
 आगइ गज अ गि जमदूत, बली वारुणी भावि थिउ भूत ॥३९॥
 सुडाहल पूरइ परचड, दतूसल जाणै जमदड ।
 पाडइ विसमा पोलि प्रासाद, नर नारिनु^५ ऊतारइ नाद ॥४०॥

[गजनिपत्रणे नृपाममन]

राउ असवार थई थिउ^६ केडि: "जे भड भला ते बहिना तेडि ।
 जे आणी बघइ^७ गज ठामि, तेहनइ आपू गाम अनामि ॥४१॥
 आपउ अ ग-तणउ शृगार, आपू एकाउलिनउ हार ।
 आपू अधिक बली पसाउ, जे बलीउ बघइ गजराउ' ॥४२॥
 एक भणइ 'आधो धाईइ', एक भणइ. 'जमपुरि जाईइ' ।
 एक भणइ वरि रुसइ राउ, सरसिइ^८ एहना पखइ पसाउ' ॥ ३

[ब्राह्मण मीमन्तिनी-गृहागमन प्रसंग]

नव^९ वारहि नयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तैणि ।
 बभण एक तणइ तिणिवार, आधारणि अवसरि जयकार ॥४४॥
 गयगामिणी धवल-धुरिण करइ, वारु विष्णु वेम उचरइ ।
 मस्तकि मेघाडवर छत्र, वाजइ^{१०} पञ्च शबद वाजिन ॥४५॥
 भरीय सेसि सइ हथिइ^{११} भाई, पोहरि—थी पस पूरइ जाई ।

१. 'जे छा छडा मनइ छड छोक' भा. २ 'पाछलि' भा ३ 'मदिरा-
 पूर्ण' भा ४. 'राय' भा ५. 'नहनरिद' भा ६. 'त्रिउ' भा. ७ 'बघइ
 बलीउ' भा. ८ 'रुडिसिइ' भा. ९ 'नव नाहगि' भा

[अथवाकुन परम्परा]

जा^१ घडि चालइ पहिलइ पाइ, ता आडी क्तरइ विलाइ ॥४६॥

सडकी खूली चानी बाट, जाती वाडि विलागू^२ घाट ।

जा^२ घाटहू^३ विच्छोडो वाडि, ता तरु-मइ^४ नी छीकी विलाडि ॥४७॥

पग खंचोनइ पाछी बलोइ, सूकइ काठि काग किलगिलइ ।

अनइ अनेरा हूई अमुण, तिहना कारण जाणइ कुण ? ॥४८॥

एकि भणइ 'एह पडिसि ग्राम',^५ एकि भणइ 'एह गलिसि ग्राम' ।

एकि भणइ 'एह हवडा हाणि, एह अमुण-तणइ परमाणि' ॥४९॥

[गजराज कृत सीमन्तिनी-प्राह]

गजर सुणी गज तिहा-थउ वलिउ, पेखणहार लोक सह पलिउ ।

सगू^१ सणीजू^२ गिउ^३ सह वही, विप्र-घरणि^४ गयवरि ग्रही ॥५०॥

इम साही सु डिहि कडि यत्रि, जाणे लाठि^५ लगाडी यत्रि ।

नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत्त, पेखइ राइ राणा राजत^६ ॥५१॥

[सीमन्तिनी-परिहृत मोक्ष-प्राप्तता]

२१५५५

(छन्द पदवी)

सय आविउ घाइउ^१ ति नारी-मरतार,

बु वारव वभण करइ अपार ।

"को सुभट घूर साहसिक शुद्ध^२" ॥५२॥

को घोर वीर वसह विशुद्ध ? ॥५३॥

कोइ जाइउ चउदिसि चपल अग ?

को अकल अटल आहवि अहग ? ।

पुच्छ अग

१. 'छेडि बीतइ' या 'ग्रामलि' या. २. 'जा घाटक कुं' व बीछो बाडि, ता न रमइका छीक निसाडि' या. ३. 'पडिसि' या. ४. 'नादि वराहरि' या. ५. 'साटि' या. ६. 'सामत' या ॥ तिहि' या ८ 'सिद्ध' या

कोइ खितीअ खल-खंडण समत्य ?

को अछइ छयल खिति खगहृत्य ?" ॥१३॥

[मार्गे कुमाइ सदयवत्सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,

पूछिउ^१ ताम पहुवच्छ-जाइ ।

[सद्यवत्स वचन]

"देव !^२ दया कर, कुण दूहवइ तुज्ज ?

यिर थइ भिइ-कारण कहिन मुज्ज ॥१४॥

कुणि मारिउ ? डोरिउ ? हरिउ रिद्धि^३ ?

कुणि लूसिउ ? लीघउ ? तू कहिन सिद्धि ?^४"

[विप्र रक्षण-याचना]

तीणि वयणि विष्णु गीअ^५ विहलमुच्छ,

"करि वाहर, स्वामी सदयवच्छ ! ॥१५॥

(दूहा^६)

भाघरणि अवसरि घरणि, भावंती आवासि ।

मारणि अबला एकली, पडी महागज-यासि ॥१६॥

जम-मुहि^७ किस्पू^८ जीवोइ ? , चतुर ! विमासिन चित्ति ।

सदयवच्छ ! सा वीभिणी, मारोय हुसिइ मत्ति !^९ ॥१७॥

[बीर सदयवच्छ मत्तगजाक्रमण]

(छंद पदवी)

तव घायो धूँबड घसमसंत,

किरि आवइ केसरि करि^{१०} कसंत ।

१. 'तिहा पूछीय' आ. २. 'देव देव म करि' घा. ३. 'परबि'
आ. ४. 'बहु मुहम पुछ' घा. ५. 'केतू' आ. ६. 'क्रमकसंत' घा.

चर्वरोय भंति भलकंति^१ भालि,
कलकिल्यु^२ वीर ध्यु भृकुटि भालि ! ॥१८॥

मयमत्त^३ रत्तू जब दिट्ट दिट्ठि,
तव असिधर कड्ढवि किद्ध मुट्ठि ।
मुहि मंडवि हक्किउ सवल हत्थि,
साहसीय^४ सुमट्ट सुंदर समत्थि ॥१९॥

नवि मेल्हइ नारिय सूंडि-अग्गि,
दंतूसल तोलवि बलिउ वेग्गि ।
इम हण्णिउ करडि करिमालि कंधि,
जिम त्रूटि^५ सीसि गिउं श्रवण-सधि ॥२०॥

(राग बेदाह एकताली)

राइं बोलाव्या बहू, जे भड गय-धड खंडंति ।
तेहू पाखलि परिभमइ, नवि वारण मुहि मंडंति ॥२१॥
मेगल मत्तालउ ए, नवि जाणइ पवरिस-पार^६ ।
अंकुसि सरिसा अवगणी धूणी, धर पाडया पुंतार ॥२२॥

[सदयवत्स कृत हस्ति-निग्रह]

सदयवच्छ सूरु सही, जीणइ बलीइं वंभण-नारि ।
मेल्लावी हणी हायीउं, जग पेखइं जइ जयत भूमारि ॥२३॥

(छंद पदवी)

गडअडिउ गयंद कि पडयउ पुहव्व, पूव्व
सुर अत्तरिक्ख पेक्खइं अपूव्व ।

१. 'भलकइ कवालि' अ. २. 'कलकलिउ वटाणु, यिउ भृकुटि भालि'
अ. ३. 'मयमत्तव जब नयणि दिट्ट' भा. ४. 'साहसीक सूर' भा.
५. 'त्रूटिवि' भा. ६. टंक ६१ यो ६३ भा. प्रति या नयो ।

‘जय जय’ शब्द जंपइ जगत्त,

पहुवन्छ पुत्त^१ पेखइ चरित ॥६४॥

[सीमन्तिनी प्राणजन्म मानद]

(चउपई)^२

ते बंमण तेडिउ^३ तिणिवार, युवति समोपी किद्ध जुहार^४ ।

बंमण-घरि विमणउ^५ उच्छाह, ‘सुद्’ सुद् !’ करइ^६ नरनाह ॥६५॥
^{६५६ अणु}

[प्रसुवत्स-दत्ता धन्यवाद]

साजंतइ जई किद्ध जुहार, राइ^७ आलिगण दिद्ध अपार ।

बापिइ^८ वेटउ वांहि घरिउ, राउ राजभवनि संचरिउ ॥६६॥

धारहट्ट धोलइ तिणि वार, सद्यवत्स न सहइ कईवार ।

भाटइ^९ भेद परीठिउ^{१०} इसिउ: “पशु मारइ^{११} पुरपारय किसिउ? ॥६७॥

(छंद तोटक)^{१२}

मइमत्ता कि भारिय सज्ज रयउ,

शर-टंकीय मुंदर शल्ल विगयउ ।

गयगंजण ! लज्जिजइ स्त्रि किमइ ?

किम किज्जय सद् सुसमर तिमइ ? ” ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करीय पहारो, भेनावइ मुन्छ मोडए मूढो ।

साहसीअ सद्यवच्छो, लज्जरिउ भारि मयमतो ॥६९॥

१. ‘प्रवरित पेखइ पुत्त’ घ. २. ‘तेडाव्यु ताव’ घा. ३. ‘प्रणाम’
घा. ४. ‘मनिई’ घा ५. ‘सूदा साद’ घा. ६. ‘रीछयउ’ घा. ७. टूक ६७
घा. प्रति० मा नथो.

[सद्यवत्स युवराज-पदाभिषेक]

(चउपई)

ते महरत ते मगलाचार^१, सेसि भराव्यउ सद्यकुमार ।
 राउ अण्णइ राणि मनइ राज,सूदउ भणइः^२ न राजिइ^३ काज ॥७०॥
 धरि धरि तलीया तोरण बहू, ऊजेणी आणद्यउ^४ सहू ।
 हऊउ हग्गि राजा-मनि धणउ, पेखि पवाडउ सूदा-तणउ ॥७१॥
 (जेस्य)

[सद्यवत्स विनय वचन]

"तुम्हि जगि जयवता^५ हुयो देव^६, करिसु सदा हू तह्य पय-सेव
 नयरि^७ निचिन्त रमू निशिदीस, तह्य पसाइ^८ पहुवच्छ पहीस ॥७२॥

रमू^९ भमू^{१०} जाऊ जूवटइ, चूरि^{११} चाचरि^{१२} सेलू^{१३} चउवटइ ।
 सुहुडपणानी लीला फिरू^{१४}, अधिपतिपणू^{१५} न अंगी करू^{१६} ॥७३॥

जिहां जिहां रामति हासा होड, जिहा जिहा कला कुतूहल कोड ।
 जोवा जाऊ^{१७} तीणइ^{१८} ठामि, ईणइ संकटि पाडि^{१९} म स्वामि ॥७४॥

राज-काजि एक बंधव वाप, मारइ पुरुष न वीहइ^{२०} पाप ।
 लीलावंत-तणइ^{२१} मनि लाज, [सूदउ, भणइः] न राजिइ^{२२} काज ॥७५॥

[प्रभुवत्स-प्रसाद]

?

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अ ग-तणउ भृंगार ।
 आपिउ आसण-तणउ तुरंग, राजा-अंगि^{२३} न माइ रंग ॥७६॥

ते वभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ^{२४} किद्ध प्रणाम ।
 आपिउ^{२५} वासि वसंतू^{२६} गाम, बहु^{२७} अरय नइ अंबर द्राम ॥ ७७ ॥

१. 'मगलवार' आ. २ 'जइजइवंता देव' आ. ३. 'निरतर' या.
 ४. 'धरि' या., 'निग्र' म ५ 'पाउ काइ' आ. ६ 'रिदइ' म. ७. राजा
 ऊठी' म. ८. 'मारय सरीसु अंबर द्राम' आ.

बंभणनइ घरि भागी भूख, नाहूँ दुरीय-सरीसूँ दूख ।
महाराजि जउ दीघउँ मान, लोक-मांहि तीणइ 'बाघिउ'वान ॥७७॥

(दूहा)

बंघीः तलीया तोरणह, मूडीय वन्नरवालि । ^{धनपत्नी ५१}

दीसइ दीवाली-तणा, ^३ उच्छव हई ^४ अगालि ॥७८॥ ३५५

पंच शब्द निनाद ^५ रसि, वद्धावो वाजंति । ^{२१५५}

^{१५५५} पड-सह ^६ पूरी भुवण, गयणंगण गज्जंति ॥७९॥

विष्णु वेम्न-धुणि उच्चरइ, करइ सुकवि कइवार । ^{२१५१२}

रायंगणि राजा-तणइ, मिलिया मगणहार ॥८०॥

वर-मंडपि मंडीय गजर, वज्रइ मधुर मृदंग ।

*रागरंग गायण गमक, नच्चइ ^७ नाचिणि चग ॥८१॥

किहि कप्पड़ किहि दिइ ^८ कणय, किहि केकाण ^{२१५१३} कच्छहि ।

धन देयंतो ^९ किलकिलइ, पहुवच्छ मन-मांहि ॥८२॥

'भासीस दिइ' बहिनर बहू, मा भनि रंग-रसाल ।

भरीय सेसि सह ^{१०} हथि-सिउ, वद्धावइ वर बाल ॥८३॥

(बउपई)

^{१०५१} मणि माणिक मुत्ताहल-हार, ^{११} कापड-कणय कपूर अपार ।

विवहारीए वधावूँ किइ, राजा किहिनूँ काईअ न लिइ ॥८४॥

१. 'तु'मा. २. 'लागउ' घ. ३. 'घरिघरि' घ. ४. 'दीपाछव' घा.
५. 'नयारि' घ. ६. 'निरंरह परि' घा. ७. 'पट्टिछे' 'रागरणि भानविकरइ,
नाचइ पात्र मुरंग' घा. ८. 'वेचंतु' घा. ९. 'बहिन करइ ऊपारणा,
मा भनि' घा. १०. 'हीर-पीर सोवन शृंगार' घा.

[सद्यवत्स सन्मान-यप्रसन्न प्रधान]

सद्यवच्छनूं सुणी वृत्तंत, ^{मुहतानइ} मुहतानइ^१ घरि वइठउ मंत्र ।
 “राउ आपता न लीधूं राज, ^{भूप-जमलउ} भूप-जमलउ^२ यिउ युवराज ॥५६॥

आज-थिकउ इहनइ सिरि भार, राजा आरोपिसिइ अपार ।
 लहुडपणा लगइ लक्षण सार, आगइ जूठउ अनइ जूआर ॥५७॥

जे माणस एहनइ नितु नमइ, ते माणस एहनइ मनि गमइ ।
 जे माणस आगइ एहना, सरसिइ^३ काज सधि तेहनां ॥५८॥
 आज-थिकी^४ हिव एहनी आम, आज थिकउ एहनउ बीसास ।
 आज-थिकउ राजा मनि एह, आज-थिकउ हिव^५ अम्हनइ छेह ॥५९॥
 आगइ “इह-सिउ” नवि मुभ रंग, जे मइ^६ जीव^७ विरासिउ रंग^८ ।
 अरथ-तराउ अति कीधु लोभ, सगे-सणीजे^९ न रही शोभ ॥६०॥

[प्रधानकृत युवराज-विरद पद्यम्]

शेष

हिव ते काई करउ उपाउ, जीणइ^१ एहनइ^२ खुसइ राज ।
 इसिउ अरुख पाडउ रेसु^३ कइ मारइ कइ काढइ देस ॥६१॥
 कुटंब तरु^४ सांभलिउ^५ कहिउ^६, मुहुतइ^७ सोइ जि कयन^८ संप्रहिउ ।
 मंति-पयहपणू^९ तउ आज, जउ है कालि कढावूं राज ॥६२॥

[प्रधानकृत भेद-प्रपंचारम्]

तउ परधानि मांडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पंच ।
 सांभइ अरु^१ आयमणी दार,^२ बीर ववावूं लेई^३ तोणि वार ॥६३॥

१. ‘महितानइ’ आ. २. ‘मुहु जमलि’ आ. ३. ‘पछी’ आ.
 ४. ‘राज-मनि’ आ. ५. ‘एहनइ नही भूं ग’ आ. ६. ‘जान’ आ ७. ‘रंग’
 आ. ८. ‘माहि’ आ. ९. ‘जिम, हिव’ आ. १०. ‘कुटुम्बि इस्पू’ विमासी
 आ. ११. ‘वयण’ आ. १२. ‘सूर’ आ. १३. ‘वार’ आ. १४. ‘करइ’ आ.

भापरि कीधउ कालउ शृंगार, कालउ अंग-तणउ आकार ।
 काला कापड कीधां भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥६४॥

रा एकांति मंति लेई गउ, “काइ प्रधान, ^{हयान गुप्त} काल-भू^हअ धिउ ? ।
 एतां सधलू ताहूँ राज, नवूँ ति काई कारण आज ?” ॥६५॥

जाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ बूड ।

जाणइ अंग-तणउ अनुराग, ^{अन} आतइ ततक्षिणि लेई ताग ॥६६॥

[मंत्री वचन]

“नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, बइरो-घरि होसिइ जेतलउ ।

‘जयमंगल’ मारिउ’ महाराज!, इसिउं वधामणुं छाजइ आज ? ॥६७॥

मदि^१ आव्या छूटइ मयमत्ता, रोसि चड्या ते हीडइ रत्त ।

आइ उपायि, बली घराइ, इम अजुगतिइ^२ न आलि मराइ । ६८॥

जास पसाइ^३ दमिया देस, जास पसाइ^४ नमइ नरेस ।

जास पसाइ^५ दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि त्रिभोगल^६ भग्ग ॥६९॥

जीणइ तात ! तम्हे^७ लिउ दंड, दमिय देस लीजइ^८ सवि खंड ।

ते उलग आवइ अहिठाणि^९, जे जीता जयमंगल प्राणि ॥७०॥

मदि^{१०} आविउ करि सारइ काज, बइरी-तणां विध्वंसइ राज ।

पाडइ बिसमा पोलि पगार, प्राण-तणउ नवि जाणइ^{११} सार ॥७१॥

ऐरावण सुणीइ इन्द्र-नइ, जयमंगल हूँतउ तुम्ह-तणइ ।

श्रीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ, प्रापति पाखइ^{१२} न रहिवा लहइ ॥७२॥

१. ‘आकार’ अ २. ‘वात करंतु बोलइ गरि’ अ. । ३. ‘मइ’
 मइगल’ अ. ४. ‘मन्दिर’ अ. ५. ‘अजुगतउ’ अ. ६. ‘ति’ आ. ७. ‘तु महाराज’
 पंड’ अ. ८. ‘लीजंता दंड’ अ. ९. ‘अप्याणि’ आ. १०. ‘तामइ पार’ अ.
 ११. ‘विण किम संहिवा सहइ ?’ आ.

भम्मूलिक चित्ता-रण, जउ करि चढइ सुरंक । अर्थ २५
तां धरि कित्ताउ ते रहइ ?, जित्ताउ बीय-मयंक" ॥१०३॥

[मातंकित राजा-चित्त]

७१४२०॥

(पउपई)

मुहुतइ^१ मंथ-भार जउ भणित, तीणि राजा-भन धारित घूणित ॥
न सहि कोई नोसासा-फूंक, जाणो पूरव पूरित डंक ॥१०४॥

जे बहु नेह धरंतउ वाप, ते माचु तीणइ^२ कीधु साप ।
रोस चढावित सयली राति,^३ पुहुतु तिहां पहुवच्छ प्रभाति ॥१०५॥

[रोपपूर्ण प्रभुवत्स]

फूंकी धमी^४ धमावित एम,^५ जिम ते ततकरि त्रूटई^६ प्रेम ।
बूड^७ बोलंत आवित वंधि, सूदा-सरसी पाडी संधि ॥१०६॥

[सखवत्स माता-वचन]

थिउ धवसर उलगनु जाम, माइ^८ बेटउ बोलाव्यउ ताम ।
'सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा-प्रति^९ कर जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद पिता भुल-दर्शन]

माता-वयणि समागित सुह, तां राजा-भुलि^{१०} दीट्टउ रउइ^{११} ।
सिर नामंतां बोलित राड^{१२}, हासा-मिसिइ^{१३} भागां^{१४} हाड ! ॥१०८॥
नीच नइ^{१५} न-भाणीउ कूउ, तिह उमरि ढालइ^{१६} डीकूउ ।
वार वार पय^{१७} करइ प्रणाम, नीर-त्तणूं नीठाइइ^{१८} ठाम ॥१०९॥

१. 'पाछइ बोलावित परमाति' म. २. 'इम' म. ३. 'त्रोटइ तीज'
म. ४. 'बूड' म. ५. 'राबानइ करइ' म. ६. 'मनि' धा. ७. 'साह' धा.
८. 'मजइ' धा. ९. 'माडिब' धा. १०. 'सिचि' धा. ११. 'नीवाउइ' धा., ध.
१२. 'हाड' धा. १३. 'मिसि' धा. १४. 'भागा' धा. १५. 'नीच' धा. १६. 'डीकूउ' धा. १७. 'पय' धा. १८. 'नीठाइइ' धा.

(गाहा)

मा जाणिंसि खल नमीय, जोहा जपेइ अमीय-सा वयण ।
ढीकू^१ कूप विनगो, पय लगवि, सोमए जोय ॥११०॥

(चतुर्थई)

जे आकारइ ऊलखइ अ ग, भूमहि-तणउ जे वूमइ भग ।
३ते नरबोलिउ 'वूमइ इसिउ, एह वातनू' अचरिज^२ कित्तिउ^३ ॥१११॥
वीर विचारी जोइउ^४ सत्प, भमहि-भावि ऊलखिउ भूप ।
कुमर ततक्षणि विमासइ चिति, किसी कहोइ ज उत्तम रीति? ॥११२॥

(अष्टमल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली बटइ ।
दीन वयण जिम जंपइ सूरु, देसि देसि कीघह बहु पूर ॥११३॥

[सद्यवत्स पिता-वदन]

अणवोलिइ^५ ऊठिउ कू'आर, जातइ^६ 'नरवर किद्ध जुहार ।
वारु लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आघउ संचरिउ ॥११४॥
जे आपी अधिकारी हाथ, ते तिवार मुहि^७ लई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजी तुरय^८ न सहइ ताजणउ ॥११५॥

[उत्तम-जन लक्षण]

संपदि हरिख न विपदि विपाउ, ए आगइ सत्पुसि सभाउ ।
जोउ करमनू^९ कारण आम, त्यजी^{१०} राज बनि जाई राम ॥११६॥
एक दिवस प्रभि किउ पमाउ, बीजइ सूदा रुठउ राउ ।
एकि राउल नइ बीजू^{११} रान, सूदानइ मनि सह समान ॥११७॥

१. 'जे' भा २. 'भीछइ' भा. ३. 'कारण' भा. ४. दूक ११३घ. प्रति०

मां नथी. १। ४. 'जातउ' भा ५. 'लोधी' भा ६. 'किम चाहइ' भा.
७. 'रानवार मनि' ८. 'प्रति' भा. ।

સમા-સમાહિ જે બોલિત રાહ, તે સૂદત જાણીનહ જાહ ।
 એડ સુપુરિસ-નહ સંબલ સાથ, એક હિઝ' નહ' વોજત હાથ ॥૧૧૮॥
 [સદયવત્સ માતૃ-વંદના]

વલીય વીર-મનિ વસિત વિચાર, જાતડ જણણી કરૂં જુહાર ।
 જસ ઝગ્રિર વસિત દસ માસ, પાય પ્રણામૂં જણણી તાસ ॥૧૧૯॥
 (ગાતા)

જસ ઝગ્રિર વસીય યાસં, નવ માસ દિવસ અટુ અગ્ગનિયા ।
 પય પણમવિ જણણી, તામ કારિમુ નિવાસ વિદેસમ્મિ ॥૧૨૦॥
 (પ્રદયત્ત)

જઈ લાગુ જણણી-તણા પાય,
 આસીસ-વયણ ઉચ્ચરહ માહ ।
 "કહિ પુત્ત ! અજ્ઞ ચલચિત્ત કાંઈ ?"
 "અમ્હ ઝપરિ કીય' કુદિટ્ટી રાહ" ॥૧૨૧॥

[પિતા રોષ કથન]

"મહ" મારિત આસણ-તણડ મતા,
 તીણિ કજ્જિ કોપ વહુ ઘરહ તત ।
 જે પામિત કલ્લિ દીડ પસાડ,
 તે સયલ અજૂતા જુતા આડ ॥૧૨૨॥
 ૨૧૫૯.
 (રૂઠા)

આપણી આયસ રાડ-તણા પસાડ, જે મહ' કીધૂ આલ ।
 બાલ-સ્ત્રી ઝગારિવા, કુંજર સિરિ કરવાલ ॥૧૨૩॥
 એક અવલા નહ વંમણી, ગન્ધિમણિ ગજિ આરોડિ ।
 જુ દેસી ઝવેલોડ, ૫૮૦ કિત્તી-કુલિ ૨ સોડિ ॥૧૨૪॥

૧. 'કુદિટ્ટ' અ. ૨. 'ચિત્તાતણ' અ. 'મા' મા ૧ ભોટી વધારે: 'ત
 પામિત કાતિ પસાડ દાડ, તે માજ સયલ હઝુજિવાડ'.

जंघनकरवागारे

वन्देवा नइ कारणि, बहु माणस मेल्या राइ ।

जउ मनि मारण चीतवइ, तउ करि केत्यउ जाइ ? ॥१२५॥

श्री

[अन्यायो राजाज्ञापालन मुशवयता]

राउ-अन्याय जिसा सहइ, वेटा वधव बाप ।

प्रहि ऊगमि तोह पहु-तणइ, मुहि दोठइ बहु^२ पाप ॥१२६॥

एकि अस्या छइ इह-तणइ^३, साहसवन्त सुभट्ट ।

जे रणि सगमि अ गमइ, गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइ' जीवन जोखिम-ह, तूठइ^४ पयड पसाउ ।

[सदय भणइ] स्वामोपणा, तीह जूठउ जस-बाउ ॥१२८॥

जस असख सीआल सिउ^५, इक्क सरोवरि सीह ।

पीइ जल जमला 'रहीय, लोपी न सकइ लीह ॥१२९॥

एक भलेरू भोगवइ, राजा-पाहिइ^६ रज्ज ।

अधिपति-पण^७ एतइ अधिक, जे सहू मानइ मज्ज ॥१३०॥

राय-धम्मू तिहि^८ रायनइ, रूठ^९ दीसइ रज्जि ।

जे अन्याई^{१०} अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि ॥१३१॥

[माता वचन]

"देसाउरि दिन नेतला, जाइस रूठइ राइ ? ।"

[सदयवत्स वचन]

"देवि । म 'चित्तिसि दोहिलउ, वलिसु वहिलउ माई !" ॥१३२॥

१. 'वे बाधका' भा. २. 'हुई' भा. ३. 'प्रभु-तणइ' भा.
४. 'रूठइ भेषिम नारि, तूठई नही य' भा. ५. 'जमला रहिया' भा.
६. 'तिहराउ नउ' भा. ७. 'रूठइ-रायइ' भा. ८. 'अन्याय' ९. 'परिसि' भा.

भवणि भूँआले^१ पाडिऊं,^२ कहुपां कयन कुमारि ।
पूजी धर-भंडनि पटी, जाणे^३ तीव्र अमारि ॥१३३॥

[माता-दुःख-मूर्च्छा]

बेटा-केरे चोलडे, मा मनि वसिउ विमाद ।
उत्तर आपेवा^४ भणी, नवि नीसरिउ माद ॥१३४॥

चित्ति चटकउ नीसरिउ, गहवर गनइ न माइ ।
“ऊमासे नीसासडे, जाणे जीवी जाइ ” ॥१३५॥

माला-केरे बीजणे, वारिणि-^५ छंटइ वाउ ।
मइ-हृत्थिइ सुदउ करइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

“महूरति एक जि माउली-मनि मूरछा जि भण ।
“जावा दि जणणी ! भल्लुः” [बेटउ बोलेण लग्य] ॥१ ७॥

[सदयवात वचन]

“जाऊं तउं जीवी ऊगरुं, रहूँ तउं रुसइ राउ ।
कहि, ^{आपिनि} जणणी ! किम सांसहइ, ए एवडउ अन्याउ ? ॥१३८॥
“मंत्र मइलउ मती-भण, जे पइसिउ पहु-कप्ति ।
सीण माढी ! भूँ मारिवा, राउ सोधिसिइ रन्नि ॥१३९॥

(गाथा)

तं तं जपति कहा, दुअणा होइ सब्ब सारिच्छा ।
जम्मंतरे न होइ, जं नवि होइ जम्म-^{११} जम्मेहि ॥१४०॥

१. 'सोभत्यु' घा. २. 'करुउ' घ. ३. 'जीवी जाइ' घ. ४. 'पारेवा
छणउ' घ. ५. 'तं समति सुदानही, जाण जणणीअ मागे' घ. ६. 'बीजी' घा.
७. 'ममूरति जणणी जवा दिइ नहीं' घ. ८. 'इधइ' घा ९. 'कहइ
माढी' १०. 'मंत्री मयत्तु-मइ-मलिण' घा ११. 'जनुवेहि' इ. ।

तह मास भेय जिणारो, ^१ दोगुहलो हृदि-चंडण समच्छो ।
तह विहि मज्झ वलयउ, नमो खलो नहि रण-सरिच्छो ॥१४१॥

(इहा)

भदा भूप सूर्यगमह, ए मुह ^२ दुहिलां हुंति ।
जे नवि जाणइ जालवी, ते वहिला विणसंति ॥१४२॥

[माता-दत्त दाकुन-भोजन] धरणी रेरी.

कारण जाणी कुमरनू, बईसण मंडिउ मंड ।

^३ सुण-भणी सीरामणी, प्रीस्यू ^४ दही अखंड ॥१४३॥

^५ मह ^६ सुणवि धणि धवलहर, अंतरि ^७ जोषुं जाय । अत पु.

कंत करइ सीरामणी, सासू-मुह थिकं स्याम ॥१४४॥

जणणी जिमाडीय ^८ अप्पिकं, योइं विहु करि लिद्ध ।

सदयवच्छ सामलि-तणी, भली भलामण दिद्ध ॥१४५॥

[महपात्रा-गमनोत्सुका पत्नी सामली]

मा भोकलावी चलिउ, ^९ असिमर लेई हत्थि ।

पाछलि ^{१०} नेउर सर सुणी, सामलि आवइ सरिय ॥१४६॥

पय खंचवि ^{११} प्रमदा कहिउ, ^{१२} “देवि ! म धरिसि दुहिल्ल ।”

[गूढा-वचन]

“सुणि सामलि !” [सूदउ भणइ:] “आविसु यली वहिल्ल ॥१४७॥

(अडयत्त) ^{१३}

मनि अप्पणइ सुणिन मनि माणिणि ! !

क्खि पाय पयि पुलिसि ? ओ माणिणि ! !

१. 'जणणी' मूढ 'तोहटि' इ. २. 'चुह' घ. ३. 'दोषू' घा. ४. 'सूर'
घा. ५. 'उतरि चक' घ. ६. 'यमाडी' ७. 'साचयु' घा. ८. 'असिउवग'
९. 'दिण किणइ' घा. १०. 'पांचो' घा. ११. 'कहई' घ. १२. 'पान' घ.

हू गय-गामिणि ! गमिसू^१ गिरी-कदरि,
रहि राभा ! ^२अमिय-नोयणि ! मदिरि" ॥१८८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर साखि करी, वापिइ वाधिया वेह ।
सुणि सूदा ! [सामलि भणइ.] ते किम छूटइ छेह ? ॥१८९॥

[नर-विहीन नारी-प्रतिष्ठा]

नर ^३विण नारी ^४एकली, लग्गइ कोडि कलक ।
भगइ एक मइ^५ संसहिऊ, मुख-उप्पम जि मयक ॥१९०॥

नर-पासइ नारी-^६तणइ, राउल ^७जाणइ रत्न ।
रत्नि जि प्रीय-सरिसी ^८पुनइ, राउल मानइ मत्त ॥१९१॥

शशि-विण निशि, दिशि दिवस-विण, जिम नदी विण-यारि ।
^९तिम सूदा ! [सामली भणइ:] नर विण न सोहइ नारि ॥१९२॥

माइ वाप वंधव ^{१०}बहिनि, पोढी पोहर वेडि ।
^{११}मइ^{१२} मेलही जस-कज्जहि, वत ! न छइ केडि ॥१९३॥

जे ^{१३}सोहिलइ ^{१४}स्वामी^{१५} भणइ, दोहिलइ छडइ पूढि ।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे ^{१६}देव ति दुडि ॥१९४॥

स्वामी ! सुहिल्ले दोहडे, सहुको वलगइ सत्थि ।
भाई ^{१७}भी छति भामिनी, जे आदरइ ^{१८}अणत्थि ॥१९५॥

१. 'भामिसु' २. 'मृग सोयणि' भा ३. 'पापई' भा. ४. 'तणइ' भा.
५. 'सनइ' भा. ६ 'मानइ' भा. ७, 'भलू' भा. ८. 'सुणि' भा. ९
'बहू' भा. १०. 'ऊह' नरणि नइ भरहरी' भा ११. 'सुहिलइ दोहई दिइ'
दुहिल्लिइ' भा. १२. 'देवविष्व' भा. १३ 'भोछह' भा १४ 'मत्थि' भा.

[सद्यवत्स-मामलो प्रयाण]

अणवोलिउ चालिउ चतुर, नारी-^१निश्चल जाणि ।
मामनि सासू - पय नमी, साथिइ थई सुजाणि ॥१५६॥
पय लगता प्रीय जणणि, "होयो अविचल-आयु" ।
एहि विवाछिनु वयण सुणि, अमृत आरोगु माई^२ ॥१५७॥

(छद्म पद्धती)

गय-गमणी रमणी तुर गति गमति,
^३भङ्ग अनिल लग्न अ गिहि नमति ।
पय पकजि लक ^४तलि वडवडनि,
पति भत्ति चित्ति "धरि चडवडति ॥१५८॥

[मावलिगी सामलो रूप-वर्णन]

जस जघ-जूझन वर रम-यभ ।
^५पियन कि उरथल करिण कु भ ॥
कर पल्लव नव-शाखा अशोक ।
सोवन्न वज्र साम-शरीर रोक ॥१५९॥
मुख कमल अमल ससिहर-सरिच्छ ।
^६निलवटि तिलय ताडीक मच्छ ॥
कु डल कि वन्नि पायार मार ।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥
तिल फुल^७ नास-सजुत मत्त ।
^८नृटि दाडिम दत्त, अहर राग-रत्त ॥
अ जन सह खजन सरिस नेत्त ।
सीमत कुंठ किरि ^९मयर-केत्त ॥१६१॥

१ 'निश्चल मन अ. २. 'हउ' अ. ३. 'कल अनल' आ. ४. 'तिचल वडति' आ. ५. 'धरि पडवडति' अ. ६. 'प्रच्छल' आ. ७. 'कुमुम नासिवा' आ. ८. 'तुडि' आ. ९. 'मघरि' आ.

[सहाशील सामली]

‘सामलि चालती मन रगि, भूखी तिसी नवि जाणइ’ अ गि ।
मारगि नई-नीभरण-निनाद, मधुरा मोर सुहावा साद ॥१७॥
तरुप्रर-तराई ‘तनि सीली छाह, वाट-घाट विनगइ वर-वाह ।
कद ‘मूल फल अ व ‘अहार, इणि परि गम्या दिवस दसवारा ॥१७८

[निजल वन-प्रयाण]

पुहुता परवत पडली तीर, आगलि खारू रण, नही नीर ।
सीसि सुर, तलइ वेळू ताप, सार्वलिगि ‘अणि तिसा प्रलाप ॥१७९॥

[सामली-प्रश्न]

(इहा)

‘‘नाह ! कुर गा ‘रण धनि, जल विण किम जीवति ?’’ ।

[सूदा उत्तर]

‘‘नयण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयति ’ ॥१८०॥

[सामली-प्रश्न]

‘‘रत्ति न दोठु पारधि, अगि न ‘लागु वाण ।
सुणि सूदा । [सामलि भणइ] इह किम गया पराण ? ’ ॥१८१॥

[सूदा उत्तर]

‘‘‘जल थोडू सनेह घण, तरस्या वेळू जणाह ।
‘पीय’ ‘पीय’ करता सूकी गउ, मुआ दोय जणाह !’ ॥१८२॥

१. ‘चालती रनि वनि मन रगि’ अ २. ‘भगि’ अ. ३. ‘तीरि’ अ
४. ‘मूल’ आ ५. ‘दपार’ अ ६. ‘तव’ आ. ७. आ ८. ‘रत्ति न
देखू’ आ. ९. ‘जणि’ आ

[तृपातुर-सामन्ती]

(चउपई)

जिम हीमइं ^१कमलिणि कुरमाइ, जिम-वसति-परजालइ जाई ।
तिम जल विण सामलि-सरीर, ^२देखी करइ विमासण वीर ॥१८३॥

[अद्भुत प्रपा-दर्शन]

बहू दिसि ^३निरखइ नयणे जाम, पाधरि परव भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी ^४वाट विसमी न रहीय ॥१८४॥

बहिलउ थई पुहुतउ तीणि ठाहि-^५जस भय-भंग नही मन मांहि ।
ऊभी अबला दीठी द्रोठि, माइया गोला ^६भांडव-हेठि ॥१८५॥

शीतल जल सरवइं सवि ठामि, जीणि दीठइ मनि ^७भाजइ भ्राम ।

[सूदा-वचन]

^८“माई” भएवि शिर नामइ वीर, बहिलउ थई ^९नइ मागइ नीर ॥१८६॥

^{१०}“बाई ! वार म लाइ, स्त्री त्रीसी,” तीणिइं बोलइ ते बईभर हसी ।
आऊं ^{११}अन-जाण पुहुतउ आघ, जाणे किरि वउलावइ बाघ ॥१८७॥

[माता हरसिद्धि-प्रपा]

इणइ परविइं कीजय पाप, आई ^{१२}“बाई म बोलसि वाप ।
पाणी पलीय न पाइ कोइ, एह परव हरसिद्धिनी होइ” ॥१८८॥

^{१३}‘लीजइ लोही दीजइ नीर’, तिणि वातिइं ^{१४}‘विलकिलिउ वीर ।
^{१५}‘देस्युं लोही, वार म लाइ, प्रमदा त्रिसीय पाणी पाइ’ ॥१८९॥

१. ‘पोइणि’ अ. २. ‘देखी वयल विमासइ’ भा. ३. ‘नयणि
निहालइ’ भा. ४. ‘वाट विमासी’ भा. ५. ‘मंडप’ भा. ६. ‘हुठ
विव्राम’ भा. ७. ‘शरमनी नइ साहसवीर’ भा. ८. ‘नर’ अ. ९. ‘मापन
जाणइं आघ’ भा. १०. ‘माई म बोलसि’ भा. ११. ‘व्याकुलीउ’ भा.

ना॥ र वा॥ र करवउ करि भरी, सावलिंग साहसी संचरी ।
जउ 'तरंगी फीटउ निप-ताप, "बोल आपणउ पालिन बाप." ॥१६०॥

[मूदा-रक्तदान प्रयत्न]

नर 'नीसक, न वयणि विरग, अणीआलिय मुहि ऊजिउं अंग ।
मच्छरि चडिउ छेदइ नस मास, न नहइ लोही-तणउ निवास ॥१६१॥

'वामइ' करि सिर साही वेणि, जिमणइ जिम-दड ताकी तेणि ।
जउ मस्तक 'वाढइ मन-गुद्धि, तउ हसी हाथि "साहि हरसिद्धि ॥१६२॥

[प्रसन्न हरसिद्धि-वचन]

करि 'भालीनइ कारण कही: "माहसीक तू सूदउ सही ।
अ मे मइ जोइऊ ताहरू' माह, तू 'अजीह ऊजेणी-नाह ॥१६३॥
ऊजेणी माहरू अहिठाण, बीजू पाटणपुर पहिठाण ।
हू बउलावा आवी वोर', जोवा ताहरू' साहस घोर ॥१६४॥
हू जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवच्छित 'रिद्धि ।
ताहरा 'पवरिस नही कोइ पार तू' सूर सविहू-शृ गार" ॥१६५॥

[सद्यवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ सग्रामि ठामि 'बहु जइत्त, 'परमेसर तू पामे पहित्त ।
प्रभु ऊठीनइ लागउ पाइ, मया किह्वारइ' म 'टालिसि माई !" ॥१६६॥

[वर-प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, 'सार्थिइ काली कउडी खरी ।
ए वि आप्या 'वेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ॥१६७॥

१ 'तिति प्रपानु भागु ताप' २ 'नीसवपण नइ नव रग, अणी भासी मुहि उरइ.' अ. ३. 'वाम करिइ करि' भा. ४ 'छेदइ मनसिद्धि' भा. ५. 'साहिउ' भा. ६. 'सारी नइ' भा. ७ 'प्रमंग' अ. ८ 'सिद्धि' भा. ९. 'साहस न एहू' भा. १०. 'बहु' भा. ११. 'परमेसर तू पामे' भा. १२. 'मेल्हति' भा. १३. 'बोबो आपो' भा. १.

‘जोगिणी वनी, टली ते परब, हुई वीर-मनि विमणी वरब]
 जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला शूठी हरसिद्धि ॥१६८॥
 रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ ।

[पति-दुःख वारण सामलो-समावाचना]

“करुंअ वीनती बे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-वधण छोडि ॥१६९॥

तइं ‘मू’ पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
 मइं आविइं गुण होसिइ एह, आगइ दूख, नइ सूकिसि देह ॥२००॥

[पीहरमा मूरुवा विनति]

‘प’ पाउ करी मू ‘पीहरि आवि, मू मेलही नइ स्वामि ! सिधावि ।
 जाता कोइ न करइ ‘पुचार, बली सव्हारइ’ करयो सार ॥२०१॥

[अवलाए चीतविउ उपाउ], तिहा ‘आव्या तउ राखिसिइ राउ ।
 दाखिन पाडी देसइ देस, ‘रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस’ ॥२०२॥

वनिता-तणा वयण ‘नय-वाच, सद्यवच्छि ते मान्यो साच ।
 ‘‘ ‘मेलहिमु लेई पाद्रि पहिठाणि, जई ‘ऊलगि सु भवरि अहिठाणि २०३
 ऊलग लेई नइ आणू करु, ता लग स्त्रीइ-स्यू कंथउ फिह’ ? ।
 जिहाँ उलगस्यू लहिसिउं तिहाँ लाख,

प्रमदा पीहरि न ‘मेलहु पाख’ ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरनू राज, ‘चितइ कत अनेहं काज ।
 ‘मनि विहु जणा बोल जूजूउ’, ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

लोके २५

१ ‘जोगिणि तणी वुनी जु’ अ. २. ‘तूठी’ आ. ३. ‘मू’ अ. ४. ‘मया’ अ.
 ५. ‘मभ’ आ. ६. ‘ऊचार, बली वहिली’ अ. ७. ‘गया’ आ. ८. ‘जिम पण’
 अ. ९. ‘मनि’ आ. १०. ‘लेई मूकिस पाटण’ आ ११. ‘उलय्यो’ अ.
 १२. ‘मूकिस’ अ. १३. ‘कंतइ मनि’ अ. ।

नारि वारि करवउ करि भरी, सावलिंगि साहसी संचरी ।
जउ 'तरणी फीठउ त्रि-ताप, "बोल आपणउ पालिन बाप." ॥ १६०

[भूदा-रवतदान प्रयत्न]

नर 'नीसक, न वयणि विरग, अणीआलिय मुहि ऊजिउं अंग ।
मच्छरि चडिउ छेदइ नस मास, न लहइ लोही-तणउ निवास ॥ १६१
'वामइ करि सिर साही बेणि, जिमणइ जिम-दड ताकी तेणि ।
जउ मस्तक 'बाढइ मन-गुडि, तउ हसी हाथि "साहि हरसिद्धि ॥ १६२

[प्रसन्न हरसिद्धि-वचन]

करि 'भालीनइ कारण कही: "माहसीक तू सूदउ सही ।
मे भइ जोइऊ ताहरूं माह, तूं 'अजीह ऊजेणी-नाह ॥ १६३॥
ऊजेणी माहरू अहिठाण, बीजू पाटणपुर पहिठाण ।
हू वउलावा आबी वोर, जोवा ताहरूं साहस धोर ॥ १६४॥
हू जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनबंछित 'रिद्धि ।
ताहरा 'पवरिस नही कोइ पार तूं सूरु सविहू-श्रु गार" ॥ १६५

[सद्यवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ सग्रामि ठामि 'बहु जइत्त, 'परमेसर तू पामे पहित ।
प्रभु कठीनइ लागउ पाइ, मया किह्वारइ म 'टालिसि माई !" ॥ १६६

[वर-प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, 'साथिइ काली कउडी खरी ।
ए बि आप्यां 'वेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ॥ १६७॥

१ 'तिति त्रपानु मायु ताप' २. 'नीसकपण नइ नव रंग, अणी आसी मुहि उरइ.' अ. ३. 'वाम करिइ करि' आ. ४ 'छेदइ मनसिद्धि' आ. ५. 'साहिउ' आ. ६. 'खरी नइ' आ. ७ 'प्रभंग' अ. ८ 'सिद्धि' आ. ९. 'साहस न सहै' आ. १०. 'बहु' आ. ११. 'परमेसर तू पामे' आ. १२. 'मेल्हति' आ. १३. 'बीजी आपी' आ. १

‘जोगिणी वनी, टली ते परब, हुई वीर-मनि विमणी वरव]
 जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला तूठी हरसिद्धि ॥१६८॥
 रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ ।

[पति-दुःख वारण समलो क्षमावाचना]

“करुंअ वीनती वे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-वधण छोडि ॥१६९॥

तइ ‘मू’ पाणो पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
 मइ आविइ गुण होसिइ एह, आगइ दूख, नइ सूकिसि देह ॥२००॥

[पीहरमां मूकवा विनति]

‘प’ ताउ करी मू ‘पीहरि आवि, मू’ मेलही नइ स्वामि ! सिधावि ।
 जाता कोइ न करइ ‘पुचार, वली सव्हारइ’ करयो सार ॥२०१॥

[अगलाए चीतविउ उपाउ], तिहा ‘आव्या तउ राखिसिइ राउ ।
 दाखिन पाडो देसइ देम, ‘रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस’ ॥२०२॥

वनिता-तरणा वयण ‘नय-वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच ।

‘‘ ‘मेल्हिसु लेई पाट्रि पहिठाणि, जई’ ‘ऊलगि सु अवरि अहिठाणि २०३

ऊनग लेई नइ आणू करु, ता लग स्त्रीइ-सू कैयउ फिरु’ ? ।
 जिहां उलगस्युं लहिसिउ’ तिहां लाख,

प्रमदा-पीहरि न ‘मेल्हउ पाख’ ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरनू’ राज, ‘चितइ कत अनेरुं काज ।

‘मनि विहु जणा बोल जूजूउ’, ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

लोको पि

१ ‘जोगिणि तणी वुनी बु’ अ. २. ‘तूठी’ भा ३. ‘मू’ अ. ४. ‘मया’ अ.
 ५. ‘मऊ’ भा. ६. ‘ऊचार, वली बहिली’ भा ७. ‘गया’ भा. ८. ‘जिम पण’
 अ. ९. ‘मनि’ भा. १०. ‘लेई मूकिस पाटण’ भा ११. ‘उलगयोठ’ अ.
 १२. ‘मूकिस’ अ. १३. ‘ऊडह मनि’ अ. ।

करडं वात वे चालइ वाट, छाँडिउं रणन नइ छाँडया घाट ।
 आगलि ऊमटिउं आराम, जिहा छइ सकल सदाशिव-ठाम ॥२०॥
जिणि वनि 'चारहु मास वसत, दीसइ कोइ न 'वामइ अन्त ।
नही पापीया-जीव प्रनेस, इसी 'अछइ मरज्याद महेस ॥२०॥
 मोर मधुर-मरि करइ निनाद, कोइलि-^४तणा सोहावा साद ।
 सुसर गवद सूडा सालही, भमइ^५ भमर 'माल्हइ मालही ॥२०॥
 'सुरहा सीत सू आला वाउ, जे लागा तनि टालइ ताउ ।
 सबे सदा-फल रूडा रूप, 'जेहनइ दरसणि भाजइ भूख ॥२०॥
 जिणि वनि योगी-^६यति विथाम, जिणि दीठइ 'मनि भाजइ आम
 'पुहुतउ वीर तेह वन-माहि, हुउ हरिख बिहु मन-माहि ॥२१॥

[वन-प्री वर्णन]

(छंद पदही)

तिहा दिहु तरुअर अति 'कमाल ।

जावित्तीय जाईफल तज तमाल ॥

वनि अगर तगर चदन 'किवार ।

ककोल कलब घनसार सार ॥२१॥

कदली दल कोमल फन 'अलब ।

सहकार फणस फोफलि 'बुल ब ॥

तरुअर सिरि गुण गहगही गेल्लि ।

नवरेख

नवरंग निरूपम 'नाय-बेल्लि ॥२१॥

१. 'चारइ' भा. २. 'चारवीइ' भा. ३. 'मायादी छइ' भा. ४. 'नादि' भा.
 ५. 'मालइ ते मही' भा. ६. 'सरही' भा. ७. 'जिणि दीठइ मनि' भा. ८. 'तणा'
 भा. ९. 'मुनि' भा. १०. 'पुहुता ते बेहु' भा. ११. 'यति कमाल' भा.
 १२. 'तिवार' भा. १३. 'गलंब' भा. १४. 'कुलंब' भा. १५. 'नाय बेल्लि' भा ।

‘महमहइ मलय मालय महल्ल ।
 सेवती जती बकुल वेल्ल ॥
 कणवीर कुसुम श्रोखंड सार ।
 रयचंपु २पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्टदल कमल-वृंद ।
 कृष्णागर वालु करल कंद ॥
 वंकडोय कुलीय पयडोय पलास ।
 ३चिहु पखि वन पाखलि ति वांस ॥२१४॥

तिहि-मग्नि सजल सरवर ४सुरंग ।
 उत्तुंग पालि पूरीय तरंग ॥
 तिहां त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
 रस-५रुद्ध हंस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइ तीरि बहु वतक कक्क ।
 चिहुँ पखे ६कुरलइ चक्कक्क ॥
 नवकुंड अमीय उप्पम ति नीर ।
 शीतल सुअन्ध गहिरुं गंभीर ॥२१६॥

[कैलासपति-मंदिर वर्णन]

७तस अम्मलि उमयापति-अवास ।
 कैलास छंडि जिणि कीधु वास ॥ ✓
 भड निवीड तुंग तोरण पयार । ४यि परि
 अपुव्व पुप्प दीसइ दूआर ॥२१७॥ ६५६.

१. 'महमहन्ति अति मलया अमाल, फूल सेवत्री जाती बिकल वाल'
 अ. २. 'पाठलनु नही' भा. ३. 'वन पाखलि विहुपखि दाब-निवास' भा.
 ४. 'मङ्ग' भा. ५. 'लीय' भा. ६. 'कुरलइ' भा. ७. 'तिहि' भा. ।

धिर पथरि मंडीय थोर थंभ ।

पूतलीय-^१रूप विभ्रम कि रंभ ॥

मंडपि गववस चिहुँ पविस चार ।

मणिमइ सजाका सिखर सार ॥२१८॥

कणयमइ दड ऊडइ सहित्त । .६५५५२

लहलहइ धवल धज वड विचित्त ॥

^३आसन्नउ आगलि सोहइ सड ।

प्रति६।२ पढिआर ^४नदी चडो प्रचड ॥२१९॥

[मूढा-सामली मन्दिर-प्रवेश]

(चउपई)

निर्मल नीरि पखाल्या पाउ, 'मानिनी स्मू' मन-रगिइ' ^१राउ ।

जाँ जाइ जगदीसर भणी, ^२देखी मडपि महिला घणी ॥२२०॥

[हरगौरी-प्रणाम]

बाहरि-थिकां वे जोडइ हाथ, प्रणमिउ प्रभु जडधर जगनाथ ।

गरूउ गजर गभारा-माँहि, अवला एक तिहाँ ईस आराहि ॥२२१॥

बारू वन ते पेखी मनि, आणदिउ ऊजेणी-धणी ।

पहिरी धोती सबल साँचरिउ, राणी-सरसु रा नोसरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउ' ^३सूदा-पाहि, वनिता-वृंद ^४महावन माँहि ।

प्रीय ! प्रासाद-तरणइ जालीइ, ^५'ए कारण निरतिइ निहालीइ ॥२२३॥

१. 'धनोपम भ्रमति' आ. २. 'कनक मचिइ कलस दंड' आ. ३. 'आवास'
आ. ४. 'तन सोहइ' आ. ५. 'प्रीय मानिनिस्मू' आ. ६. 'जाई' प्र. ७. 'पेखइ'
आ. ८. 'प्री पासि' आ. ९. 'हृदयांगी' प्र १०. 'कुतिय निततिइ' आ. ।

[राजकन्या लीलावती दर्शन]

(गाथा)

शिव जोय समे उपवासत्त, ये मज्झि रयणि सर-मज्जे ।
जल-केलि करण मुक्क, नीरस तरुइ, नील 'पगुरण ॥२२४॥

तह पगुरण-प्रभावे, पल्लवियउ मुक्क तरुअरो तिवारो ।
तिणि पल्लवेण पुज्जीय शिव, वच्छति सदय भत्तारो ॥२२५॥

अवत्ययाय बालावत्य, गहिऊण मुक्क वृक्षाण ।
पिक्खेवि रुवराई, पणमिसु सुपल्लवा गौरो ॥२२६॥

[सदय-पति-प्राप्त्यर्थं धोडसोपचार पूजन]

(चउपई)

गलते 'कृतिका किद्ध सनान, धवली घोति-तणू परिधान ।
निर्मल नीरिइ भरवि भू गार, ढालइ ईश अखडित धार ॥२२७॥
कापडि-स्यूं आलू'छइ अ ग, बावनि चदानि चरचइ चग ।
बहु बिल-पत्र कुसुम करि लेउ, रचइ विविध-परि 'पूजा देउ ॥२२८॥
कस्तूरी-सितउ चदन घनसार, धूप अगर-तणउ उपचार ।
नव नैवेद्य 'अनइ आरती, करइ कन-कारणि आरती ॥२२९॥
सवे समी रुडो रुद्राख, जपमाली स्यूं जपइ सु लाल ।
नीम न चूकइ निश्चउ घणउ, 'लय अखंड लीलावई-तणउ ॥२३०॥

[लीलावती-सखीमंडल-कृत गीत-नृत्य]

आपो वापिइ 'सोहली सही, सवे समाणी वय सोलही ।
तीणि अवसरि ते माडइ 'रंग, बाजइ गुहिरा मधुर मृदंग ॥२३१॥

१ टूक २२४ थी २२६ 'मा'. मा नथी. २. 'करते' मा. ३. 'तेउ' मा.
४. 'परत्ते' मा. ५. 'करइ' मा. ६. 'लिध सड' मा. ७. 'साधिइ सोलही
वइ समाणी सवे.' मा. ८ 'बंग' मा.

भूंगल भेरि तिवलि नइं ताल, वाजइ वंभ १किरडि कमान ।
 रूपक राग रगि आनवइ, चतुर-तरणा ते चित्त चालवइ ॥२३२॥
 हस्तक हाव भाव बहु धरइ, नव नव पाडि पागनि करइ ।
 आपापणी कला २भूटवइ, जे तपि सरा तेहनइ सूटवइ ॥२३३॥
 तास भगति आणदिउ ईश, वछिन-दायक जे जगदीश ।
 तीणइ काई कीउ उताउ, जिणइ आणिउ ऊजेणी राउ ॥२३४॥

[नूदा-प्रति सावलिगी-प्रश्न]

सावलिगि पूछइ पति-रेसि, नुय पृहुती प्रासाद-प्रवेसि ।
 जई प्रभु कारणि करइ प्रणाम, अवला ३मवि आवरजी ताम ॥२३५॥
 स्त्री एकली अनोपम रूप, ए काइ शिव-नरू सरूप ? ।
 दीसइ नही सखीय ४ न साथ, ते कारण जा गइ जगनाथ ॥२३६॥
 थइ को नागलोकनी नारि ?, कइ को रुडी राजकू आरि ? ।
 कइ कहि अमरलोकनी एह ?, सवे मुहामणि पडिउ मंदेह ॥२३७॥

[सावलिगी-प्रति सीतावती-मन्त्री-प्रश्न]

तीह-मांहि ५साथिइ थई एक, जे ६बूझइ योलिया विवेक ।
 पूछी वात विनय-मिउं तेणि, "कहु बहिनि" दिसि आव्या केणि ?" ॥२३८॥

[सावलिगी-उत्तर]

"आव्या दिसि ऊजेणी-तरणी" : राजकुमरि सा वाणी सुणी ।

[सीतावती-ध्यानभंग]

सखेपइ शिव करी प्रणाम, लीलावई लय छाडिउ ताम ॥२३९॥

१. 'परिडि' भा. २. 'प्रगटवइ' भा. ३. 'माशुबी' भा. ४. 'तम'
 भा. ५. 'ऊमी' भा. ६. 'ऊवसि' भा.

[सावलिगो-प्रश्न]

सावलिगि ते संभली, पूछइ ^१वयण विसेस ।

"तइं किहि दिट्ठउ, किहि ^२मुण्डउ, सही ! ए सदय नरेस ?" ॥२४७॥

[सीजावती-वचन]

"रायंगणि राजा-तणइ, बोलइं बंदिण-बुंद ।

धीर-भणो ते वन्नवइ, सही ! ए सदय नरिंद ॥२४८॥

धीर ^३माहारउ माउन्नउ, तात वदीनउ वीर ।

वीर भणी सुदउ वरू, कइ दवि दहूं शरीर ! ॥२४९॥

जिम जिम पाणि-ग्रहण-नउ, अवसर जाइ अजुत्त ।

तिम तिम माय-साइ-^४नइ, चित्ता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।

बारू माणस मोकनी, बईठा बेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्लारइं न आविसिइ, परणोवा परदेसि ।

तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भ्रमी भला, मागी रह्या महीस ।

माय बाप सहू वृभक्ती, सही ए सही न रीस^५ ॥२५३॥

सीणि कारणि तप आदरिउ, मइं महेसर-पासि ।

पूरो ईस आसि अनेकनी, ^६परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमांहि अजुत्त ।

आवइ कोइ किह्लार ते, जे हइ ^७पुण्य-पवित्त ॥२५५॥"

१. 'वली' भा. २. 'संमत्यु' भा ३. 'ग्रहण' भा. ४. 'तनि' भा.
'म' भा टंक २४३ नथी. ५. 'परता छठइ' भा. ७. 'पुनि' भा.

[सावर्लिगीं विमासण]

सावर्लिगि ते सभली, चित्ति चमकइ लग्य ।

‘मूदि जि सउण-विचार कीय, ते भूँ परतखि पुग्य ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावतीइ कारण कह्यो, सावर्लिगि ते संभलि रहीय ।

भ्रम चीतवइ अदीठइ भूप, भूदइं सहू संभलिउ सरूप ॥२५७॥

जाणी मूत्र तणूँ जगदीस, सावर्लिगि तउ धूणिउं सीस ।

हर साहभूँ जोईनइ हसो, लीलावती-नइं विमासणूँ वसो ॥२५८॥

[लीलावती-प्रश्न]

“गोरी ! ^{३५८-}गुज्ज कहंतां कांइ, मायू धूणी मरक्यां कांइ ? ।’

साचउं कहउं, सदाशिव आण, नहीतरि आहा आव्यां अप्रमाण ॥२५९॥

सूदइं सपथ दीजतउ सुणिउ, राजा-हूदइं बोल रुणभुणिउ ।

[सामली-विमासण]

सामली बली विमासण पडी, बहितां वाट सउकि सांपडी ! ॥२६०॥

एक अण-कहइं तउ एहनूँ पाप, बीजउ बली सदाशिव क्षाप ।

रवि ३ऊगइ जु बिहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परभाति ॥२६१॥

आगइ एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि ।

भा दीजी पग-वधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामिउ रानि ॥२६२॥

सावर्लिगि अति उक्तावली, अण-बोलतां हुई आकुली ।

लीलावतीइ ३मांडिउ लाग, ए मइं कांइ पाडिउ पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

“बाई ! कां ३अण-बोल्यां रइउ, कांई जाणउ तउ कारण कहउ ।”

१. ‘मूदइ’ सकल विचारिया, घ. २. ‘ऊगमणि विहाणी’ घ.

३. ‘पाम्यु’ घा. ४. ‘म म रइउ ? जु जाणइ’, घा.

[सावलिगी-वचन]

“अवला जे तइं आराधित ईस, ते जाणे तूठउ जगदीश ॥२६४॥

वनी म काई पूछिसि पछइ, वहिनि ! बाहिरि ते ऊभउ अछइ ” ।

१सावलिगी-सुवचन संभली, क्षामोदरी सवे खलभनी ॥२६५॥

[लीलावती-सदयवत्स-दशन]

लीलो-गई लीलावई नारि, आवी ऊभी देव-दुआरि ।

नय नयणइ नर निरखइ जाम, २किरि मूरतिमय ऊभउ काम ॥२६६॥

(गाहा)

३लीलावय सारिच्छा, समवडि लीलस्स रायहंमस्स ।

उअरि वेणी-दडो, पुट्टिवि सोहइ ए हारो ॥२६७॥

४(दूहा)

“लज्जा संकटि दिट्ठ, प्रीय बोल सवणु न जाइ ।

लिउ रे नयणा रिट्ठ, छउ, जा नवि अंतरि याइ ” ॥२६८॥

(चउपई)

बलिउ सुदउ सहू सांभली, सावलिगी २साथि जई मिली ।

[सुदा प्रति सावलिगी-वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूपः “स्वामी ! तुम्हि ३सांभलउ स्वरूप ॥२६९॥

• ईश-सूत्र अवधारित आम, किहां ऊजेणी ? किहां आराम ? ।

कीधी वाड हूउ कूपसाउ, ते जाणि जगदीश-पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुगत्तुं नही कंत !, आ वनितानउ सुणी वृत्तंत ।

एक हरया, वीजउ हर-लोप, कहितां वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

१. ‘लीला वतीइ’ भा. २. ‘जाण मूरित वंतुकाम’ भा. ३. ‘अहिली-
वयण समरि सा, समवडि लीलंमि राय हंसस्स’ भा. ४. इंक २६८
‘य’ मा नयी. ५. ‘सीकिइ’ म. ६. ‘सांभलु’ भा.

सउकि (सपत्नी) विवरण]

मादि-^१सकति कीधउ आग्रहुउ, स्वामी ! मउकि किसी हुइ? कहउ ।
माखण-तणी महेसरि घडी, तीणइ तउ उमया वीर ^२बीगटी ॥२७२

वेडि माहि अधिपति, अधभाग, वेटा वधव लखमी लाग ।

^३सविहू-माहिइ सपराणी सउकि, ^४वर वहिचवा चाली चउकि ॥२७३

प्रामी ! कहिउं महारू मानि, सिरजी सउकि "मिली भू रानि ।

साहरी ^५काई म करउ लाज, अण परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४

देनि एकइ आगमि छ मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि ।

कुमरि-तणू कारण जाणोइ, ^६भति आग्रहु माडी आशीइ" ॥२७५॥

[धारापति(लीलावती-विता) बिता]

राणी-वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी प्रीछवण उपाउ ।

सदयवच्छ नवि "जाणइ शुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि ॥२७६॥

धारातयारि-राउ धरवीर, सभा बईठउ साहसधीर ।

सुधि पूछइ कुमार-नइ काजि: 'कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ?' ॥२७७

लीलावतीइ लीधइ नीम, छमासि छइ थोडी सीम ।

"आणइ भवि अनेरउ ^७वरू", कइ मूदउ कइ ^८"जमहर करू" ॥२७८

फून धतूरा धरणि पडइ, कइ महेमर मस्तकि चडइ ।

नीजी गति नवि तीहु लहीइ": तिम कुमरीइ हठ लीधउ हईइ ॥२७९

[बडीजन-कथित सदयवत्स-समाचार]

राजा वयण सुणी त्रिणि वार, बदिण एक करइ ^९"जइवार ।

"हू ऊजेणी आविउ आज, सूदा सुधि साभलि महाराज ! ॥ ८०॥

१. 'शक्ति लीपु' या. २. 'बीषटी' या. ३. 'मिहू' या. ४. 'वर
विहंवावइ ताडीउकि' या. ५. 'बली' या. ६. 'काई करसि' ? या.

७. 'माग्रह करीनइ आहा' या. ८. 'उधि' या. ९. 'वरइ' या. १०.
'साहस वरू' या. ११. 'करवार' या.

ऊजेणी 'अमरापुरी, अन्तर नही नरिंद ।

ऊजेणी पहुवच्छ 'पहु, अमरावतीइ' इंद ॥ २८१॥

इन्द्र-तरणा आसण जिसिउ, मयमत्तउ मच्छराल ।

'सूदइ सोइ हत्थी हणिउ, 'कज्जिहि वंमणि-वाल ॥ २८२॥

ते पेखवि 'हरस्यु' हईइ, कीयउ पुत्त-पमाउ ।

मुहत्तइ मत जि 'उद्दिंसिउ, तिणि रोसाविउ राउ ॥ २८३॥

सुइ ति न रहिउ सासही, राजा रोस बहुत्त ।

ऊजेणी 'ऊजड करो, वीर विदेसि पहुत्त ॥ २८४॥

खडकि चुहट्टइ जूवटइ, हूंतु वीर जूम्रार ।

नित नित मग्गणि मग्गीइ, 'जिहि मुं'हि नही नक्कार ॥ २८५॥

अम्ह सरीखा 'अनेकि नर-पाखलि पंखी बहुत्त ।

'ते सीदाता सद्य-विण, ऊडी गया अनंत ! ॥ २८६॥

[सद्यवत्स-गुणप्रसंघा]

११ (छप्पय)

राय 'कलां नल भूप, रूपि कदप्प-सरिच्छो ।

'वाचि जुधिष्ठिर राउ, साचि गागेय परिच्छो ॥ ११८॥

प्राणि जिसिउ भड भीम, माणि बीजु दुज्जोहरा ।

दानि कल्ल अवतर्यउ, बाणि अज्जुण 'वइरोहरा ॥

१. 'अमरावती' घ. २. 'छइ' घा. ३. 'सूदि य जि' घ. ४. 'वंमणि-
केरी बात' घ. ५. 'पुहुवच्छ पहु' घ. ६. 'माठविउ' घा. ७. 'उज्जेम' घ.
८. 'नहु जपइ' घ. ९. 'तीणइ नयरि' घा. १०. 'सीदाइ' घा. ११. 'सटपद'
घ. १२. 'कुचागम भूप' घा. १३. 'वचनि' घा. १४. 'रिड कीरति' घ.

१'सित्ति साहसि गुयसि, लीला भंगि अणुपमो ।

इत्तिय गुणि पहुवच्छ-२सूनु, ३'न कोइ सुभट सूदा समो" ॥२८७

[धायपति-प्रश्न]

(दूहा)

*रा पूछइ : "सुणि बंदीयण ! कुण्हे दिसि कुमर पहुत्त ?" ।

[बंदीजन वचन.]

५'उत्तर ऊजेणी- यिको, गिउ सामलि-संजुत्त" ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चितइ, भूप चितइ, निय मन-माहि : ।

"ए ६काई कारण शिव-तणू, सूदा प्रति जे राउ छठउ ।

७'कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई ८'जि तूठउ ।

वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक-सिउं राउ ।

उच्छव ईसर-भंगणइ, संपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चठवई)

९'लीला सूदउ सामलि संचरइ, वनिता सवे विमासण करइ ।

१०'कां जाई ? आठवई उपाउ, तां राणी-सिउं ११'पहुतउ राजा ॥२९०॥

कोलाहल वीधउ कामिणी, बिइ थइ वाहगि वदामणी : ।

[सवयवरत-वचामणी]

अभिनिर्देश

"भवसरि भलइं पवार्यां आज, कूंअरि-तण्णां हिव सरियां काज ॥२९१॥

१. 'कीरति साहस सिद्धि, जस लीला वयण' भा. २. 'तणु' भा.
३. 'कोइतेहं सुभट सूदा समउ' भा. ४. 'पहु पूछइ; कहि' भा. ५. 'का
वालिउ ऊजेणी ! कय जु' भा. ६. 'काईय परम तणउ सत्त, पुत्त पुह-
वच्छ हसइ' भा. ७. 'कामिक तिगजु' भा. ८. 'सावइ तुठो' भा. ९. 'ता' भा.
१०. 'जां काई' भा. ११. 'प्राविउ' भा.

जस 'काजि तप तप्पउ छमास, ते परमेसरि 'पूरो घास ।
 'स्वामी ! दिमि आणी अवधारि, 'आ सूदउ नइ सामलि नारि२१।

[धारापनि प्रागमन]

माहेसर प्रति करी प्रणाम, रा चंचलि चडी घमक्कयउ ताम ।
 पूठउ-पिकउ 'परि-पिउ सहू-पूलिउ, 'सूदानइ जई सीकिइ मि०यउ२२।

[बारहट्ट-वचन]

बारहट्ट बोलाविउ वीर : "माभलि सूदा ! साहसघोर !।
 ऊभउ रहउ, अवधारि सरूप, तूं भेटेवा भावइ छइ भूप" ॥२१४॥
 बंदिण तउ बोलाविउ जाम, पय खचोनइ 'रहिउ ताम ।
 सा राजा छांडी रेवंत, साई 'दीघू सामनि-कत ॥२१५॥

[लीलावती-पिता स्नेह-वचन]

सार्वनिनि नइ नामइ सीस, 'पुत्रि'-भणी 'बोलावइ पृहवीम ।
 'माई महासति जे आगिली, ते तूं भ भगतिइ 'दीसइ भली" ॥२१६॥
 बारू धूम एकनी छांह, 'राउ सूडु ये बईठा तांह ।
 ऊजेणी-घघिपतिनइ 'आधि, सदय-'भेटिइ' हुई समाधि ॥२१७॥

[सदयवत्स विधित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वसुधा विल्यात, सूदा नामि 'अछइ' सइ' सात ।
 अण-भोजखिइ' म आदर करउ, वात विमात्ती बांहइ घरउ ॥२१८॥
 ते किम 'इम एकलउ भमइ ?, ते किम पालउ पंथि अयगमइ ? ।
 तूं धारा-नमरी-नायक, हुं पाघरउ अछउ' पायक ! " ॥२१९॥

१. 'कामिनी जि तप नप्पु' घा. २. 'पूगो' घा. ३. 'मा' घा. ४. 'बहु
 परि ध्यु पछइ' घा. ५. 'सूदा-केडि जइनइ मिलइ' ६. 'जोइ' घा. ७. 'लीघु'
 घा. ८. 'ते दिइ घासीस' घा. ९. 'तई तोठइ भावइ' घा. १०. 'राजा
 बेहू० प्र.११. 'दीठइ' घा. १२. 'वसइ' घा. १३. 'एकतां धनमाहि' घा.

[बारहट्ट-प्रवेश । चरित्र-निवेदन]

अथ

(दूहा)

बारहट्टि 'इण्डि' भवसरि, बंदिण बोलिउ इम्म ।

'सूद' १ति सहू अम्हि सभनिउ, तूँ अ राउ छठउ जिम

ऊजेणी-अधिपति तूँ, आ घारा-३धरवीर ।

मेलउ माहेसरि कीउ, छडि विमासण वीर ! ॥३०॥

बदिणि-केरइ बोलडे, बसिउ सूद संकेत ।

परण्या पाखइ न छटोइ, ए सहूइ हर-हेत ! ॥३०२॥

४मिउण समत्थि म भवगणइ, सूदइ सा महिलाउ ।

सावलिमि साधिइ सती, ५तेह मुहु रवणइ राउ ॥३०॥

[लीलावती गुण-वर्णन]

(गाय)

नर नारि सार परिवारे, पवललि ६मिलिय नरिद नर खंते ।

लीलावई लावण्य-वयणि, न बुली बोलीय बलिहार मग्गम्मि ॥३०४॥

अह लीलावई नामं, लीला-गई रायहंसरस ।

उपरि वेणी पडिबिबं, पुट्टीय पडिबिबिउ हारो ॥३०५॥

७शिव जोम समे उपवासत्त, ये मज्झि-रयणि सर-मज्जे ।

जल-केलि-करणं मुक्कं, ८नीरस तरुइ नील पंगुरण ॥३०६॥ उत्तरीय

तह पंगुरण-प्रभावे पल्लवियउ, सुवक तरुअर तिवारो ।

तिणि ९पल्लवेण पुज्जिय शिव, वंच्छति सदय भत्तारो ॥३०७॥

१. 'तेणइ' भा. २. 'तुम्हें सहू सामनिउ' भा. ३. 'नयरो धरि' भा.
 ४. 'सूप्रण सवे मइ भवगण, सूहु मछइ सामइ' भा. ५. 'तेणइ' भा.
 ६. 'तेह मरा जेहिमि' भा. ७. 'शिव-योग उपवास समइ, पय-मज्झि' भा.
 ८. 'नी सस्य तरवि' भा. ९. तिणि पूजिसि, शिव-कठिणू' भा.

‘मउडद्वय मंडनीया, मृपाला मवज मूर मामंता ।
 ते भवगणिय आणग्रा, नीलावय लग्न लग्न सुदे ॥३०८॥
 भविपति अधिकारी मावि, सेणाद्विव बारहट्ट बहु वंमो ।
 पाणो पाणिग्रहण मिद्ध, सरिम सुदयवन्द्यम्स ॥३०९॥

[सद्यवत्ता सीतावती-पाणिग्रहण]

(वस्तु)

राउ भरिज्जउ, राउ रिज्जउ, सिद्ध स हि कज्ज ।
 ‘मयल लोरु आणदीउ, वंदीजण सुयम तस वोचइ’ ।
 विण वेद-भुणि ऊचरइ, हसगमणि हरखति बोलइ ।
 ताढीय चउरा चंग लिहि, बिहु राजा रहि आवासि ।
 प्रघ-दल-सिउ अधिकारीउ, ‘मूंकित मूदा पासि ॥३१०॥
 नाम चलिउ, ताम चलिउ, मिलवि मनरणि ।
 ‘राजासिउ’ राणो सवे, कुमरि-भाई घरवीर-घरणि ।
 नीलावई-घर जोइवा, सावलिगि-सिउ भेट-करणि ॥
 तदयवच्छि प्रमदा सविहू, भीधउ एक प्रणाम ।
 साई देई सामलि-तणा, ‘बोलइ बहु गुण-ग्राम ॥३११॥
 [सामनो व्य-वणं]

(पदपद)

आगइ अहर रम-रत, अनइ अहर विलासीय ।
 आगइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहि वलासीय ॥

१. ‘मडा वा’ घा. २. ‘भवणीय भागव नपी’ घा. ३. ‘मा मा
 वा शब्द नपी. ४. ‘रुठउ सिद्धि सह’ घा. ५. ‘दिइ महेसति मणिउ, कंत
 सीतायतीय लघु ततसि सीता दिणि तुरित लग्न सेउ दिल करण
 दउ’ घा. ६. ‘भेदित’ ७. ‘वसीय’ घा. ८. ‘राजा एसिइ’ घा. ९. ‘ने
 लइ गुणग्राम’ घा.

आगइ थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
 आगइ काम गायम धारि, अनइ भंभरि भूमकारीय ॥
 आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वंस तन सि ऊजली ।
 पढुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि, इसी नारि सूदा मिली ॥३१२॥

[सार्वलिंगा-सत्कार]

(चउपई)

आसणि बईसणि आदर बहु, १सार्वलिंगि संतोसिउ सहू ।
 बीडा आपइ आपण हाथि, जे धणि आवी धारणि साथि ॥३१३॥
 सार्वलिंगि सनमानी राइ, राणी सवि रलीयाइति थार्ई । २आनंति,
 ऊठी अचला आयस मागि, संतोपी सामलि सोहागि ॥३१४॥
 चाली चंद्रवदनि चमकंत, ३किरि चंदर्प लीलावई कंत ।
 राजकुमारि रूपिइ रति-जिसी, सार्वलिंगि सविहू-मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न-निमित्त मिष्टान्न भोजन]

घडी कडाहि गमि बहु गहु, आदर-सिउं आरोगिउं सहू ।
 लगनवार लीलावई-रेसि, सदयवत्स वर भरीइ मेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग : घउम घनासी)

आसण-तणउ अणाविउ ए ।
 नरवरिइ तरल तुरंग, ए सखी ! ।
 साहण-मति पद्माणविउ ए, ४पलाणि पवंग ।
 तीणइ वरराउ घडाविउ ए ॥३१७॥

१. 'द्व' क ३१२ प्रमा' नथी, २. 'लीलावई' प्रमा. ३. 'राम त्रिस्तु' प्रमा.
 ४. 'मति मानहर' प्रमा.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (छंद चामर, त्रिताल)

चंडति धेवि जे जडंति, ते तुरंग आसीउ ।
 ॐ जे "सुद्ध सित्त सानिहुत्त, लक्षणे वसागिउ ॥
 पायालि हुंति 'कोययउ, हो मदीय आसणे ।
 सोहति सदयवत्स वीर, ते तुरंग आसणे ॥३१८॥
 १ (धवल)

चिहुं दिसि थ्यारि चमर डलइ ए-आ-आ ।
 सिरवरि ए सोहइ छत्र, विप्र वेय-धुनि उज्वरइ ए-आ आ
 भागलि ए, नाचइ नानाविध पात्र । नर्तन ।
 बह बंदिण कलरव करइ ए ॥३१९॥
 (छंद चामर, त्रिताल)

करंति बंदिणा अणिकक, मंगलिकक मालय ।
 पिचित्त प्रित्त, पत्त पाउ, राग रंग तालय ॥
 चंडी तुरंगि, चंगी अंगि, 'छार सुंदरी रसे ।
 ति चालवंति, नारि थ्यारि, चामरं चिहुं 'दिसे ॥३२०॥

[वर-पात्रा धवलगीत-वर्णन]

१ (धवल)

वर भागलि-घिउ संवरइ ए-आ आ ।
 राण ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए-आ आ

१. 'सिद्धि सित्त' भा. २. 'पयाकिउ' भा. ३. 'मदीय सासन'
 भा. ४. 'संसिर सोहइ छत्र अलंब कि चिहुं दिसि थ्यारि चमर डलइ ए
 वदियण कलरव करइ' बहूत, कि भागलि मात्रा नाटक करइ ॥ ५
 'तिथारि सारि सुंदरी,' भा. ६. 'दिसि किजिरी' ॥ ७. 'वर भागलि
 घिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए । तद्विधि वर
 नीसाण जे भाउ, कि हिइ होइइ गज सारसी ए ॥' अ.

वालीय जउ ए नीसाण जे घाउ ।

हय दीसइं गयराय सारसी ए-भा भा ॥३२१॥

(छंद चामर, त्रिताल)

१करंति सारसी गइंद, सूंडि-दंडि 'डंवरं ।

नीसाण २बाउ, ठक्क घाउ, ढोल बज्जइं ३घंवरं ॥

४प्रवित वाउ, ५दिन राउ, बेगि वावरइ करो ।

६प्रेमि सदयबच्छ वीर, संपत्त तोरणइ बरो ॥३२२॥

(धवल)

गय-गामिणि गुण वन्रवइ ए-भा भा ।

ससिमुखीय सुकोमल महमहइ ए ॥

करइ सिएगार, हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।

कंकण कुंडल भलहलइ ए ॥३२३॥

(छंद चामर)

नरिन्द इंद मत्त लोय, लोय-मज्झि १सोहिइ ।

२प्रदिट्ट दिट्ट भाणिणी, ३मणंत रंगि मोहिइ ॥

भवानि-पत्ति-पाय-भत्ति, कंत लट्ट कामिनी ।

ति ४सूद वीर, ५वन्नवंति, ६गेलि गयंद-गामिणी ॥३२४॥

(धवल)

कंद्रप ए समउ कुमार, १अहिणवउ इंद नरिंदवरो ए ।

मेसि २भरंति कुमार, सदयबच्छो शृंगार करंति ॥

हरसिद्धि-भत्ति विप्र, वेदघुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

१. 'हय गय होसइ सारसी कहि,' घा. २. 'ढोल ठक्का घाउ हूय साव घंवरं' घ. ३. 'दितिराउ' घ. ४. 'इणि परि सदयबच वीर, संपत्त सारसी-तणो बरो' घा. ५. 'मन्न रंगि' घ. ६. 'तेमूद वीर' घा. ७. 'गेलि गायवर गामिनी' घा.

१(मोक्खितक कुंडलित)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, मयिणि सारइ किद्ध सिंगारा ।
 रति-पति रगि, मिलवि सहि रामा, पेम्बिवि सदयवत्स वरकामा ३२६
 जे वाम-नरिद-तणइ दलि सारा, गमइ भत्त पयोहर-भारा ।
 जे हेलि सा गिहिल्लि चलइ चमकति, ते सुद्ध नरिद स्यू रगि रमति ३२७
 जे नेय भय-दिट्ठ कि तद् कुरगि, अत्त सरेह सुनेह सुरगौ ।
 जे अपकि चदनि अंगि गमति, ते सुद्ध नरिद स्यू रगि रमती ३२८
 करइ नित मानिनी आणणि सोह, जे जाणि जुवाण तणइ मनि मोह ।
 जे पत्ति उरत्थलि नारि नमति, ते सुद्ध नरिद स्यू रगि रमति ३२९
 ठवइ उरि हार कि तारय-अणि, ढलति नितब प्रलवित अणि ।
 जे तावणि आरणि नित्त धुमति, ते सुद्ध नरिद-स्यू रगि रमति ३३०
 [लीलावती सखी-विनोद]

(पदपद)

“हे सही ! कहि कुरा कज्जि, मज्ज उन्हास अ गि बहु ? ।

कु कुमि कज्जलि कणय-कुसुमि, सिंगार किद्ध सह ॥

भरीय सेसि सीमत्त, कत कदर्प रायवरि ।

गुडीउ साहण मयमत्त, नित्त सरि सज्ज कि उपरि ॥

माणिसि मयक मधु रति मधुप, पहुवच्छ-तनय मुज्झ मनि वसिउ ।

उल्हवण अनल १ न कित्तु रयणि, सदयवच्छ मुखनिहि जिसिउ ३३१

अगइ १ अहरा रत्त, अनइ वलि विलासीय, -

अगइ लीयण लोइ, अनइ कज्जनिहि कलासीय,

१. 'मोक्खितक कुंडलित' भा. २. 'वलइ' भा. ३. 'जेउप्प' अ.
 ४. 'ते सुद्ध वत्स सिउ रगि रमति' भा ५ 'दिइ' भा. ६. जे दुराणी
 निच्छइ हरमति' भा. ७ 'कुमारिति' भा. ८. 'कत ठक परिय' भा.
 ९ 'उपरि' भा १०. 'पुहर मनि सनुक्कसु ११. 'न कित्तु रणभरि' भा.

अगइ थणहुर थोर, अनइ हाराउलि भारीय,
 अगइ गय मंधारि, अनइ नेउर भंकारीय,
 अगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसंत निसि उज्जली ।
 पहुवच्छन्तरणउ भमर रंगि रसि, इसी नारि सुदा मिनो ॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धन्यता]

[दूहा]

लीलावई मनि चीतवइ: "ईसरि किउ पसाउ ।
 ऊजेणी-थिउ आणिउ, सदर्येवत्स पहु-जाउ ॥ ३३३ ॥"
 जस कारणि मइं एकली, तप कियउ छ: मासि ।
 ते आशा मुभ पूरवो, सामी लील-विलासि ॥३३४॥
 हारि दोरि कंकणि-हि, सयल शृंगार किद्ध ।
 लीलावई मन रंगि रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५॥

[चतुर मंगल]

राय पखालइ पाय वर, सासू सेसि भरंति ।
 विष्ण अनइ यनिता सवे, मंगल चार करंति ॥३३६॥

(छंद पदवी)

मंगल चार करंति, हत्थ लेई 'हत्थे लावउ, रिवाज
 अंतरपट उद्धरीय, किद्ध बिहु कर-मेलावउ ।
 संभ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
 करइ सुकवि कइवार, राय वर-पाय पखालइ ॥३३७॥

सुमित्त ६-२०१२.

१. 'सिहण सुघोर' अ. २. 'भंकारि' आ. ३. 'वसंत-
 निसि' अ. ४. 'अनइ सवर सुदा मिनो' ॥ ५. दूक ३३३
 'मा' मां नथी. ६. 'पूरी हुई' आ. ७. 'पुहती वस्मंडपि तिहि' अ. ८
 'मयवालय' आ. ।

(वस्तु)

नारि लट्ठो, नारि लट्ठो, नाह नव रंग ।
 नारो लट्ठो नवल, अमर वेणि^१आ हन्ति पामीय ।
 अथ^२ संपत्ति अथ रज्जम्यु^३, दिद्व उदक सहित्य स्वामीय ॥
^४वीर वलो चिता बहु, जिमजिम व्याहइ राति ।
 हेम घणू^५ हरसिद्धि भणइ, पुरिस^६ पुत्र प्रभाति ॥३३८॥

[विवाह-कुसाचार]

(चउपई)

“जउ मनरणि विहाणी राति, दातण करइ कु अर परभाति ।
 ता^१ साला सवि आब्या सार, पुण्यवतना पुत्र अपार ॥३३९॥
^२तीणइ^३ ते ऊजेणी-घणी, बोला विउ^४ ‘वहिनेवी’-भणी ।
 सिर नानी बईठा सुविचार, ऊगम लगइ^५ जिके जूमार ॥३४०॥

[छूत श्रीम]

सदयवच्छ सविहू^१ दिइ मान, प्रीति-सरिसा आपइ पान ।
^२तीणइ मेलही पूंजो पड माहि, जूष मागइ^३ सवि सूदा-पार्हि ॥३४१॥
 ते धोलइ^४. ‘सूदा’ सुणि वात, करी सूय मम्ह-म्यू रमि रात ।
 भूइ^५ आपणी भलउ सह कोइ, ^६पडि पियारी दुहिली होइ ॥३४२॥
 सदयवच्छ लहुडपण सीम, जू आब्या ^७ता भणिवा नीम ।
 रमिवा-^८मसि असिवर ऊडवइ, हस्या^९ वीर कलकलिया सबइ ॥३४३॥

-
१. ‘आहुति’ आ. २. ‘संपत्तिसु तस जुगत उदक दिउ’ पा. ३.
 ‘वीरवर’ घ. ४. ‘पय’ आ. ५. ‘भलइ भावि जागीउ जूमार, दातण
 करवा काज भुंभार’ आ. ६. ‘साला स्यू’ घ. ७. ‘उत्त हे ऊजेणीनु घणी’
 घा. ८. ‘सेलुउ’ घ. ९. ‘जण मेली बईठउ’ घा. १०. ‘पडइ’ घा.
 ११. ‘तइ कहिवा’ आ. १२. ‘रसि’ घ. १३. ‘वीतिवउ छत्तीया’ घ.

लिउ हथीआर हरावी सही, सूय पाखइ १न रमाडइ सही ।
गाठइ गरय न हाटि निखेव, सूदउ वीर भनावउ सेव ॥३४५॥

[हरसिद्धि दत्त-वर चूत-जय]

सदयवच्छि समरी हरसिद्धि, रामति मिसि लूसी लिइ रिद्धि ।
पाडिउ ३५इत ३५हिल्लइ दाणि, साला हासारथ नइ हाणि ॥३४६॥

लीधा लाख हरावी हेम, ए ऊवाणउ साचउ एम ।
१ग्या अन्य काजि, अनेरु थाइ, ते घाठी कहि कहिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइ ते बाठि, २वहिनेवी ते बाधीउ गाठि ।
३ऊठया सवे ऊतारा भणी, अड पसरावी सूदा-तणी ॥३४७॥

[सदयवत्सकृत चूत-द्रव्य-दान]

राजा नइ धरि जाणि जग, मागणहार-तणइ मनि रग ।
सदयवच्छि वरि माडिउ करण, हाय ओडावी अठारइ वरण ॥३४८॥

बारहट्ट पुरोहित पढीआर, ४सूदा सामलि ? ५भलाव्या सार ।
तिह मन-मुद्धिइ दोधू मान जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छ दरसण पाखइ छन्नवइ, ६मानि भानि मागण रजवइ ।
आपइ सविहू काजि सुवर्ण, किरि अहिणवउ अवतरिउ कर्ण ॥३५०॥

११राज मानि माणस अति बहू, आपी अरथ सतोसिउ सहू ।
सूदउ वीर पडावइ साद, १२अठार वरण दिइ आसिवादि ॥३५१॥

पहिलू १३मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति १४गिउ नरेस ।
आयस मागी ऊभउ रहइ, ससरउ सदयवच्छि-प्रति कहइ ॥३५२॥

१ 'रमाडु नही' आ २ 'भनायु' आ ३. 'जइत' घ. ४ 'चिहू'
आ ५ 'गणि काउ नइ' आ. ६ 'तु पूजी पू जी बाधिउ गांठि' आ
७ 'लेई राजा' घा ४. 'सूद वाल' घ. ६. 'तोडाव्या सुविचार' घ
१०. 'मानिइ मागण मन अ. ११ 'राज माहि' घ १२ छ दरमण धरि
पासि वदि' आ. १३ 'जई मोकलावइ ईस' आ १४ 'नामइ सीम' घा

[लीलावती पिता-धारापति वचन]

“ऊजेणी-अधिपति ! अवधारि, ^१पसाउ करी अम्ह नयारि पधारि ।
भोगवि अघ-संपति अघ राज, ^२मागि जि कांई जोईइ काज ॥३५३

दे ।उर बहु कीबु-देव !, तुम्ह जावा जुगतूँ नही हेव ।
आगइ एक नारिनउ साथ, वीजी- सिउं हिव वाघ्यु हाथ” ॥३५४॥

[मूढा-वचन]

मूढ ससरा आगलि साच, बोलइ बोल ते ब्रह्मा-वाच : ।
“लीलावती नइ माथिइ’ लेमु, सामलि पोहरि पुहुचाडिमु ॥३५५॥

करीय रहण पहिलूँ परदेसि, तउ ^३आणिमु अबला बिहु रेसि ।
जउ सासरइ रहूँ सुख-भणी, तउ ^४साजइ ऊजेणी-घणी ॥३५६॥”

[कवि-वचन]

“जिणइ-तात तरणइ अघबोल, झाडीउ राज करी तण तोन ।
ते किम सूबउ सासरइ रहइ ? , सामलि-सडिसउ-मारगि वहइ ॥३५७

[प्रयाण]

बूल्या परयत विममा घाट, आगलि इन्द्र-वाहण-नउ घाट ।
बाघ सिंघ बानर वनि मिलइ, देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

मुपुरिस नसीह नामइ सयर, ते-प्रति दीघ हरसिद्धिनु वर ।
मधुरइ सादिइं मोर कीगाइं, बावन-ना वध ढीला थाइं ॥३५९॥

[गाड भरप्य-प्रवेश]

आगलि अनोपम अति कांतार, काठ-समुद्र न लाभइ पार ।
नवि जाणीय सवार असूर, वनमाहि पइसी न सकइ भूर ॥ ३६०॥

१. ‘गया’ घा. २. ‘मागिन देख’ घा. ३. ‘माबिहु भवला’ घा.
४. ‘जम जाइ’ घा.

पुहुतु वीर ते वन मभारि, गाढइ करि करि साही नारि ।
 "स्वामी ! घोर अवधार अवधारि", विण धावो तिहा पाँचइ सालि ॥३६१॥

मपत्त धान खडधान अपार, पखि जाति नबि लाभइ पार ।
 मूडा नइ सालीही महिगहइ, मढार भार वन देखो मन रहइ ॥३६२॥

सजलि सरोवरि भीलइ हस, परवत पाखिलि अति बहु वस ।
 वस घसाघस परवत जलइ, नई नौभण गिरि-हि ऊत्तरइ ॥३६३॥

तिणि नीरि उहाइ आगि, गज बे मडलि जई लागी धागि ।
 केलि करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लीवूइ-ना लाख ॥३६४॥

[चक्रवाकी प्रति-सार्वजिना-मन्योक्ति]

वासु वीर नीर-तटि रहिउ, सामलि सूदु बोलाबीउ : ।
 "स्वामी ! आ साविज अवधारि, काठइ बईठा करइ पोकार ॥३६५॥

च्यारि पुहर चक्रवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ ।
 विहस्या कमल, विहाणो राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति ॥३६६॥

सासइ पड्याँ ते साहमू जोइ, सार्वलिगि मुख दीठउ रोइ ।

(उपजाति)

विलोक्य बाना मुख चन्द्र-विंव । कठे च मुक्ता-मणि-हार तार ।
 पुननिशा विभ्रम-भीति हेति । मूर्खोदये रोदिति चक्रवाकी ॥३६७॥

(चउपइ)

मू किउ नयर सही निटोल, सुविउ वन ते बोलइ बोल ॥३६८॥

[छूतकार-स्वरश्चरण]

जा अवगमइ पथ अति धणउ, ता सुर सुणिउ जूयारी-तणउ ।
 हाथ-माहिल्या हीरा सोइ, एक भणइ: "ए जीता जोईइ" ॥३६९॥

दह दिसि नयणइ निरखइ वाट, सुणिउ सुरंग माहि गहिगाट ।
गिरिवर-तलि वन गहन मभारि, गुरुई शिला दोठो गुफा-वारि ॥३७०॥

[सपत्नीक सदयवत्स-गुफाद्वार-प्रवेस]

शिला ऊघाडी साहसधीर, पडठउ विवर-मांहि वड वीर ।
गरव करइ गहिला केतला, भला मांहि भड भेटइ भला ॥३७१॥
ते पांचइ आलोचिउं ईम, "शिला ऊघाडो आविउ किम ? ।
नारी सरिसउ नर वइरानि, एहू नर कोइ नहो समानि ॥३७२॥
एक सूय छइ नारी सायि, श्रीजूं असिवर दीसइ हायि ।
पांचे बईसारिउ पड-मांहि, रमि राउ श्री जूउ रमिवा मांहि" ३७३ ।

[मूढा-वचन]

सूदउ सइ हयि काढइ मू ठि, गरव-वचन तिहों बोलिउ गूढि : ।
"राउत ! ए पड न जाणि, शिर ओडो नइरमूं सुजाण !" ॥३७४॥

[चतुर्भुज उपरि-मूढा-विजय]

वीर-वचनि श्रीराउत-मनि रीस, समरो सकती ऊडवीउं सीस ।
पडुपाडिउं पहिल्लइ दाणि, एक-तणूं शिर जीतूं जाणि ॥३७५॥
इणि परि ते जीतां शिर पंच, पांचे वीरे रचिउ प्रपंच ।
आपी श्रीकुमर कटारी काढि, "स्वामी श्रीसइ हयि मायां चाढि" ३७६

[सदयवत्स-वचन]

"जे तम्ह-तरणइ वासि वीसमिउ, जे श्रीतम्ह-सिउ हूं रामति रमिउ ।
तिह शिर श्रीवाढण किम कर वहइ?" सदयवच्छ श्रीसविहूँ प्रति कहइ ३७७

१. 'हीडइ रानि' भा. २. 'असिमर उभूण' अ. ३. 'ते जउत' घ. ४. 'मूढा' भा. ५. 'पयता जे' घ. ६. 'करि' भा. ७. 'सि-हयि मस्तक' भा. ८. 'जे जे भहा-तरणइ' भा. ९. 'भहा सरिसु' भा १०. 'सारण' घ. ११. 'वीरह' भा.

तउ ते पांचइ लागी पाणि. "स्वामि ! जि काई जाएति ति माणि ।
 ११ सरव शिर ए माहरू सहू :श्रुदु भणइ "सिउ बोल्याउ बहु" ॥३७८॥
 २सामलि नइ सिर नामइ सवे, ३सा अम्ह सेवक भणी लेखवे ।
 जा परि करइ परगण तणी, ता ऊठिउ ऊजेणी धणी ॥३७९॥
 पीछू वीर न पाणी पली, काढी कोडि तणी काचली ।
 पोली सिउ गाढी गोपवी, खेडा-तणइ बोलीइ ठवी ॥३८०॥

[धृतकार वृत्तात-पृच्छा]

४सरघत एक बि लीघा साधि, पिरि सघली पूछी नरनाधि ।
 ५नाम ठाम ६कुल कारण कहउ, रानमाहि कुण कारणि रहू ? ॥३८१॥
 ७ते बोलइ. "सूदा ! सुणि वात, धोर अ धारि धणा घर ८धात ।
 निधि ९निरतरि चोरी भसू, सघलउ दीस १०गुफामाहि रसू ॥३८२॥

[चोर प्रति समभाष]

सूदइ सहू प्रीछिउ सरूप, भाई भणी रहावइ भूप ।
 घास न काई देसि देव, १०साधिइ थिका अम्हि करिसिउ सेव ॥३८३॥
 रहाव्या पुरुष ते मोटइ प्राणि, सामीय । ११आ शिर ताहरा जाणि
 सेवक-भणी अह्य करिजो सार, समरे सकटि वार किव्हार ॥३८४॥
 रहिया वीर, राजा सचरिउ, साहसि जसि परवरिसि परवरिउ ।
 चालइ सावलिनि नीचालि, तु देखइ परवत नइ पालि ॥३८५॥

-
- १ 'शिर सरवसु ताहरा सहू' सूदय भणइ 'मम बोलु बहु' ? घ
 २ 'भावलिनि' घा ३. 'माता पुन भणी' घा ४ 'सरघता बि' घा ५. 'कु
 घा ६ 'मजउ घमउ सुनी से बाल' घ. ७ 'काल' घ ८ 'नयरनरि' ।
 ९ 'ईणि गुफि' घ १० 'साधि घा तहा' घा ११ 'ए' घ.

[पर्वत-प्राकार प्रवेश]

परयत-शिरि षोडउ प्राकार, जस कमाड कोसीसां पार ।
दोसइं हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मंदिरि जई 'रहिमु तेणि ॥३८६॥

[घनाथ स्त्री रुदन-श्रवण]

(दूहा)

रातो रोअंती सांभली, नीधणोआई नारि ।
सूदइ सा पूछी विगति, घणि 'धावल हर मझारि ॥३८७॥
पूछी तां प्रमदा कहइ: "सांभलि साहसघीर ! ।
हू निधि नंद नरिदनी, सूद ! विलसजे वीर" ॥३८८॥

[नंद नरेन्द्र-निधि दर्शन]

सारलिगि नधि संभलइ, नारी निद्रा लिद ।
सदयवच्छ 'रवि ऊगमणि, पेखीय सयल 'समृद्धि ॥३८९॥
घण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार ।
अवलोई सूड सह, उरी दिद 'दूआर ॥३९०॥

[निशोभी सदयवत्स]

बलि बाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीघी हत्थि ।
दोठी अण-दीठि करी, 'संपय मूकी समत्थि ॥३९१॥

[पुण्य-प्रशंसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि ।
पुण्य प्राणि वनिता वरी, 'पुण्य पुण्व पयरहण लब्धइ ।

१. 'रहीमा' था. २. 'धवल' था. ३. 'सूणि हो' था. ४. 'सूरि' घ.
५. 'संपदि' था. ६. 'बार' घ. ७. 'मू'की सूदइ' था. ८. 'पवर-पुण्य' घ

दान दिइ ते घन्य नर, १अदम्यवत वीहइ न खम्भइ ।
 पुण्य ज पुण्य भव पसइ, २वृद्धि सुख न होइ ।
 ३पुण्यवत पुण्य ज करउ सुख मतोष सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी प्रवलोकन]

(चउपई)

*सविह परि गढ जोयउ फिरो, चालिउ १वीर मनि चिंता करो ।
 परमेसर जउ करइ पसाउ, तउ ए रुडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥
 दिवस च्यारि बनि १वहिउ नरेस, आगलि दीठउ वसतउ देस ।
 २पुर प्रासाद नइ घट्ट निम्बाण, गामि गामि गिरुआ अहिठाण ॥३६४॥
 चारु लोचन-तणा तिहा वास, ३पेखी पथिक करइ उत्हास ।

[मार्गे भाट मिनाप]

जा बि जाइ १वहता वाट, ता सर-पालिइ भेटिउ भाट ॥३६५॥
 १नर एकलउ अवारउ जाइ, पूठिइ प्रमदा पाली १पाइ ॥
 भाटि बोलाविउ १'मुणि हो शूर' रहि राउत १अति थिउ असूर ॥५६६॥
 भाट भोगवइ १गाम ति ग्रास, आदर सिउ आणिउ आवासि ।
 पेखी अ ग-तणउ १आकार, ते आवर्जत करइ अपार ॥३६७॥
 तेडाविउ बालद तिवार, मर्दन देवा काजि कुमार ।
 ऊतावली हुईय अ घोलि, भोजनि शालि दालि धूत घोलि ॥३६८॥

१ 'महवडस पण पुण्य शुभइ' अ २ 'जि सुख शरीरि' अ ३
 'पुण्यइ ए पामीय सट्ट सपइ सूदइ वीरि' अ ४ 'गाढा गृह' अ ५ 'चीत
 चीतवणी' अ ६ 'वगिठ' अ ७ 'पूरव' अ ८ 'पिखीय हृदय' अ
 ९ 'वसती' अ. १० 'दीसउ नर एकनु जि' अ ११ 'काइ ?' अ
 १२ 'वड' अ १३ 'गामनु' अ १४ 'अधिकार' अ

“नवरत्न मंदिरि निद्रा ठाम, ऊठउ पथिक ! करउ विश्राम ।”
जां बे जण चईठा एकंति, ता कामिणि बोलावी कति : ॥२६६॥

[मूदा-नवन]

“सुणि सामलि ! बोलिउं माहरूं, कोस पंच पीहर ताहरूं ।
दियस पंच रहि ‘चंड-प्रदेशि, हूँ पूहचूँ’ पहिठाण प्रदेसि ॥४००॥
प्रहि ऊगमि पेरू पहिठाण, जई जूँ-ठाणइ मारू ठाण ।
जे ‘सूरा रामरथ जू-जाण, तीह-ऊपरि माइरू’ मंडाण ॥४०१॥
लीलां लाछि हरावी ‘लिउं’, तेहनउ घरथ दोसीनइ ‘दिउं’ ।
तूँ पहिरेवा सरीयां सार, बुहर् बस्त्र विविध दूंगार ॥४०२॥
घाट-हडो नइ वस्त्र बिहोण, इम जाती तूँ दोमिसि दीण ॥
पहिरण पखइ पीहरि गमिसि, तउ माहरी माम नीगमिसि ॥४०३॥

[चारण-गृह-निवास सूचन]

मन्त्र
अभिप्राय.

बंदिण-तणइ बहिन क्षत्रिणी. क्षत्रिणी मानइ ‘भाई’ भणी ।
ऐ नातहूँ नव्वं नहीं आज, भाट-भुवनि रहिता ‘नही लाज ॥४०४॥
‘जे भंड मांहि भवाइइ भला, जीवणि मरणि नही एकला ।
‘रूठारा मागी लिइं मंड, क्षामोदरि ! क्षत्री-गुरु चंड’ ॥४०५॥
सामलि सूदानू सुणिउं वयण, नारी नीर भयां बे नयण ।
“पाणी बल जे पेंसइ प्रदेसि, पंच दिवस प्रीय ! किमइ रहेसि? ४०६
नारी ‘देव’-भणी नर गिणइ, नरनइ नारी पय-लूँछणइ ।
इम करतां ‘नर न रहइ ठामि, ते नारी काइ सिरजी स्वामि’? ४०७

१. ‘छंड’ भा. २. ‘सूपा’ भा. ३. ‘स्योस’ भा. ४. ‘सोस’ भा. ५.
‘नवि’ भा. ६. ‘जे रणि चडया’ भा ७. ‘रूठरा’ भा. ८. ‘जे’ भा.

[सूदा-वचन]

सूदउ भणइ “सामलि ! सुणि वात, नर जाइ जोयण सइं सात ।
राति दिवस महिला मनमोहि, जिहां अवला तिहा आवइ ठाहि” ॥४०८

[सामली-वचन]

“स्वामी ! ए उत्तर अवचारि, घरयो धणूँ विसासइ नारि ।
नर नवनवइ भवनि रसि रमइ, मुकुनिणी दीह दुखि नीगमइ” ॥४०९

‘कणय रयण मुत्ताहल हार, हीर-चीर सोवण शृंगार ।
ए सहु समपइ अवला-हाथि, बीजा-सरिसउ आवइ बायि” ॥४१०

तीणि उत्तरि ते अवला रही, बात एक पुणि वरनइं कही ।
“मामीय ! कहिउं माहरू मानि, प्रीय ! पाटण ते नयी समानी ४११

[सद्यवत्सवचन]

‘सद्यवच्छ प्रभ पूछइ इसिउं : “कहि कामिणि ! ते पाटण किम्पूँ ? ”

[सावनिगा वचन । नगर पाटण-वर्णन] ५५५ ५१२-५२६.

“स्वामि ! सहारइ आपूँ छेक, लागइ दब दीहाइउ एक ॥४१२।

जिणि पाटणि मोढा प्रासाद, मेरु-शिखर-सिउं वहुइ विवाद ।

‘गरुड गढ ऊंचा आवास, किरि अहिणव दीसइ कंलास ॥४१३॥

माहि महेस विष्णु नइ मह्य, सहु समाचरइ कुलोचित ‘धर्म ।

‘दिनकर-भगति-तणउ अति भाव, अधिकउ परमेसरी प्रभाव ॥४१४

बावन वीर वसइं तिहा वासि, पूजइ जिनवर फलीइं आसि ।

जिन-शासन गाढउं महगहइ, जीव-दया देखो मन रहइ ॥४१५॥

८१८३
८१८४
५१५

१. ‘भाणि माणिक’ भा. २. ‘सहुइं आपणइ’ भा. ३. ‘नरवर नइ’ भा.
४. ‘लीटी’ (४१२) ‘आ’ मा नयी’ ५. ‘मुदयवच्छ कहि आपूँ’ भा. ६.
‘मोहइ वाद’ भा. ७. ‘गडगड गुछ’ भा. ८. ‘कर्म’ भा. ९. ‘दिन करनो
भगति मति भावि’ भा.

जे जोगिणि चउसठिनुं 'गाम, चउरासी चेटकनू' तिहि ठाम ।
अव्यंतर भूत पिशाच नइ प्रेत, साचउ साकिणि-तणउ संकेत ॥४१६॥

गणपति क्षेत्रपालनी म्याति, दिवस पाहिइ' रुडेरी राति ।
ठामि ठामि मडल 'मंडाइ, ठामि ठामि नित गुणीआ गाइ ॥४१७॥

ठामि ठामि ढोणां ढोईंइ, ठामि ठामि जोणां जोईइ ।
सातइ 'यसण' सांवलीइ जोउ, माहि घणा छइ नाणस तेउ ॥४१८॥

इकि लीलां लखिमी 'लई जाइ, भोला भमहि सान वीकाइ ।
मणा न कामण मोहण-तणी, वरतइ धूरत-विद्या घणी ॥४१९॥

असइ वासि छत्रीसइ' कुली, माहि 'चुहु मुडघा' नइ मंडली ।
चउरासी सूरु :सामंत, च्यारि महाधर मंत्रि अनत ॥४२०॥

चउरासी चुहटांनी कुगति, वरणावरण तणी बहु विगति ।
उत्तम मध्यम लोक अपार, भामा भला न लाभइ पार ॥४२१॥

करइ राज सालिवाहण राउ, 'वइरी-तणउ विघंसइ ठाउ ।
अकठ पीठ पहिलू' पहिठाण, सामीय आसि-तणू' अहिठाण' ॥४२२॥

[पंच दिवसावधि सदयवस-गमन]

भाट भलामण दीधी भली, कीधी कंति अवधि अंतली ।
'पच दिवसि आविसु तुभ पासि, मृगलोअणी ! घणू' म विमासि ॥४२३॥

'सदयवच्छि तां जोयू' जिसिउ', नारीय नयर वखाणिउ तिसिउ'
राजा रंगि अंगि उल्हसिउ', हंसगमणि नइ बोलइ हसिउ' ॥४२४॥

१. 'ठाम' आ. २. पा लोटी 'घ' मा नयो ३. 'मंडावइ' आ. ४. 'विसन'
आ. ५. 'संसारइ' अ. ६. 'हरी' आ. ७. 'मोटी बहुत्तरी' अ. ८. 'अरियण-
निरि दि ठावउ पाउ' आ. ९. 'सदयवच्छ प्रतिति' आ.

(वस्तु)

“कन सभलि, कत सभलि, कहइ १कमला लच्छि ।
जु मर्याद लुप्पइ मेरुहर, तेह न पालि पच्छउ करिज्जइ ? ।
सीह विद्धइ सकलह, ति किम देव ! दोरी धरिज्जइ ? ।
हत्थी अ कुस अवगणइ, किम साहोज्जइ कनि ? ।
तिम २तू प्रीय ! पधारता, ३मज्झ विमासण मच्चि” ॥४२५॥

(गाथा)

तुणि सदपवीर ! वयण सच्च’ [जपवइ सार्वलिङ्गी ए ।]
रीय ! दिवस पच पच्छइ, तिहि गमिस जिहि ! ४मुन पक्खेसि” ॥४२६॥
मते नर पुत्रे

[सूदा-वचन]

तिणि वयणि सुद्ध जपइ : “मणिघरि रोसो हसेवि मुहकमले ।
तिहूअणि ते को ठाण, जिहि जुवई रहइ ? मह महिला । ॥४२७॥
वयण रासी नयण मई, हमगई उरि ५करिद माणि ।
हीरा कणय पहाण, अ गगी अच्च तथा पक्खे जीवीय मरण ॥४२८॥

[सार्वलिङ्गा-वमाश्वासन]

*तोणि वयणि सुद्ध वीरो, गहिबरिउ गलित चलितोमि ।
“गयगमणि ! म धरि ६अ दोह, निवारि नयण नोर ७भरीयमि” ४२९

[सूदा-प्रमाण]

(अट्ठयत्तल)

चलिउ रमणि रोअ ती वारइ, लोयण लूही सक्कल वारिद ।
वलि ! जु नावू बोलिइ वारिहि, ज ८मनि होइकरइ तिणि वारहि ४३०

१ ‘इम लच्छि’ २ ‘प्रीय ! तम्ह’ अ. ३. ‘मुक्क’ अ. ४. ‘न’ अ.
५. ‘दूक ४२७’ ‘अ’ मा नयी. ‘वरिद’ अ. ७ ‘गलद’ सुवल तोमि’ अ.
८. ‘दुहिनउ’ अ. ‘भरियोइ’ अ. १०. ‘पुणइ सुम करे तिवारि हि’ अ.

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पहिठाण-प्रवेसह, नयणि निहालइ नयर-निवेसह ।
ता सरोवरि जल भरइ सुवेसह, चतुरि चतुर्विध नारि निवेसह ॥४३१

[विरह-विलक्षित पुरुष प्रसंग]

अन्त्या

आगइ विरहि ^१विलबखो पाणी, लागी अंगि ^२तरस सपराणी ।
कज्जल लग दिट्ठ दुउ पाणि, पीघउं पुरुसि पशू जिम पाणी ॥४३२
'नर नवरंग सही सवे जल, किणि कारणि पशू जिम पीइ जल?' ।
नारि-^३नयणि करि लगउ कज्जल, तिणि ^४दोठइ नर भरइ न अजल ॥४३३
(दृष्ट)

ईणि नयारि जे ^५निद्वणह, तेह-तणी घर नारि ।
बारू माणस जे ^६वसइ, तेह ^७नहु पाणीहारि ॥४३४॥
पाणीहारिइ परस्त्रीउ, नर पीयंतउ नीर ।
सदयवच्छ तं सभलि, चित्ति चमकयउ वीर ॥४३५॥

[समंगल कबंध दर्शन]

^८पुढमं पेखइ नयणि, पोलि प्रवेसि प्रवीण ।
पुरुष एक पय-पाणि-विण, सरडु अवण-विहीण ॥४३६॥
गणपति मन्दिर प्रवेश] ^{९ १० ११}

त पेखवि पाछउ बलिउ, गिउ गणपति-प्रासादि ।
^{१२}आणि असुउणि ज ईणि नयारि, पढीइ वडइ विवादि ॥४३७॥
तिणि ठूठइ ते ऊलखिउ, ए अम्ह पेखि बलंति ।
आणि भलेरू^{१३} भेटणू^{१४}, देउल-^{१५}मज्झि^{१६} मिलंति ॥४३८॥

१. 'वत्परबइ' आ. २. 'तिहा सप्याणी' घ. ३. 'नर-करि' घ.
४. 'भोजय-भय' घ. ५. 'निद्वण्ड' घ. ६. 'घछूइ' घ० ७. 'तनहु' घ.
८. 'माहि' आ.



(१) देखिये पृष्ठ ६२ कडो ४३२-३३

‘पीधउ पुरुषि पनु जिम पाणी ।’

ओर (२) पृष्ठ १७०-१७१ कडो ३२९

‘पसूबा जिम पाणी पीमड ।’

पूग-पत्र-फल फूल सिउं, आणी भमृत आहार ।
लीलां लेतउ उलखिउ, जाणी किद्ध जुहार ॥४३६॥

[ठांठा-जन वृत्त सूदा-वन्दन]

सउण भणी ते बंदीयां, लीयां पूगी पान ।
‘भाई’ भणी बोलाविउ, दिइ मनगुद्धिइ मान ॥४४०॥

[ठांठा जन भात्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलू ? केतलू जाण जूमार ? ।
उडइ नइ उडिउं सहइ, ते भम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र संमलि, मित्र संमलि, मुम्ह वीतक्क ।
हैम स्वामी सीघल-तराउ, कुंभर कोडि कंचण सहित्तउ ।
सइं गय हय सय पंच, लेइ ए पाटरण पेखण पहुत्तउ ॥
ते हेला रसि हारिउं, नाक पागे कर कन्न ।
ईणि जूठाणइ जूमर रमहं, वलोया भड वावन्न ॥४४२॥

(चरपई)

सूध न कांई देखूं स्वामि !, जूउ-दंड पडइ ईणि ठामि ।
भसिबर एक-भू ठि हारीइ, बीजा काबिइं बाजी सारीइ ॥४४३॥

[कामसेना गणिका जूठ-प्रसंग]

‘वे जण पाटरण-मज्झि पहुत्त, दीठउं देउलि लोक बहुत्त ।
‘कहि भाई ! कोलाहल किसिउ ? ए अण-खाघइ पाणी रिसउ ४४४
‘कामसेना जे नाचिणि नाम, लिइ पच सइं सोन्ना द्राम ।
सुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहां ऊहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

5131-149-1

१. ‘सहु बंदीउं’ धा. २. ‘केता रमइं जूमार’ धा. ३. ‘तं सुणि’ धा.

‘गणिकानी मा अतिहि रडोल, विवहारीउ मनाविउ मिल ।
डोकरी मडिउ गाढउ छोह, अर्थ आपतउ न छूटइ छोह” ॥४४६॥

[सदयवत्स वचन] ६०६८

६०६८

‘सदयवन्ध बोलइ : सुणि मित्र !, ए खोह अति करइ असत्र ।”

[दूठा-वचन]

६०६९

‘देव ! अनेरउ नथी अन्याउ, माती राडइ बीटिउ बाउ ॥४४७॥
एक भांडणिया ऊठी भाड, बीजउ महि मूकित साडी ।

श्रीजी राउल-वाई रांड, ‘इणि कारण टलीइ मॉड” ॥४४८॥

ते जोवा पुहुतु प्रासादि, डोवरि दीठी बढती वादि ।

‘नर नवयोवन छइ नवरगि, ए बोलिस्यइ अम्हारइ ‘अ गि” ॥४४९॥

एकदति बोलइ “सुणि साह !, अम्हि परठया छइ राउत आह ।”

सेठि-कुमर ऊचरइ सुजाण, “भापण बिहु जण एह प्रमाण” ॥४५०॥

तव तीणइ बिहु कारण कही, राउति वात विमासी सही ।

सदयवन्धि विचि लीधा साद, तेह-नउ निरवान्यु वाद ॥४५१॥

[सदयवत्स-वृत्त चतुर न्याय]

एक सेठि हकारिउ ताम, “आणि विन्धे दिइ दर्पण द्राम” ।

सेठिइ जे जण बोलाविउ, अरथ आरीसउ लेई आवीउ ॥४५२॥

‘‘धन रेडी ओडिउ आरीस, एकदति तव दिइ आसीस ।

आधी थई लेवानइ अर्थ, “दरपणमाहि गिणी लिउ गर्थ ॥४५३॥”

[गणिका-कपट उग्रहास]

हाणि ताली देई हसिउ लोक : “राडइ लीधा टंका रोक ! ।

अ तरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बाँहि घरी ॥४५४॥

१. ‘इतनी अति आढली रडोल’ २. ‘सुदय भणइ सुणि दू ठा मित्र’

घ ३. ‘ए मुंह’ घ ४. ‘अगि’ आ.

इकि छाणिइ, इकि छांटड छारि, इकि खोजवइं अनेरइ सारि ।
 एकदति तव 'ओपो इसी, राय राजा छवि राणी जिसी ! ॥४५५॥
 तेहनएइ छोरि नही छेइ, डोकरी देखी हरखी तेह ।
 चादिइ धिवहारोइ हरावी, टका टीक रोक लेइ घरि आवी ! ४५६ ।

[गणिकाप्रति कुचस्त्रीजन-वृणा]

आगारणा घवनहर घसी, अबला सवे आवी उदमी ।
 "कहउ, किसो-परि जीतउ वाद ?," बोली न सकइ यईठउ साद ॥४५७॥
 जीणइ घणा घामव्या ति छाठी, कला बहुतरि-सिउ बुद्धि नाठी ।
 त्रिणि दिवस जि लाघणइ लाघी, घणे घावू ए कीवी घाघी ॥४५८॥
 परह्या पाखइ पुरुष बीससी, नयर-माहि नर सघलइ हसी ।
 "काई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाद 'विगूती आज' ॥४५९॥

[सद्यवत्स प्रति कामसेना-आकर्षण]

कामसेनि सभलिउं स्वरूप, ते राउत-नूँ 'जोईइ रूप ।
 तेडिउ सघलउ सपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥
 पुहती मंडवि ^{सुख} 'मूँधा दीती' ^{सिंधु} वाजिउ ^{धुप} 'गजर सुघुडिउ' ^{पुन} गीत ।
 बगकारि सातइ सुर सारि, आलति कोथी आलतिकारि ॥४६१॥
 उडीमान उडवीउ तान, 'भणभुण करइ मृदग रसाल ।
 धुरी धूपानी धूरली आदि, रही रेय 'रविनइ प्राखादि ॥४६२॥
 नयण 'वयण मन मस्तक नास, हावभाव 'कटि-सणा कलास ।
 उर कर चरण लगइ वानवइ, इम जूजूआ अ ग जालवइ ॥४६३॥

१. 'देखी' भा. २. 'विगोई' भा. ३. 'जोयूँ' भा. ३. 'जोवा नइ तिहा' भा. ४. 'मधि आदित' भा. ५. 'गुहर सुद्ध समीप' भा. ६. 'रणभिण' भा. ७. 'देवनइ' भा. ८. 'मयण' भा. ९. 'करइ' भा.

[कामसेना-विह्वलता]

उत्तर ऊजेणी-पति दिट्ठ, वईठउ मत्त बारणइ बलिट्ठ ।
कामसेनि १ यई काम-विकाम, माणम कोइ न जाणइ माम ॥४६४॥

२तेउ घलावी भणी अवास, तूटी नाडि, न ३सलकइ मास ।
नयर-४नरेसर बाहर करइ, इसिउं पाच अण-सूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवेद जई जोई नाडि, एउ विकार नही अम्ह पाडि ।
देस-विदेसी बीजा वहू, राजा-५आयसि आविउं सहू ॥४६६॥

एकि भणइ: "ऊतारउ ६आच," एकि सेक दिवरावइं पाच ।
एकि भणइ: "आलस छाडीइ," एकि ७भणइ: "मडन माडीइ" ॥४७॥

एकि भणइ: "अम्ह हलूउ हाय," एकि भणइ: "दिइ कडूउ कवाय"
आपापणी कला सवि कहइं, ८गुणीया तइं यईद गहगहइं ॥४८॥

[गुर्जर बंध-निदान । अनंग-रोग]

गुर्जर बंध तिह्वारइ हसिउ, जाणे घरणि-घनतरि जिसिउ ।
दीठइ रूपि सरूप ओलखइ, वेद अनेरुं रा भागनि अखइ : ॥४९॥

९एहनइ अंगि अगलउ अनग, नरवर ! को दीठउ नवरग ।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देखी लाजसिइ" ॥५०॥

तास वचनि कालमुहा थाइ, बलिउं चेत. १०वेद ऊटथा जाइ ! ।
बाहिर वरतइ भीडाभीड, प्रमदा पंचवाणनी पीड ! ॥५०१॥

१. 'हइ कामिनी काम' धा. २. 'सिई' धा. ३. 'लामइ' धा. ४
'नरेस न' धा. ५. 'इसि हे' धा. ६. 'आय' धा. ७. 'कहइ' धा. ८. 'ए'
थाइ छत्रीमु काय' धा. ९. 'गुणीया नीकारकि' धा. १०. 'बिगि ऊठी' धा.

[राजपुत्र-मानयन-उपाय]

नाचिए १जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउं काम ।
 'तू' २डाही डांखरी म जेडि, रवि-३मंदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥
 उत्तरि बईठउ ऊंची पाटि, भड जे पाखलि वीठिउ भाटि ।
 केकि-कला सिरि भांति भ्रमाल, आगलि ऊडए अनइ करमाल ॥४७३॥

[वृद्धा एकदंति विरोध-दशन]

एकदंति तीएि वोनइ बली, ४रीसिइ पुरुष एक ऊछली । ५२८१॥
"जिएि ५हलूई कीधी आज, ते टोटउ तेडिइ ६गुण काज ? ॥४७४॥
 राय राणा ७भूतलि ८जेतला, विवहारीया कहूँ केतला ? ।
 करइं साद कोडिसर केडि, केहा गुण तू राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका-द्रव्यहरण-नैपुण्य]

पारखि-सिउं जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयारू हेम ।
 मोछी वानी तउ घणउ विराम, सारी लोइसूँ ९सारा द्राम ॥४७६॥
 दोसी १०कोर कापडा दियइ, लूगड-मांहि ति बिमणूँ लीयइ ।
 काज सुरहीउ सारइ घणूँ, आपइ सदा सुरहू घूपणू ॥४७७॥
 सोनी काजि ११किह्लारइं १२वाहि, सूघ चउथ लिइं सूना-मांहि ।
 पहिलू घाट घडीनइ हाटि, घरि भावइ घडामण माटि ॥४७८॥
 बांभण-सिउं बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइं परिहरइ ।
 भाट भलउ हुइ दोह बि ज्यारि, जां जूवटइ न यालइ हारि ॥४७९॥

१. 'जे' घा. २. 'गाढी' घा. ३. 'मडवि' घा. ४. 'दीसइ' घा.

५. 'हूँ हानू' घ. ६. 'शू' घा. ७. 'भूपति' घ. ८. 'जे मला' घा. ९.

'आला' घ. १०. 'कापड वारू' घा. ११. 'जिह्लारइ' घा. १२. 'वाहि' घ.

तंगोलीनो थोडो तोम, जिह्मइ पान पांचनो सोम ।
 टीटा देखो टाले ट्रोठि, साहमा जईनइ मनावे सेठि ॥४८०॥
 माली आपइ ^{मुग्ध}सुरहां फल, जे वारु नइ अति बहुमूल ।
 मोटा भोटो अनइ छड छेक, तेहनइ दीजइ यहिलु छेक ॥४८१॥
 फटरसी नइ 'फरफट' कूंच, हाथ किह्वारइ न मेलहइ मूंच ।
 ते उलगू-नइ म देसि अडाउ, कूडो 'कग्गर' लाउ नसाउ ॥४८२॥

[घनवान परीक्षण]

नाणावटि नाणू 'निरस्त्रीइ, तिम आपणइ पुरुष परम्नीइ ।
 'जिहा जिहा दीसइ द्रव्य जेतलउ, तिहा आदर कीजइ तेतलउ' ॥४८३॥

[कामसेना-वचन]

कामसेना नइ चडिउ कोप, नायकदे प्रति दीध निरोप ।
 "ए बूढो-तणा बोल म विमामि, राजत तेडो आणि आवासि" ॥४८४॥
 गई रामा 'रवि-मंडप भणी, कही व्याधि ते काभिए तणी ।

[सद्यवस्त-प्रति वचन]

"सुणि सावज्जल साची वात, कामसेना तू-रासी रान ॥४८५॥
 हूं पाठवी तीणइ तूंअ पासि, 'पसाउ करी अम्ह आवि आवासि ।
 अरय अनेछि अछइ 'अम्ह घणउ, ते वनिता 'विक्रम तूंअ-तणउ ॥४८६॥
 बार म लाउ, वहिलउ अइ देव !, टाला तणी 'टली छइ टेव ।
 भरइ अखूटइ मोटूं पात्र, तइ दीठइ दुःख फोटइ गात्र' ॥४८७॥

१. 'अरस्पु नेह मन' आ. २. 'फाफट' आ. ३ 'कद घस लाउ' आ.
 ४. 'परसीइ' आ ५. 'जेहनउ भाव दीसइ' आ. ६. 'वि' आ. ७. 'मया'
 आ. ८. 'अति' आ. ९. 'विक्रम' आ. १०. 'आ' आ.

[ठ ठा प्रति सूदा-वचन]

सुद् भणइ: "सुणि ठ ठा मित्र !, इणि माडिउ एवइ^१ चरित्र ।
 'इम तेडइ^२ अतिम कारण कहइ, एहू वात विमासण लहइ" ॥४८८॥

[ठ ठा-वचन]

ठ ठा भणइ : *"नवि जाणिउ भेद, खारि राड-तणइ मनि खेद ।
'देहरा माहि दूहवी जेम, डस बीसरइ न डोकरि तेह ॥४८९॥

इणि बीसासी बाह्या बीर, इणि "खाइ पाडगा घर धीर ।
 'इणि वेसाड विगोथा भला, इणि रोल्या राउत केतला ॥४९०

बेसा-तणउ म करि बीसास, वेसा-वयण ते मुहि गली पास ।
 * मच्छ जेम मास-नइ घरइ, जीव तणउ जीवी अपरइ ॥" ४९१

[सूदा-वचन]

सुद् भणइ: "हूँअ जागू सहू, वेसा तणो वात छइ वहू ।
 जउ माई ! भय कीजइ एह, छयल्लपणानउ आविउ छेह" ॥४९२

[ठ ठा-वचन]

"एह अनेरउ नही उपाउ, एहनइ विषय-तणउ विवसाउ ।
 इहनइ मनि माटीनी भास, इहनइ लहइ विदेसी वास" ॥४९३

[परिचारिका निवेदन]

परिचारिकि जे 'पूठइ वही, तीणइ घरि जईनइ कागण कही ।
 'ते धीरउ आवेवउ वरइ, पणि ठू ठीउ 'कूटाइ करइ ॥' ४९४॥

१. 'तिम' या २. 'प्रति' या. ३. 'मइ' या. ४. 'हसिउ वाद विगोइ जेह,
 ५. 'बीसरइ' या. ६. 'व्या छइ' या. ७. 'इणइ व्यास विगोया पणा' या.
 ८. 'वाणइ जेम मछिनइ' या. ९. 'वहसी' या. १०. 'पुछी रहौ' या.

तउ बीजी बोलावी चान : "जई चानवि ठूंठउ चंडाल ।
मानी लाच लोभवि घरू", कामिणि काज करे आपणू" ॥४९५॥

१तउ तीणइ खिनकी-नइ गूट, हुलावी बोलाविउ ठूंठ ।
नांच-तणउ देखाडिउ लोभ, कांइ ए क्षित्री-कारणि दोभ? ॥४९६॥

[हुंठा ने भाषणुं प्रलोभन]

२नांच आंच नवि ठूंठउ सहइ, कांई कयन अपूरव कहइ ।

[ठूंठा-वचन]

"कामसेनि-लहुढी चित्रलेख, तेह ऊपरि माहरी अभिलेख ॥४९७॥

ते जउ रातिइ मइ-सिउं रमइ, तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ ।
बीजू ३कांइ म बोलि आल, ४ठूंठइ-सारिस न चालइ चान ॥४९८॥

मनि आपणइ आलोचीय माच, वेशा ठूंठइ लीधी वाच ।
चतुरा राउ ऊठाडयउ तेहि, आणिउ गयणामिणि नइ गेहि" ॥४९९॥

[कामसेना आवासे मूढा-गमन] ५॥५०॥

नाचिणि नर भावंतउ देखि, आपणपुं मंवरी सुवेलि ।
कणय-कलस भरि निर्मल नीर, दिइ आचमण बिन्दे दिइ घीर ॥५००॥

[स्तकार]

५१५५

आदर-सिउं अवास मकारि, १आणी आवरजइ घर नारि ।
२मोजन भगति मुगति जूजूई, मिलियां राति सुरंगी हुई ॥५०१॥

घडइ भनकि जागिउ जूआर, दांतण करिवा काजि कूंआर ।

३कामसेनि आयस उह्लासि, दांतण लेईनइ आवी दासि ॥५०२॥

४"दांतण सारिई, ५ऊयू सूर, आविउ ठूंठः म करउ असुर ।" ६॥५०३॥
बीजू आपी बोलइ बोल, "राउत ! रखे करउ ७विगोल ॥" ८॥५०३॥

१ 'हुपाई' अ. २. 'वाटे करीनइ खनकी गूट' अ. ३. 'वेशा-वचन' अ. ४. 'बहु' अ. ५. 'इस्युं अणिइ ठूंठु चंडाल' अ. ६. 'ते आवर्जन करइ अपारि' अ. ७. 'सबरइ' अ. ८. 'अति काल' अ.

कामिणि 'कपट न विमास्युं' चीति, खेडू खडग विलायुं भीति ।

[चतुस्थान-प्रति गमन]

५८२॥११

आरति टली ऊतारा-तणी, भड चालिउ जूझ ठाणा भणी ॥५०४॥

ता जूझार बईठा जूवटइ, जा लगइ अवर 'कोइ ऊमटइ ।

ता लगइ कूडी काढइ मूठि, 'पडिय-सिउ बोलाव्या ठूँठि ॥५०५॥

तीणइ जाणिउ नवउ जूझार, ठिगि सघले 'जई कीध जुहार ।

पड चापी बईठउ चउपट्ट, नही नर बीजा 'मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि धानकि सपराणा सहो, एकइ पुरुषि परीक्षा लहो ।

[सुदा-चतुर्थातुर्य परीक्षा]

आघउं थईनइ बीसउ इसिउ, 'सूदा ! 'सूध पूछीइ किसिउ ? ॥५०७॥

राउत!रमतउ म करि'मि काणि इणि पडि जीपिसि ओडया प्राणि।

लाख-लगइ हूँ पुरिस हेम, 'ओडि भरथ मनि प्राणे एम' ॥५०८॥

[प्रविष्ट चतुर्कार उपस्थिति]

आविउ सूद्रक सकुतिकुमार, आविउ बीरभद्र भेंकार ।

आविउ कामसेन नइ कालूउ, आविउ 'रिणवत रोसालूउ ॥५०९॥

आविउ बंकट नइ बाघलु, आविउ रीसट नइ राघलु ।

इम जूटवइ जूझारी मिल्या, बीरइ बीर बईसता कल्या ॥५१०॥

-
१. 'कयन' ध. १. 'बमकिउ' धा. ३. 'वासा' धा. ४. 'को न' धा.
५. 'पुरुष एकसिउ' ध; 'बइ भूँटि' धा. ६. 'विचि दीधउ ठाहार' ध.
७. 'भनि' धा. ८. 'सूध' धा. ९. 'तिम ओडे जिम जाणइ तेम' धा.
१०. 'रोपु' धा.

[सदयवत्ता चतुर्थ]

सदयवत् नइ रावतिकुमार, १वि जण रुडा रमइ जूगार ।
बावन वीर बहुत्तरि राण उपरि-थ्या भड भागड दाण ॥५११॥

हेला-भाहि हराविउ राउ, २जीनु सोग्रन नव्ख सवाउ ।
तीणइ बीजा क्कारि उद्रक, रमता थिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरमी समवटि जाइ, वीरिइ वीर न पाछउ थाइ ।
बिहु जण जगसू दोसइ जयत, सूदइ पोहूँ पाडिउ पहित ॥५१३॥
काल-पास शिव जोगिणि जेउ, जाणइ ३जूम तणा भल भेउ ।
ते नर हारी कठथा आधि: एक भणइ ! “ठिग ठूठउ साधि ॥५१४॥
धन ऊमरडो दिगलु करइ, न्योडउ वईठउ खोनउ भरइ ।
ऊठिउ कुमर क्तारइ जाइ, धन बेचतउ कुणिइ न रहाइ ॥५१५॥

[चतुर्थ द्रव्य दान]

अण-मार्गता ओडावइ हाथ, सूदा-जम जाणइ जगनाथ ।
४सूदउ सविहू आपइ जीप, जूम रमिवानूँ एह जि बीप ॥५१६॥

[सार्वलिङ्गा अर्घे पत्नाभरण-विक्रय]

भउपट मल्ल चुट्टइ मचरइ, दोसी हट्ट दीठउ सभइ ।
५सार्वलिङ्गिनइ सरला सार, बुहुरइ नानाविध श्रु गार ॥५१७॥
भम्तूरी केसर कप्पूर, ६धूप धूपणा अनइ सीदूर ।
गार सुगध वस्त ७धण लिद्ध, ते वाघी दोमीनइ दिद्ध ॥५१८॥

१ 'ए बि' आ. २. 'सूद्र' घ. ३. 'जवटनु' घा. ४. 'आणइ सविहूँ' कारणि
जीप, कूडे रमता पछइ केही जीप ?' घा. . ५ 'पहिरवा पवित्र,
न'वरि बुहुर्या वस्त्र विचित्र' घ. ६. 'धुति धूपणइ सरिह' घ.
७ 'बहु' घा

कामसेना धरि जण जेतला, ते जोता हीडइ तेतला ।
 ता अढलक 'आवइ आपणी', अणतेडिउ क्तारा भणी ॥५१६॥
 हसगमणि-नइ आपिउ हेम, माडइ लेखा अधिऊ प्रेम ।
 तीणइ २२ड-मनि फोटी रीस, एकदति तव दिइ आसीस ॥५२०॥
 भोग भगति आवजिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहा वसिउ ।
 दिन पचमइ व्याहाणा वार,हुई हथीआर-तणी'मनि सार ॥५२१॥

[न्यान मध्यगत अमूल्य काचली]

'असि ऊतारी जोइ जाम, अबला 'ओढणी वलगी' ताम ।
 खेडउ भाटकता खडखडी, सूको खालो भागलि पडो ॥५२२॥
खोलि-माहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीख' कहीइ किसिउ ? ।
सवा कोडी-'तणी काचली, चद्रवदनि 'देखीनइ चली ॥५२३॥

कामसेना 'प्रभु लागी पाणि, "स्वामी ! जि काइ जाणत मागि" ।
मनि आपणइ सुणी महाराजि, अलविइ आपी अबला काजि ॥५२४
 'हूउ चतुर बोलिवा सचीत, तव जूय-ठाणइ चमकिउ चीत ।
 जा 'आराधण आरति हुइ, तिहा लगइ जई आविउ तोइ ॥५२५॥

[कामसेना कचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी काचली, रगिड राज-भुवनि 'समवली ।
 कीधउ सोहतउ सिणभार, 'उपरि एकाउलि मोती-हार ॥५२६॥

१. 'ऊतारा भणी, अणतेडिउ आविउ आपणी' भा. २. 'शामइ' भा.
 ३. 'समाल' भा ४. 'इसि' भा ५. 'ओढणि दीधी' भा. ६. 'केरी' भा. ७. 'तीणइ
 दीठइ भा. ८. 'जई वलगी' भा. ९. 'हूऊउ चतुर चालवा सचति, तव जू-
 ठाणइ गिउ मन-माति' भा १०. 'आराधण' भा ११. 'साधरी' भा १२. 'उरि' भा.

पात्र राउ ईमो पातली, साधिदं संपरदाउ नइ सगो ।
चतुरि चिहुदिसि घालइ द्रेठि, चहुटइ साम्हउ ३मितिउ गेठि ॥५२०॥

[थोष्टीए पातली जोई]

३तेठिइं सो बोलाओ नारि, रंगिइं जाती राज-दूआरि ।
रुइउ रतन-जडित कंचूउ, देखो नर निरखतउ हूउ ॥५२०॥

[घोरो मां गयेनी नांपत्ती घोतली]

निरखी उलसीयां अहिनाए, ३तु हूउ युगति विमामइ जाण ।
रा मदिदि मानेतुं पात्र, किम एहि-सिउ ३पडावइ खाउ ? ॥५२१॥

[महाजन थोष्टी पासे फरिधाद]

पांच सात तेडी आवंत, मनि आपणइ विमामिउ मंत ।
नुहि एकला जि पुरुष प्रभाव, ३मिली महाजनि कीजइ राव ॥५२०॥

[महाजन थोष्टी नाम]

तेडिउ तेजपाल ३तारसी, तेडिउ ३धांधउ नइ धारसी ।
अहिलउ धई नइ वीरम तेडि, ३जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३१॥

१०तेडिउ संतिग ११सामल सार, आवड, १२धांहउ अभयकुआर ।
पाल्हउ १३पासनाग जसनाग, माहुव मोहन नइ बरणाग ॥५३२॥

१४धाईउ धीधु नइ जसराज, पेशु पुनुसाह महिराज ।

१५हाडु हरपति अनइ हरराज, हासु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

१. 'मागइ ति' घा. २. 'जोई बोलाइ' घा. ३. 'चहुटइ' घा. ४. 'एइ' घा. ५. 'सरायू' घा. ६. 'मेल्या सामंत' घा. ७. 'तेजसी' घा. ८. 'धाणिय' घा. ९. 'नही युगति जे कीजइ नेडि' घा. १०. 'सोसउ' घा. ११. 'ना. साहारा' घा. १२. 'भोअउ' घा. १३. 'पासउ घामउ माल माहण केहूउ' घा. १४. १५. 'घा' छोटी 'घ' मां नथी.

१राजु भोजु नइ वलीकु जगु, नाइउ नीसल नरपति नगु ।
घरणिग धारण ताहरू काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

२आसड पासड पूनसी सेठि, मिलिउ महाजन वडली-हेठि ।
यमक्या सवि चुहटानी वाट, हूं हूं ३करी सगरेइ हाट ॥५३५॥

['हाट-माहि पाडी हुइताल'] हाम लामो हरने

४हाट-माहि पाडी हुइताल, चाल्या जेकामसेनाना काल ।
माथू धूएइ वुहरइ ५माम, ६गू गलि करी बीहावइ गाम ॥५३६॥

७नुमेठि मैलावउ करइ, ८राउलि जई पोकारव करइ ।
९रायगणि जई ऊभा रहइ, १०नामइ काव, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा-प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज : "मिलिउ महाजन केहा काज ?" ।

[अष्टी वचन]

तउ श्रीमुखि बोलाविउ सेठि, "तम्ह ऊमरि कुण १जोइ कुद्रेठि?" ५३८
"स्वामि ! कुद्रेठि न जोइ कोइ, अम्हे वाणीए न वसिवू होइ ।

२जे जोईइ ३निर्भय नइ काजि, ४वारी हुइ ते ताहरइ राजि॥" ५३९॥

[संक्षिप्त वचने आशक्ति राजा] ५३९॥ ५४०॥

सालिवाहन समस्या लहइ, नद लोकनइ निश्चिइ कहइः ।

५"बीहता काई म ६करिसिउ माम, निर्भय ७थ्या भाखउ नर-नाम" ५४०

१. 'या नीनी' या मा नयी २. या सीटी 'घ' मां नयी ३. 'करइ' या.
४. 'हाटि गवे' या. ५. 'सान' या. ६. 'गूरि' या ७. 'हाहुलि साहुनि
त पोकरइ' या. ८. 'राउ भागलि' या. ९. 'सिर नामइ' या. १०. 'करइ'
या. ११. 'वारिइ काजि, पदइ देव ! ताहरइ' या. १२. 'बोमु' या.
१३. 'यई हुइइ भाखउ नाम' या.

“नरवर ! नर तोह नाम न होइ, ^१कंदरप-कटफ कहइ सह कोइ ।
^२तेह-तणइ उर-मंडण अति, सरव समोप्पइ हूं ^३तिहि हति ॥” ५४१

[राजा क्षालिवाहन-वचन]

राइं मा योनावी रमणि : “कहि, कांचनी समोपी कवणि ? ।
 पूछया-तणउ ^४पडूतर नाप, तू मूली घाल्यां नही पाप ॥” ५४२॥

[कामसेना-वचन]

तीणि ^५वचनि चमकी तइ चिति, “स्वामी ! सांभलि अम्ह घररीति ।
 उत्तम मध्यम लामु भला, साध चोर कहौइं केतला ? ॥ ५४३ ॥
 भाठ पुहुर एकि आवइ जाइ, मोला भूपति ! पूछइ कांइ ? ।
 वाट, वृक्ष-फल, नइनूं नीर, नयर-^६सोहा सिणि-तणूं दारीर ॥ ५४४ ॥
 *संतति सुपुरिस-केरी दानि, स्वामी ! सविहूं सरीखा मानि ।”

[भद्रसत्त्व राजा]

तीणि वचनि रीसाव्यउ राउ, काममेनाइं कीधउ कुपसाउ ॥ ५४५ ॥
 इडइ ^७बोलिइं नापइ राइ, मारी कुटी पूछउ माइ ।

[चोरी नूं घाल]

राज-दूतइ रा-भायस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ॥ ५४६ ॥
 निवड बंधि बाधी-नइ नारि, मारइ महिला विसमे मारि ।
 इम विनडो ती न कहइ वात, मूली-तणो पूछमु ^८हुई ^९साव ॥ ५४७ ॥

१. ‘कूडू’ कपट’ भा. २. ‘तेहनु उरि जे मंडण मछइ’ भा. ३. ‘ते पछइ’ भा. ४. ‘तू उत्तर’ भा. ५. ‘वातइ’ या चमकी चिति’ भा. ६. ‘सालि’ भा. ७. ‘सुपुरिस दाता घणा छइ’ भा. ८. ‘पूछो कहइ’ भा.

वाजि १काहल लोक घण मिल्या, एकदंति-नइ कहिवा चल्या ।

[एकत्रित गणिका-नाथ]

एकदति ठठी उद्धसी, मिली भेलि गणिका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हासलदे २हरखली नारी, सीगालदे सोमलदे सवि वारि ।

काऊं करणू नइ काहली, नागलदे नामलदे भली ॥५४९॥

साऊ ३सहिजू नइ सहिवली, बाळू भीणलदे बरजली । २१६

४नागू नायकदे नागिणी, माजू माह्णणि ५नइ कमिणी ॥५५० ७

राजू रतनादे रूपिणी, भाऊ भावलदे रखिमिणी । ८ ९मिणी

लुहडी बडी १०विलसिणी घेणी, ११राज-भुवनि प्रावी रुणभूणी ॥५५१

[गणिका-समुदाय राजसभा-प्रवेश]

१रायनइ सवे दिइं आसीस, सु दरि २गाढउ ठाकिउ सीस ।

३“राज! ४राड-परि सिउ रोस?, कामसेनाइ कुण कीधउ दोस? ॥५५२

सुली भणी चलावी स्वामि !, ए आचार अछइ तम्ह गामि ।”

[राजा-वचन]

राउ रीसाविउ बोलइ इसिउ, १“का रे २राहु! पूछउ किसिउ? ॥५५३॥

सातउ चोर, नइ थाइ साध, अनइ वली पूछउ अपराध ? ।

नयर-सेठि-केरी काचली, घर ३फाडिउं घरवा रत ४फनी ॥५५४

१. 'नागि' घा. २. 'श्रेणि' घा. ३. 'कामलि किता,
सेतू सीमिणी जल्हणि जिती' घ ४. 'सूदवदे' घ. ५. 'नाकू' घा.
६. 'कारेमिणी' घा ७. 'मुहासणि' घा. ८ 'रगिइ राज भुवनि मवि
वली' घा. ९ 'बूटी' घा. १०. 'माऊइ मादड' घा. ११. 'नाय किस्सु'
ए' घा. १२. 'कान कहिवउ' घा १३. 'भाइ' घा. १४. 'बनो' घा.

[तमार-पह सदयवरस-गुट]

॥५॥

तं सभलि 'तव चडिउ तलार, बोलाव्या ओलगू अपार ।
 चोटि घरीनइ बहु बांधिउ बांधि, असि लोह-सिउं आहणु कधि ॥५६३॥
 चिहु दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहइ लाकड लेई वल्या ।
 एक तणो ऊदालो डाग, सूदइ सविहू भाग आग ॥५६४॥
 'हण ! हण !' भणो, लिह हयीभार, हाकइ ताकइ घाइ अपार ।
 जे सुमड भला ते पाखलि 'फिरइ, आघउ' थईनइ घाउ न करइ ॥५६५॥
 हठिइ चडिउ तलार हाकलइ, जे जीव राखी 'रहज्जो' कलइ ।
 मूँटि घरी मनाव्यउ भाक, कोटवालनू बाढथूँ नाक ॥५६६॥
 "जा बापडा ! म बोलिसि बर्व, गाढा सविहूँ उतारूँ गर्व ।
 भा ओलगू जि विहूँ बलउ लहइ, तिह मारता किम कर वहइ ? ॥५६७॥
 मोकलि जे गाढा बलवंत, 'मोकलि जे सूरु सामत ।
 मोकलि राउत रणि बाउला, मोकलिजे अगि ऊताबला" ॥५६८॥

[तमार-विमार्ण]

बली तलारि विमार्सिउ इसिउ, "छेदिइ नाकिइ 'छूटीइ किसिउ ?
 अउ नरवर बीनवीइ आम, तउ मू ठाकुर' फेडेमिइ ठाम ॥" ५६९॥

[राजा-प्रति निवेदन]

अण मोकली जणाविउ: "स्वामी!, 'दंत्य क्रिदाण्य भाउ सग्रामि ।
 कामसेना-ना बाढया वध, अम्ह-सिउ कीधी आलि' 'अणव' ॥५७०॥

१. 'तुहि' घ. २. 'सदय' घा. ३. 'पीर' घा ४. 'ममह' घा.
 ५. 'यई कोइ नवि आगमइ' घा. ६. 'अ नि जे घाउला' घा. ७. 'बीबह' घा.
 ८. 'कोइवि' घा. ९. 'राउ' घ. १०. 'देव' घ. ११. 'अणव' घ.

[नील-रूपाने संभलन]

कोटवाल-नू कारण सांभलित, चुहटुं चाली जोवा मिलितं ।
तिहि सायिडे-धित भावित सेठि, मूदउ दोठउ सूलो हेठि ॥४७१॥

[सद्यवत्स-उपस्थिति-जन्य श्रेष्ठी-वचन]

देखी मूदु सेठि टलवलित, मान उपगार विमासी वलित ।
“मुणि साहसिक पुरिस मुपवित, ए कुण भाल चडाव्युं मित”^१ ॥
सूदु भएइ: “ए भाल म मानि, मइ कीधू नर-वहिस निदानि ।

[भावन-गुह्यवत्त-वचन]

“समलि मित्र ! माहरू भूभ, थोडइ कहिइं घणु तूं बूभ ॥४७२॥
हापि ताली बेई जाऊ देखतो, किम भूभ भ्रा ऊबेतता ? ।
कामसेनि-नू विणसइ काज, पुरुष भनेर भावइ लाज ॥४७४॥
“नूकइ सर्यापि दिन ५व प्रभाति, महिला मरइ, नही मनि भाति ।
भाट-गामि छइ मुभ मानवण, कागल जाइ तउ हुइ जाण ॥४७५॥
मुभ पहिनाए-तएइ भालापि, कागल लेई कागलीया भापि ।
दोमी-तणू निरोपम नाम, जिहाँ यापिणि सुंभया छइ द्राम ॥४७६॥
ते हू माणीमइ भोफलापि, जे तू चीति ‘वहइ ति थलापि ।
उछउ अधिकउ न बोनि धील, नर निरतउ भोकलइ निटोल ॥४७७॥

[भावन-वत्त श्रेष्ठी]

सेठि विमासी जोई ‘वान, ए ‘को बारू धीर विख्यात ।
इएइ ‘मह कीधउ उपकार, ‘हिव वलतउ यातू विचहार ॥४७८॥^२

१. ‘मुण गुण साहसीव’ मुपवित’ या. २. ‘मुणहिइ भाल विनाय’ या.
३. ‘हइ’ या. ४. ‘इंवर’ या. ५. ‘निरोप’ या. ६. ‘वसइ’ या.
७. ‘म’ या. ८. ‘ता’ या. ९. ‘यु’ या.

[अर्थ- सदुपयोग]

जिणि अर्थिइं न भाजइ भीड, जिणि न टलइ परनी पीड । ॥
मागण मित्र काजि टालोइ, ते संपति सघली वालीइ ॥१५७६॥

अर्थिइं सघली सीझइ काज, अर्थि आपणि कीजइ राज ।
अर्थिइं सविहि ठांकीइ असन, देई अरथ विछोडि सुमित्र ॥१५८०॥

[वणिक्-सहनशीलता]

मेलइ धारिया विवसा जोडि, वेला ^३लाघी वेचइ कोडि ।
जीव-तराउं जे जीवीय कहइं, तेहनउ वाढ वाणीउ सहइ ॥१५८१॥
बांध्या राउ विछोडइ वंध, पडी कुवेला ^३ऊडइ कंध ।
ठारि गाढिम नवि सीझइ अर्थ, तिणि वेलां वाणिउ समर्थ ॥१५८२॥
अमरडी मूँछ सेठि संचरिउ, राउत वली विमासण-अमरिउ ।
ईण विछोडया वेसिइं द्राम, तउ माहरी परिण भागी मोम ॥१५८३॥

[सदपवत्स साहस]

पाछउ तेडिउ भाई भणोः "एक बात संभलि अम्ह तणी ।
मुक्त छूटेवा-तणी अछइ आहि, कांइ वित्त वेचावूं तुम्ह पाहि? ॥१५८४॥
मौं हकारिउं न करइ किह्वार, तउ मोटु मानूं उपगार ।
अस्याय नीति नरेस संभालि, कामसेनि नई ^३कंदल टालि ॥१५८५॥
साव चोर आवइ इह वारि, चडिइं चोरि कां विनडीइ नारि ? ।
ए एतलूं करीनइ काज, कागल कापड मोकलि आज ॥१५८६॥

१. 'वेचो' आ. २. 'मावी' आ. ३. 'मोडी' आ. ४. 'वडिउ' आ.

५. 'जोसइ नाम' अ. ६. 'जु जु वार करइ विचार' आ. ७. 'स्यायवो
बात' आ. ८. 'कह घस' अ. ९. 'का नडीइ' आ.

राज-मंदिर, राज-मंदिर, सेठि संपत्त । ५७५२०-
ता राउ रोसिइं घडहडइं, कोटवाल कारणा परीछयउं ।
एक चोर नवि अंगमइ, सइंहयि सेनाहिव हि होच्छयउ ॥
नोरिण भवसरि पय लगि करि, पहु वीनविउ २राउ ।
बडोइ चोरि ३स्त्रीय विनडोइ, एहु देव ४अन्याउ ॥५८७॥

[सहायक-वचन]

‘अविपत्ति ! चोर एह नवि घटइ, ईणि कंचूउ जीतउ जूवटइ ।
‘आली चोर आपउवालि, तो लगइ ईणइ थानाक मूं भालि’ ॥ ५८८॥

[प्रधान आनोचना]

पहु-परधानि भालोचिउ इसिउं: “‘मूखयउ चोर आवेसिइ किसिउ
हणइ चोर सिउं आवइ हापि ? , एउच्छवल लीजइ हापि ’ ॥५८९॥
‘स्वामि ! किहारड न आवइ एह, तउ है ‘भवधिष धारउ छेह ।
पहिलू सेठि त्यात्र १पुरसिइ, पछइ मवानाग २द्रम्म आपसिइ । ५९०॥
ईणि आख्यइ ऊमंवल थाइ, ईणि आख्यइ ऊठी घरि जाइ ।
वरुम वीनती पहु परधान, ए एतलू दिउ मुझ मान’ ॥ ११४१॥

१. ‘ना गमई’ घ. २. ‘निषाउ’ घ. ३. ‘स्त्री’ घ. ४. ‘आइ पाउ’ घ.
५. ‘जंवि आली आगू’ घा. ६. ‘काडिइ नारी’ घा. ७. ‘मछोएल’ घा.
८. ‘अविपत्ति’ घा. ९. ‘यूर्यास’ घा. १०. ‘वित्त दोस’ घा. ११. ‘पा दूक’
‘दा’ मां नवी.

दीघउं मान सेठिनइ सही, कामसेनि 'कदर्य' न सवि रहइ ।

[सश्यवत्स प्रति श्रेष्ठो भावना]

मित्र 'तरणइ' मनि पूगउ रग, साहसि कि ओडविउं भग ॥५६२॥

"जा जा मित्र म आविसि पछइ, अर्थ^३ अनतउ अम्ह परि अछइ ॥"

[बारहट्ट-गृहे सावसिगा-परिस्थिति]

जा नयरि-थिउ 'नावइ' नाह, तां गयगामिणि माडिउ गाह ॥५६३॥

भाई भणी 'बोलाव्यु' भाट, बडो वार 'सगी' जोई बाट ।

'टली' गोल तव अट्टी आस, करउ पर-तनुउ पीहर वास" ॥५६४॥
पर-तनु

[बारहट्ट-वचन]

"बाई ! बोल म बोलि इसिउ, पीहर-वासु पर तनु किसिउ ? ।

'अति' उतावलि हुइ असूर, एता सही सुलक्षण सूर ॥ ५६५॥

[दूरजन-प्रशसा]

सूरउ सूरिज गलीइ राहि, सूरउ अगनि उदकि उल्लाइ ।

सूरउ सीह अजाडी पडइ, सूरउ दैवत सूरानइ नडइ ॥५६६॥

मरवा-सणा मरम छइ कोडि, 'इम' मरतां तम्ह लागइ खोडि ।

जउ चूकिसिउं स्वामी-सघात, 'तउ' हन्यानुउ मोडउ हाथ" ॥५६७॥

१. 'कटव' घ. २ 'तणउ जइ पूरिउ' घा. ३. 'अनूषउ' घ.
४. 'भावइ' घा. ५. 'बोलावइ' अ. ६ 'सग' अ ७. 'टली' गो मनु
छाँडो' घा ८. 'कह' घा. ९. 'अम्ह भरता तम्ह भावइ' घा. १०. तुउ तुम्ह
मोडउ हत्य' घा.

[सावलिगा-प्राणत्याग निश्चय]

‘गई समशानि सजाई करी, भाट-तणइ मनि पईठी २दरी ।
नीचु ऊंचुं चडइ अपार, करइ वेग नइ लाई वार ॥५६॥

[सावलिगा प्रतीम प्रार्थना]

देखी दिवस-तणी ३गति खीण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि ^{१५६५}त्रिव ^{१५६५}म नइ तरणि, ‘जनमि जनमि ४सूदा-पय शरणि’ ५
(दूहा मोरठी)

सूद ! तम्हारी साथ, थिउ आतरू २अति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिमा-३घणी । ॥६००॥

ऊने अंतरि एहि, तड पहिलू पामिउ नही ।
बाहण ३विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा साथि, जीव । मा हारी प्रीय-पखइ ।
ते जाणइ जगनाथ, नाह- विछोडया माणसा ॥६०२॥

ऊभी आस करेहि, भवला आहेडी-तणी ।
वरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइ ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसीकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसीइ ! ॥६०४॥

माणिक मूठि २भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह ३नावरइ देहि, दरसणि देखेवूं थिउं ॥६०५॥

१ ‘जइ’ या २- ‘मरी’ या. ३. ‘दिति’ या. ४. ‘मु’ मूदा-‘वरणि’
या ५. ‘छइ अति घणू’ या ६. ‘भणइ’ या. ६१० ‘य’ या दूक नवी
७. ‘विचिविडि सेडि’ या ८ ‘जसहि प्रायसि विछु रह प्रानीइ’ या
९. ‘नावरे’ या.

भासा-सूधी एक, पीहरि मेलही 'परणो नइ ।

१ भाज १ ऊचाट अनेकि, तिहनइ याइ ऊपापना ॥६०६॥ ५१।५।७।

सूदा ! सउकि सु राख, मनि भाहरइ काई नही ।

सहि समोवड १ लाख, कोधा आज 'अणोसरा ॥६०७॥ ५१।५।८।

जिणणी काजि दीह, आंक्या आवेवा तरणा ।

तिह लिखी तां १ लीह, करो १ कुडेरुं दाभिसिइ' ॥६०८॥

(चउपई)

जां सहस-१ किरण-नइ करइ प्रणाम, जां 'नारायण' भाखइ नाम ।

तां घसमसनउ १ धायउ घोर, आगलि दीठउ आविउ १ १ वीर ॥६०९॥

[सद्यबत्स-पागमन-घानः]

हुउ हरिख गहगहीउं गाम, बंदीजन १ १ फीटउ बदनाम ।

यातउ हूंतउ थापणि मोमु, ते अम्ह दैविइं टानिउ दोस ॥६१०॥

राज-बख नइ १ २ रुडां ठाम, आणी अवल समोप्या ताम ।

[प्रतिज्ञा-यातनाथ पुनर्गमन]

रहिउ राति निज नारी-ठाहि, चालिउ बली विहाणा-माहि ॥६११॥

मूंक्यां हाटि अछइ हथीआर, तिहि लेता १ ३ तउ लागइ वार ।

नागी वारइं विणसइ काज, ते लेई आवउं छउं आज ॥६१२॥

१. 'परह नइ' भा. २. 'तिह नइ आज अनेकि ऊचाटइ' घ. ३. 'साय'
घ. ४. 'साय' भा. ५. 'अणीसरा' भा. ६. 'नही' घा ७. 'कुमेर' घा.
८. 'कर' घ. ९. 'आविउ' घा. १०. 'आविउ वीर' घा. ११. 'टनीय
बदनाम' घा. १२. 'मूंडा' घा. १३. 'लेवां मू' घा.

याचा अविचल वीर दयाल, 'मांटीनउ मांटी मछराल ।
आवी ऊभउ सूली हेठि, 'राउति कसरारण कीघउ सेठि ॥ १३ ।

५३५ ५४०

[श्री-सन्नता]

सेठिइं मांडिउ अति अंदोह, 'आविउ छयल सगाडी छोह ।
जिम किम जाणत तिम नर वहत, लोक-मांहि पण-महत ज रहत
अति ॥ १४ ॥

हाकइ हसइ करइ किलकिली, आख्यां मोटा माणस मिली ।
'ए कावली तणी कुण मात्र ? मइ पाडया छइ मोटा खात्र' ॥ १५ ॥

[वचू-चोयं]

मानी चोरी हडहड हसिउ, राय-राणा-मनि विस्मय वसिउ ।
एह वात विमासण जिसी, साचू जूठू जोईइ वसी ॥ १६ ॥
कामसेनि 'तेडावी ताम, 'राय-मुहूतइ पूछी जाम : ।
'कांइ एहनू' छइ अहिनाण, जे पेखी भीखीइ प्रमाण ?' ॥ १७ ॥

[करवानाजित सद्यवत्स नाम]
३५२ ॥ ११ ॥

कामसेनि आण्यउ करवाल; त 'देखी चमकिउ भूपाल ।
'वेगिइ अखर जोइ जाम, ती 'श्रीसद्यवत्स'-नू' नाम ! ॥ १८ ॥
[शालिवाहन-सद्यवत्सपरिचय]

जाण्यउ खडग जमाई-तणू, राइं वयणि 'विमासिउ' धणू ।
'आपोपइ थाइ असवार, आविउ उपरि करि गजमार ॥ १९ ॥

१. 'मुणस मनइ' धा. २. 'सही ऊत्तकल' धा. ३. 'आवी मोटा राडो
मिली' धा. ४. 'बोलावी' धा. ५. 'रायमुहूतइ सिउ भूषइ माम?' धा. ६. 'देखत
माडीइ मठाण' धा. ७. 'वेनि' धा. ८. 'विणसइ' धा. ९. 'आण्यपइ' धा.

माट-पांहि पूछावइ भूपः "कहि, खांडानूँ किसिउ सरूप ? ।
मूँ-सिउं जूटवइ रमिइ जूमार, खांडउं लेई वाल्यउ भार ॥६२०॥

ऊभां 'करि न डाढ काढीइ, ऊभां सिंह 'न नह बाढीइ ।
ऊभां साप न मणि मोडीइ, ऊभां मुद् न खांडूँ जोडीइ" ॥६२१॥

[दोर-धारण युक्ति]

पहु 'पूछइ: "सांभलि परधान !, तूँ तां बहु गुण-बुद्धि-निधान ।
ते प्रपंच ते बुद्धि कराइ, जाणइ ए जीवतउ धराइ" ॥६२२॥

तउ मुहुतइ घाठविउ मर्म, जे हाथीया सीखवीआ सर्म ।
'ते ते दोई नइ चापीइ, 'सु'डाहलि सरिसउ भांपीइ ॥६२३॥

ताउ मयमत्ता मयगल गुडया, जे 'मड भला ते उपरि चढया ।
भांकुसि हण्या न भाया थाई, 'वसूअ तणी परि नाठा जाई ॥६२४॥

सिंगी-'नाद तीणइ' कोधुं ईम, जिम 'हाथी छांडो ग्या सीम ।
हाथी-तणी जि हूँती हाम, तेहू 'पोढी भागी माम ॥६२५॥

दसनायक 'ध्यु रोसायकी, पाखलि धिउ बोलइ पायकी ।
'स्वामी ! 'सइ'हधि बीहू आपि, 'ऊभा-ऊभिलिउ'शिर कापि ॥६२६॥

पोताला
मते.

१. 'गज' घा. २. 'बाघ नमुह' घा. ३. 'जपइ' घा. ४. 'ते जोई
पोई नइ' घा. ५. 'सुडिइ-स्यु भाती' घ. ६. 'बोई' भना' घा. ७. 'दोर
तणी' घा. ८. 'तणी परि बाढइ' घा. ९. 'मत्ता' घा. १०. 'मोटेरी' घा.
११. 'स' घा. १२. 'सम्हारइ' घा. १३. 'जिम हेतो' घा.

[चोर वचन]

घोडउं मागिइं बोलइ चोरः “हाक्या ऊभा घांगणि मोर ।
जन्म लगइ जे खावूँ राज, हिंव वीहूँ लेई करसिइ काज” ॥६२७॥

बंधण घाल १अनइ छो-पीड, संकटि समइ प्रजानी भीड ।
बीडां वाट २जोइ तिणि वार, तिहि मुहि ३ आणी घालउ छार
॥६२८॥

तीणि बोलिइं दलनायक ४बलिउ, परिगह असि ऊभा लेई चलिउ ।

१८ [मुढ वचन]

“ढमढम विसमा वाजइ ढोल, उर कमकमइं ति कायर ५निटोल
॥६२९॥

भळव भळव भवकइ भालोह, घसमसंत घसमसिया जोह ।
“घूसण-तणां कसण कसकसइ”, गाढइ गुणि सीगिणि असत्रसइ
॥६३०॥

१ सावलोह सिरि तोमर तीर, भाले १०सिउं भेदीइ शरीर ।
११जे मच्छरि मुहि आवी चढइ, ते पायक पग आगलि पडइ ॥६३१॥

ऊदाली लीधां हथीयार, कोटवालना जीवन सार ।
जे भडनउ १२गाढउ भडिवाउ, तिहि टाली नवि १३घातइ घाउ
॥६३२॥

दल-नायक बल बोली ब्रह्म, आधू यिउ आरोली सहू ।
घोडे-स्यूं घोल्या अस वार, भश्व पायक नवि लाभइ पार ॥६३३॥

१. ‘मीयनो’ घा. २. ‘जि जोइ वार’ घा. ३. ‘छाणो’ घा. ४. ‘परप-सिउ
ऊमालो बल्यु’ घा. ५. ‘हमढम ढमकपा’ घा. ६. ‘कोल्ल’ घा. ७. ‘जे दोठइ
सहू पामइ मोह’ घा. ८. ‘घांग’ घा. ९. ‘मवे’ घा. १०. ‘नवि’ घा. ११.
‘खाये घा उधि जे मुहि’ घा. १२. ‘भोटउ’ घा. १३. ‘वालइ’ घा.

हडहड चोर हाकतां हसिउ, घुरि सेलहत सूली-^१तलि घसिउ ।
^२थोडइ वादिइ^३ विगूतउ घणउ, केवलउ एक कांचली-तणउ ॥६३४॥
 भागी माम भला भड-तणी, राउत सवि कीघा रेवणी ।
 ऊलिउ माणस-मांहि तलार, ^४दल विदलिउ नमिउ गजभार ॥६३५॥

[वावन बीर सह युद्ध]

तां सविहू-नुं ऊतारिउ नीर, ^५हवइ हकारउ वावन बीर ।
 प्राव्या बीर सवे ऊपडी, झलकइ^६ भांति त्रिपा खीत्रडी ॥६३६॥

(वस्तु)

तीणि अवसरि, तीणि अवसरि, कलह-पीय तेणि ।
 नारदि न्यानि परीछिउं, मृत्य-लोइ को करइ कदल ।
 एक गमइ^७ नर एकलउ, ^८मिलीयति बीजइ^९ गमइ^{१०} घण दल ॥
 पंच बीर पय भरि करीय, बली विलायउ वद ।
 केवु ^{११}तव कंचू-तणइ, संकटि पडिउ सुद ॥६३७॥

(चउपई)

नारद-वयण सुणी नर पंच, आपापणा करइ परपंच ।
 नर निरतइ नींसरीआ विमर, ^{१२}जिहनी आलि न सहीइ अमर ॥६३८॥

घर छांडो गयणंगणि गम्या, पुर पहिठाण ऊपरि भम्या ।
 सघलूं सेन विमासइ इसिउं, परवति पाँख नीसरी कि सिउं? ॥६३९॥

१. 'सिउ कसइ' भा. २. 'थोड वाव विगोउ' भा. ३. 'दल बीनम्य' घ.
 ४. 'तउ बोसाविया' घा. ५. 'कंतेणि' घा. ६. 'मइ' घा. ७. 'बीजइ'
 गमइ दल सहित नरवर' भा. ८. 'बीज सेई नर वस्तु' भा. ९. 'कांधू तल-
 तणउ' भा. १०. 'जिहनां प्राण रूप छइ अमर' घा.

जा पूडु नइ 'सूअ' जडया, ता पांचइ आबो पांग पडया ।
पायक छता न भूमइ नाय, हवि तूँ जोइ अम्हारा हाय ॥६४०॥

आगइ एकनइ धरिवा आहि, अग्रनइ पच पुहुता पड माँहि ।
अति ऊचाजइ अजन देह, किरि महि-मडनि आव्या मेह ॥६४१॥

घोर घंघार अघारु करइ, दिनकर-सणा किरण आवरइ ।
सेवा लीयउ अवरतावइ सीत, यइरी-तर्णा कपावइ चीत ॥६४२॥

मूली-भजण भजइ अग, जिणि दीठइ पायक हइ पग ।
भजउ अमउ धेहू भड मला, 'ऊडो तइ सिरि तोलइ' धिला ॥६४३॥

इस्या बीर सूदानइ साथि बावन सरिसा आवइ बाथि ।
अणी धार नवि लागिइ अगि, बीजू भूमि न आवइ अरणि ॥६४४॥

ऊभा भड भू टि लिह सोह, सीह आगलि कुणजीपइ जोह ? ।
राइ तइ हयवर हायी बहू, 'आयउ पिउ आरौली सहू ॥६४५॥

निवड निहाय घरणि धमधमइ, वू वारव गयणगणि गमइ ।
लेहा रवि नवि सूअइ सूर, रणि विसर्या बाजइ रण-तूर ॥६४६॥

मयमसा दतूतल मोडि, 'थानकि-थका ऊपाडया कोडि ।
घोडे-सिउ' घोल्या असवार, रथ पायक नवि लाभइ पार ॥६४७॥

१. 'साथिइ' जडया' घा. २. 'पांचइ' 'अण' घा. ३. 'सणु' तेज सहरइ'
घा. ४. 'पडावइ' घा. ५. 'ऊपरि-थ्या वे तोलइ' घा. ६. 'छगि' घा.
७. घा. टूँक 'आ'मा न थी. ८. 'दीइ' घाउ कडमइ' घा.

जं वयण पयासइ सदय सार,
तिणि सालि-राय साणंदकार ।
बोलाविउ सुत सकतिकुमार,
करि वच्छ ! असजाई म लाइ वार ॥६५६॥

[सावलिगा.पानयन प्रादेश]

छइ कुमरी *कविजन-तणइ प्रावासि,
*प्राणू करेवि *प्राणउ प्रावासि ।
सु तस ततसिण कुमरि किद,
पालखी *परियह सत्य लिद ॥६५७॥
[उत्सव] परि धाम्

हुई तलीया तोरण हट्ट बट्ट ।
संपत्ता *शक्ति-रूपिणि भट्ट ।
चउमासि जल-राशि जिम्म ।
किरि कमल नयरि पुहतु तिम्म ॥६५८॥
पय लगवि बहिनर किउ प्रणाम ।
प्रासीस भखय भणि दिदु ताम ।
सिधासणि संधप्पी सुवेस ।
बहु उत्सवि पट्टणि किउ *प्रवेस ॥६५९॥
(गहा)
संपत्तो सदयवच्छो, समुरालय सावलिगि-संजुतो ।
अदिणुण भणागए रवि, *चित्ति न चाहिज्ज ए धीरो ॥६६०॥

१ 'ता तणइ सुधि' भा. २. 'वेगि साउ सि वार' भा. ३. 'वंकीजन' प.
४. 'प्राणू' करि' भा. ५. 'प्राणू सम्ह' भा. ६. 'सुखावण' भा. ७. 'परि
कुमार, संपत्त भूयण सकतिकुमार' भा. ८. दूक 'भा.' मां नपी.
९. 'चित्ति भावधारा मां पच्छित्तह पूर ए मत्तो' भा.

कीय मित्त भण-गमंतय, विप्पो वणिक्क इक्क खित्तिउ ।

तिहि 'परिसत्त-परिच्छण, अवलोइ कम्म घण घोर' ॥६६१॥

जुवटइ वत्त विसुणीय, पंथी पासंमि 'एक्क अप्पुवी ।

नित्त महु नित्त घाह, विवहारी तणइ तं सुपुरो ॥६६२॥

अनिच्च निच्छ तवइ 'नवे जणि, जा लिज्जइ चरणि च'पिवि हेइ
मज्झ'मि ।

तां ते पुरिस पहिल्लो, पुहुच्चइ ए भदिरे 'मडउ ॥६६३॥

(इहा)

'इम भवगमी अणेइ दिण, पिउ वाणाउ विलक्ख ।

जे परिमालइ 'पिंड इह, तिहि दिउ' वित्त लक्ख ॥६६४॥

[शब्दाह प्रमंग]

(चउपई)

सुणी वात किलकिलिउ वीर, सद्य नरेसर साहस-वीर ।

मित्र-तणउ मेलावउ लेऊ, तीणइ नयरि 'भाव्या तेऊ ॥६६५॥

जा आवी ऊनाह किद्ध, रांधिणिनइ धरि 'रांधण दिद्ध ।

तां नयरी डांगरा-निनाद, साते सेरी तेह 'जि साद ॥६६६॥

१. 'पुहुत्ता' भा. २. 'एय' भा. ३. 'नित्त नित्त' भा. ४. 'नव जग जालय
करइ चरण संपत्ति' भा. ५. 'मेरु' भा. ६. 'इम इम गमीय मजेग भा.
७. 'पंडिमह' भा. ८. 'भाषिउ घइ' भा. ९. 'रांधवा' भा.

अइलिइ जई १ छीतउ डांगरउ, “कां रे अति गाढा गांगरउ ? ।
तउ आपे बापडा वि लास, जउ ए दही देखाडउ रास” ॥६६७॥

सेठि विदाधितु योनइ वयणः राउत अरक्त थयां वे नयण ।
“जउ लहुडा वालइ तूंह बाप, तउ अम्ह काई अधिकू आप”
॥६६८॥

“अधिक ऊछानी ए कुण बात ?”, “एक-तणइ कुमरि दिउ रात ।
जे ए वडउ टालइ ऊचाट, तिहि-सिउ” “भव मगपणनी वाट” ॥६६९॥

[शाकिनी-मंतापित विप्र-कन्या]

करी सेठि-सरसी दृढ बात, चाल्या अतिहि ऊचलिवा तात ।
तां पुरोहित-घरि जागर पडइ, कुमरि कूंआरी शाकिनि नडइ
॥६७०॥

वरस दिवस लगइ बाजइ डाक, ऊपरि गुणीया हाको हाक
बापिइ बेटी छाडी आस, टालइ दोस परणावू तास ॥६७१॥

सदयवच्छि जई जोई द्रेठि, आबो पात्र वईठउ पग हेठि ।
“जास हाधि हरसिद्धि-हथीयार, तिह-सिउ” अम्ह केहउ अहंकार ?
॥६७२॥

नीरी करो दइसई दीकिरी, साथिई वि तिह कारण वरो ।
आव्या सेठि-तणइ अहिठाणि, ता ते महुं “पडयू” भंपाणि ॥६७३॥

१. 'लछो' भा. २. समे 'गाढइ' भा. ३. 'विद्योगिई' भा. ४. 'रोति
रगन थियां नयण' भा. ५. 'तेह नइ' भा. ६. 'भावह' भा. ७. 'चारिकु' वर
विम्यात' भा. ८. 'घोस' भा. ९. 'जडिउ' जंगणि' भा.

काढो कुकई काँवलि वंवि, एकइं खोखूं कोधूं कंधि ।
 सूकट लेई लाखिउ समसानि, भहाजन भएइः “ए विस्मय मानि”
 ॥६७४॥

सेठि अणावि अगर नइ आगि, ऊठी काजि आपणइ लागि ।
 राति निचांतु निद्रा करे, बोल्या बोल सवे सांभरे ॥६७५॥

[सूदा धवन]

सूदउ भएइः “सुणउ अम्ह मित्र !, ए दीसइ छइ देव ^२चरित्र ।
 इण्हि कोई वसिउ बैताल, ^३आज लगइ इणि मंडिउ आल ॥६७६॥

[प्रथम प्रहर कायं]

(छण्य)

पुहुरि पहिल्लइ विप्प, राउ जागंतु जोइ ।
 तां नांस भरि नारी, मसाहणि सुलो-तलि रोइ ॥ २५५ ५५
 “परिठवि पुठि दया, ^४पर दया मर पत्तउ ।”
 कामिणि पूछीय कज्ज, कंधि घरि ऊभउ हुंतउ ॥
 भोजन दियंत मिसि डाकणी, खाइ मांस मच्छरि घडीय ।
 उत्तम तिवार असि बावरो, करिय चूडि ऋद्धि पढी ॥६७७॥

[द्वितीय प्रहर कायं]

बीजइ पुहुरि प्रधान-पुत्र, बलवंत बईठउ ।
 तां उल्हाणउ भगनि, तेज दूरिद्विय दिट्ठउ । ३५५ २०६

१. ‘बोखट’ पा. २. ‘देव’ आ ३. ‘दाणव देत हसिई विहराल’ पा.
 ४. ‘परदर्द’ आ.

पायक कज्जि पहुत, प्रेत परवरियउ परयलि ।
विचि खीचड कलकलइ, बद्ध बाबीस कुमर तलि ।

मुक्क स्वामि होमसइ पच नउ, एकरु गहीय बीजा गहिसि ।
 घसि लिद घगतउ लक्कइ, तीणि ऊडो म्या सइं सट्स ॥६७॥

[तृतीय प्रहर कायं]

पत्तीय श्रीजइ पुहुरि, दंत्य नयरी दिसि दिक्कइ ।
 विनर वसइ बधि, पूठि थ्यु परिकम्म पेखइ ॥

सत ३कमाड ऊघाडि, राय-सुति सूती लीघी ।
 भाणी आपण पासि, युवति जागती कीघी ॥

“मुक्कवरि कइ समरि जीण ३ऊगिरइ, पिहु श्रीजउ समरु सुमट
 ३पड छांडि ऊमु ३असिवर सरिसु, कीय ककाल विखड घट ॥६८॥

[चतुर्थ प्रहर कायं]

चउथइ चतुर चकोर, वर वसघर जगाइ ।
 ता ,ऊदठवि महु मुरेडिउ, जूम-जीम ३उदठवि मगगइ ।

मुह भणइ, “तन सार, पट्ट ३कवडी न कड तह ।”
 तीणि ततखिणि आण्यउ पाट, जिणि राय रमतह ।

सिर-बमल हराविउं हेलि रसि, प्राण प्रेत-गृह टालिउ ।
 त्रिहु मित्र ३अजगिइ, एकलइ ३तिह ति पिंड प्रजालिउ ॥६९॥

१. ‘वइसइ’ या २. ‘बमाइ’ या ३. ‘ऊगरइ’ या. ४. ‘पडछाहि’ या.
 ५. ‘सूर जिघिउ’ या ६. ‘सिह मोडवि मडड’ या. ७. ‘सर्ग’ या. ८.
 ‘कहीय’ या ९. ‘अजग’ या. १०. ‘तेणि महुं पर’ या.

(चौपई)

जाग्या मित्र पेखइ परोहडूं, तां तीणि बलइं बालिउ मडू ।
च्यारि पुहर सेविउ समसान, ऊठी कीघूं सविहूं सनान ॥६८१॥

[श्रेष्ठी-प्रति प्रतिभा-पालन-कथन]

करी सनान बोलाविउ साह, “‘आपि वित्त, नइ करि विवाह ।’
सेठि भणइ: “तम्हि कूडूं किद्ध अम्ह देखतां दाध नवि दिद्ध” ॥६८२॥

मिल्या रोस-भरि राउलि गया, राइं रुडी परि पूछिया ।
विए संकेत न मानइ सेठि, “काई उदाहरण दाखु द्रोठि” ॥६८३॥

[शबदहन-प्रमाण निदर्शन]

पहिलइ पुहरि जि जागिउ ताह, तीणिइ भाणी भाखी बांह ।
बाढी चोरि जि चूडा काजि, ते कूडूं मानिउ महाराजि ॥६८४॥

“ए राणी-नउ हुइ हाथ”, सुणि वात सोधइ नरनाथ ।
दोसइ नही निशाचरि भमी, किरि आकासि भणी ऊममी ॥६८५॥

बीजे तउ बोलिउ तिणि वार, कां रहीहि राजकुमार ? ।
सहवुं काजि सोधावइ सामि !, *देव न दोसई कोणइ ठामि ॥६८६॥

नयर-नराहिव सोधइ कुमर, पर प्रासाद अनइ वर विमर ।
एकइ तां बीनविउ अधीस, *पउठया पोसि *बाहरि दावीस ॥६८७॥

सुणी वात स पुहुत, दूत, सूतउ *ऊमाडिउ प्रपूत ।
जाणइ वितर विलग्यु वली, ऊठया कुमर सवे खलभली ! ॥६८८॥

१. ‘मागि वित्त अनइ’ आ. २. ‘दाखण दीठु’ आ. ३. ‘दोरी सूडी-
नड’ आ. ४. द्रंक ६८५ ‘अ’मां नथी ५. ‘पठया’ आ. ६. ‘बीर’ आ.
७. ‘ऊगम्यु सूत’ आ

१२ ॥ ॥ आदोसर पासि, बर्दसार्थी प्रभि आपण पासि ।
तउ चेढा बोल्ह 'सुणि तात !, ए संकट नी विसर्गो बाट ॥६८॥

३कुनदेव तिजे वीथी सार, पूंठिइं पाठवीआ पठिमार ।
पाणोवल जउ भावइ पछइ, तउ ते 'सवि सपार्थी भछइ ॥६९॥

४दांसइ बितर 'भरि करवाल, लीछू साकट भापी भाल ।
तोणइ भइरवि भडकाव्या भूम, 'सवि ठळी आकासि पढ़न ॥६९॥

एक एक पाहिइं प्रति भगा, अधिपति-तणा पुमर 'एतला ।
सवि 'ऊगामो साहय धोरि, पोलि लगइ पढ़वाडभा वोरि ॥६९॥

तउ श्रीजा-प्रति पूछइ 'पढ़, कारण कर्हिंसइ कुमरी १०'पढ़ ।
भात कमाड तणि करि सार, किम ऊवाडभा विमर ११'द्वार' ॥६९॥

तीणि वात यमिउ १२'वि प्रवाद, कुमरी काजि कगवइ साइ ।
निद्रादूई मराहिय-मच्छि, पिता पामि ते पुहुनी १३'मच्छि ॥६९॥

[कुमारी-स्वानुभर भयन]

[वस्तु]

'तात ! सभलि, तात ! संभलि, बान ति जि बीत ।
हरी निशाचरि निशि समइ, निह-भरि निज सयणि सुतीय ।

१. 'धाव्या धापीसर धावासि, बइसाइ प्रभ' धा. २. 'काई कुम
देवी' धा. ३. 'सपना' धा. ४. 'वाह्या' धा. ५. 'सवि' धा. ६. 'तिम ठळवा
दिम एक महंता' धा. ७. 'केतला' धा. ८. 'ऊवाह्या' धा. ९. 'एह' धा.
१०. 'पढ़' धा. ११ 'विचार' धा. १२ 'रा विप्रवाद' धा. १३ 'मच्छि' धा.

कांमिइं वरि कांई को समरि, 'लेई विवरि खित्तिय ।

पडछाहि ऊमउ सुमट, ते मइं समरिउ स्वामि ! ।
तीणि ततलिणि दैत 'दलि, एणइ पुहचाडी ठामि ॥६६५॥

[चउपई]

हणिउ दैत्य जोवा 'जण घणा, अधिपति पाठविया अति घणा ।
विवर-मांहि ते पडिउ प्रचंड, दीठउ दाणव-देह विलंड ॥६६६॥

जस भुइं पुहरि पोलि दीजती, जस भुइं कोडि जतन कीजति ।
ते-भय भव सुधि टालणहार, ए भ कुमरी करि अंगोकार ॥६६७॥

सदयवच्छ बईठउ ते सूर, जउ बोलइ तउ भावइ 'भूर ।
श्रीजउ पुत्री जउ 'जण लेउ, 'सुणीय हुई मनि हरखिउ तैउ ॥६६८॥

चउपई ठामि जि जागइ सुमट, ते नरवरि बोलाखिउ निकट ।
'तम्हे तम्हारुं' कारण कहउ, आणइ राजि धणी-धिया रहउ"
॥६६९॥

तउ सूदइ 'मोकलावि मित्र, 'अति डाहउ अधिकारी-पुत्र ।
कही अहिनाण अणाविउ पाट, सोनानउ श्रीकारिउ घाट ॥७००॥

पासा पाट सोगठां सार, देखी नरवर वसिउ विचार ।
'लिउ' भंडार-तणी सुधि सहू, पछइ पूछउ कारण कहू ॥७०१॥

१. 'लिउ' घा. २. 'हणिउ तेण' घा ३. 'रणभिण्ण राइ' घा. ४.
'भूर' घा. ५. 'जल' घा. ६. 'भणी हुउ' घा. ७. 'मो-वजिउ' घा
८. 'उत्तम ठामि' घा.

ताला-नउ हर हालिउ नही, पासा पाट बढाणा किही ? ।
 प्रति आदर-सिउं पूछइ राउ, "कहउ देव ! ए कवण उपाऊ ?"
 ॥७०२॥

१'सूदइ' प्रेत-पराक्रम २'कहिउ. तीणि राजा ३'रोमांचिउ रहिउ ।
 एहू सू खिति नही समानि, एक एक-नइ विममा मानि ॥७०३॥

(वस्तु)

तीणइं भवसरि, तीणइं भवसरि, "कहइ कर जोडि ।
 'विनयगल विवहारीउ, महाराज प्रति मान मागइ ।
 "ऊआरउ अम्ह धरि घटइ", सदयवच्छ पय-कमलि लागइ ॥
 तिह ^{५२१५}पुरिसत्ताण पेखि करि, मणि ४'आणदिउ साह ।
 लिउ देव ! सविसेस करि, वित्त अनइ बीवाह ॥७०४॥

[विवाह]

(चउपई)

विपि कीघउ कन्या-दान, सेठि-तणइ परणिउ परधान ।
 राउत-नइ 'राइ' दीधी पुत्रि, हरसिउ सूद, मंडाणइ मित्रि ॥७०५॥
 जे जे सासर १'अनइ खखाल, अठ पुहर जे १'सघाइ आल ।
 इस्या भूछ भडि पूरा कीघ, ^{५२१५}ग्रास वास १'भुहि माग्यादीघ ॥७०६॥
 १'लीघा १'हयवर नइ हथीआर, कीघा सुमट-तणा शरणगार ।
 कणय-कप्पड उलगू अनंत, लेई चालिउ लीलवई कंथ ॥७०७॥

१. 'सूदउ' भा. २. 'कहइ' भा. ३. 'रोमाच्यु रहइ' भा. ४. 'एकनी
 भाधिकी मानि' भा. ५. 'कहइय करजे' भा. ६. 'विनय लगइ' भा. ७.
 'साणंदिउ' भा. ८. 'अधि बति नी' भा. ९. 'मज' भा. १०. 'सोधइ काम'
 भा. ११. 'तुहि' भा. १२. 'कीघा' भा. १३. 'हवइ वचनइ' भा.

करी कटक संचरिउ सूर, वाज्या रण-काहल १रण-तूर ।
जिहा श्री २नर-इंद निवास, तिहा समहूरतइ माडिउ वास ॥७०८॥
३वीरकोट, ४तिहां नगरी नाम, दीघू देखी उत्तम ठाम ।
नई नीभरण अनइ आराम, ५वारु लोक तरणा विश्राम ॥७०९॥
लोभ दिखाडी वास्या लोक, आपइ ६साथ समाहरण रोक ।
पुण्य-श्लोक प्रजा-प्रतिपाल, भू-मंडण भूसण भूपाल ॥७१०॥
आणी वास्या ७वन्न अढार, तिणि पुरि उच्छव ८जयकार ।
कर्म आपणउ सहूको करइ, राम-तणी परि राज ९उदरइ ॥७११॥

[पुण्य महिमा] १५७६
१५७७
१५७८ [वस्तु]

पुण्य रूसइ, पुण्य रूसइ, सकति सूर सिद्ध ।
पुण्यइ प्राणि वनिता वरइ, पुण्यइ पवर पयरहुण लगभइ ।
ठाण-भट्ट निद्धंत नर भडवडत, सुउण पुणि घुग्भइ ॥
पुग्गह भव-तरणा पखइ, न सुख शरीरि ।
पुण्यइ एउ पामी सहू, संपति सूदइ १०वीरि ॥७१२॥

[सावलिगी लीलावती मानयन]

[चउपई]

सावलिगि ११लीला जिहा ठवी, ते १२सेवा प्रवान पाठवी ।
हुँती सुसरालइ जे बेउ, आणउ करी अणावी तेउ ॥७१३॥
राणी बिहुं १३प्रति दीइ बहु मान, रगि रमनां १४हूमां आधान ।
कमि कमि जउ पुहता दस मास, १५पुत्त-जनमि तउ पूणी आस ॥७१४॥

१. 'नइ' मा. २. 'नंद राय' घ. ३. 'वीर कोटि' घा. ४. 'तस' घ.
५. 'वारु' अ. ६. 'साध' घ. ७. 'वर्ण' घा. ८. 'जय जय कार' घ
९. 'हरइ' अ. १०. टूंक 'आ' मा नयी. ११. 'लीला वइ' घा. १२. 'तिहां'
मा १३. 'प्रतिइं मति' घ. १४. 'हू' घ. १५. 'पुत्त-जनमि' घा

[वस्तु]

१राउ हरखिउ, राउ हरखिउ, २सुत-ह संपत्त ।

तव नयरी आणद हूय, पंचशब्द वाजिप्र वज्जइ ।

माय ताय ३जुहार कीय, गख्य वीर गंभीर गज्जइ ॥

अवसरि पय प्रणमीय, सद्यवच्छि तिरि वार ।

भाडी ४आसीसह दिइ, राउ सिरि समोप्युं भार ॥७२८॥

[स्वजन मिलन]

[चउपई]

कुंभर सवे भावीनइ मिल्या, मान-सहित गाढा जलहल्या ।

राज करइ राय-सिउं सवे, भणइ गुणइ उच्छव तिह धरे ॥७२९॥

[वस्तु]

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, शांतिशर शच्छि ।

पुण्यइ प्राणि वनिता धरी, पुण्य-पवर पवर पयरहण ।

सम्भइ ठाण निद्वंतर नर, पुण्य-धोसि चडवडंत पण ॥

पुण्य जि पुठवह भवतणां, परखइ न सुख शरीर ।

पुण्याहि ए सह पाभीयइ, संपत सुद वरवीर ॥७३०॥

इति श्री कविमीमविरचित श्री सद्यवत्सवीर प्रबंधः

सम्पूर्णः ।

१. 'राय' भा. २. 'युत' भा. ३. 'जोहार कीछ' भा. ४. 'करइउ

परिणो राय समोप्यइ भार' भा. ४. टूंक ७२९ 'अ' मा नपी ।

काशीप्रतिष्ठ

३-१-१९५५

अंतिम पृष्ठ । सत्यवत्स धोरप्रवृत्त । निधि सवत् १५९० (अंतिम ग्रन्थ पृष्ठ १०२)

[illegible]

‘अ’ प्रति की पुष्पिका ।

इति श्री सदयवत्स वीरचरित्रं समाप्तं ।

संवत् १४८८ वर्षे फाल्गुन ११ श्रीमे श्री ११ पत्तने लिखितं विद्वज्जन
मनः प्रेममोऽयं विनोदमात्रम् । [प्राच्य विद्यामंदिर । नं० ४२६२]

‘आ’ प्रति की पुष्पिका ।

इति श्री सदयवच्छ चुपहप्रबंध समाप्त । शुभम् भवतु ।
श्री सं. १५६० वर्षे भागशर वदि ५ रवी (पं. श्रीचंद लिखितं) (जैन
साहित्य भंडार, पालीताराणा)

‘इ’ प्रति की पुष्पिका ।

इति श्री सदयवच्छ कथा समाप्ता । श्रीं भवतु । कल्याणमस्तु ।
संवत् १६६१ वर्षे भासु सुदि १ दिने धनकनाम संवत्सरे । महाराजाधिराज
महाराजा श्री राधासिधजी विजयराज्ये, श्री खरतरगण्ठे भट्टारक,
श्री जिनचंद्रसूरि गणि पं. श्री २ श्री चारित्रमेरुगणि तत् शिष्य पं. श्री
१ सीहा तत् शिष्य चेला हीरा लिखितं । श्री फलवधीमश्ये ।

[फलोधी जैन भंडार]

परिशिष्ट १

सदयवत्स सावलिङ्गी पाणिग्रहण चुपई

। इह ॥

सरसति सामिणि पाय नमी । मागुं एक पसाय ।
 सदयवच्छ-गुण गायता । सुम मति देयो माय ॥१॥
 मात मया मञ्जुइ करे । आपे अविरल बाणि ।
 तुम्ह प्रसादि गुण वर्णवुं । मूरन हुं भणजाण ॥२॥
 जउ तुं माता मुखि वसइ । तु है करुं कवित्त ।
 सदयवच्छ नरपति-तणउ । भविय ! सुणु इक चित्ति ॥३॥
 फवण नगरि ? ते किहां हूउ ? । किम तिणइ पामिउं राज ? ।
 लघु वेसिइं ते किम फिरिउ ? । किम कीयां तिणि काज ? ॥४॥

॥ चुपई ॥

ऊजेणी नगरी सुविशान । गढमढमंदिर पोलि पयार ।
 घाडी वन अति रूनीआमणां । आवि सरोवर तिहां छइ घणां ॥४॥
 नवतेरी नगरी विस्तारि । बास-तणउ नवि लाभइ पार ।
 गूल जालीआ मन्दिर घणां । पार न पामुं देउल-तणां ॥५॥
 चुरासी चुहुटां अति चग । नगरी जोतां अति आणंद ।
 कलहट कोलाहल हुइ घणा । पुहुचइ कोड सहूगो तणा ॥७॥
 घरि घरि दान दीइ अति घणां । दलिद छेदइ दुखीआ-तणा ।
 घाहण वेद करइ उच्चार । सहू राखइ आपणा आचार ॥८॥

[illegible]

1422.19

5

पृष्ठ । सदययत्तस सावलिगा पाणिग्रहण पउपई । [लिपि संवत् नही है ।] देखिये यथ गृष्ठ १३४। प्राच्य विद्या मन्दिर, बड़ोदा ।

वावन सई भइरव तिहां वसइ । चउमठि योगिणि हूड हूड हसइ ।
सूली-भंजन नामी थोड । चोर खापरु संकल-भोड ॥६॥

पहुयच्छराय करइ तिहां राज । सकल लोकनां सारइ काज ।
न्याय रीति ते पालइ खरी । तस कीरति दहदिसि विस्तरो ॥१०॥

तास घरणि सुमंगला नारि । रूपिई रंभा-नइ श्रवतारि ।
सतीशिरोमणि नारी तेह । राजा-सरिसु धरइ सनेह ॥११॥

तास उपरि हूउं आधान । मुक्ताफल जिम मीप समान ।
पूरे मासे सुत जनमीउ । सदयवच्छ तस नाम ज दीयु ॥१२॥

बोध-तणउ जिम बाधइ चंद । सविकहिनि मनि अति आनंद ।
बाधइ दिनि दिनि तस धरि वाल । रूपवत नइ अति मयाल ॥१३॥

राय तणइ धरि छइ परधान । पुष्पदंत नामि गुणग्यान ।
मदनसिंह नाम सुत ज तणु । रूपगुणे ते रलीभामणु ॥१४॥

राजकुमरनी सेवा करइ । मित्राचार सदा परिवरइ ।
वैश्या मदनसेना तिहां वसइ । पुष्पदंत बित्त तिहा उल्लसइ ॥१५॥

दिवस राति गणिका-सिउं रहइ । सदयवच्छ ते भेद नबि सहइ ।
एक बार ते गूखिई चडो । राजकुमरनी दृष्टिई पडो ॥१६॥

ते देखी कामातुर थयु । सदयवच्छ तस मंदिरि गयु ।
राजकुमर देखी हरख धरइ । मदनसेना बहू आदर करइ ॥१७॥

सदयवच्छ रयणी तिहां रहइ । पुष्पदंत हीयइ दुख वहइ ।
प्रहि ऊगमि निम्र मंदिरि गयु । मंत्रिपुत्र हीयडइ दुख थयु ॥१८॥

पुष्पदा देखी नबि सहइ । कूडकाट ते हीयडइ वहइ ।
'एहवु कोई करु' उपाय । ए कुंभर छंडावु ठाय' ॥१९॥

राजकुंभर यौवन-वय हूउ । राजा पासि जुहारीये गयु ।
कुंभर देखी हरखिउ भूपाल । यौवन-वैसि हूउ ए वाल ॥२०॥

राजामंत्री करइ विचार । “यौवन वेमि हुइ कुमार ।
ए सरखी तुम्हें कन्या जूउ । एता दिवस तुम्हे नवि कहिउ ॥२१॥

सदयवच्छ मनि मानइ जेह । राजकुमरि निरखु हिवि तेह ।
देशविदेसि जोई मंत्रीस । पूर कुंअर तणा जगीस ॥२२॥

राय-आदेसि मंत्री सज्ज थयु । सदयवच्छ ते सारिइ लीउ ।
मंत्रीसर नइ राजकुमार । चाल्या रायनइ करी जुहार ॥२३॥

अनुक्रमि मेदपाटि ते गया । आहडि नगरि पुहुता थया ।
बिहू डाहा बिहू गुणवत । ईश्वर-देहरइ जाई पुहुत ॥२४॥

शिव प्रणमी तइ बइठा बारि । शिखरूजण आवइ नरनारि ।
सदयवच्छ निरखइ एक चित्ति । कोइ न मानी आपणइ चित्ति ॥२५॥

जितशत्रू रायतणी कुंअरी । रूप अनोपम जिसी अपछरी ।
शिव पूजनि ते आवी नारि । साथि सखी-तणइ परिवारि ॥२६॥

बसंतसिरि नारि कुंअरी । शिव पूजो पाखी संचरी ।
कहइ मंत्री, “मनि मानइ एह ? गुण नदण नवि लाभइ छेह” ॥२७॥

सदयवच्छ मुख मोडिउं ताम । “मंत्रीसर ! मूंकु ए ठाम” ।
तिहांयिकी मारुआडिइ गया । जेमनमेरि पुहुता थया ॥२८॥

देहरइ जई तइ बइठा तेह । तिहां नारी बेहु निरखेह ।
महोपाल पुत्री गुणमाल । सखी सहित तिहा आवी बाल ॥२९॥

सदयवच्छ तस निरखइ रूप । ते देखी मुख मोडइ भूप ।
“मंत्रीसर ! मेहलु एह ठाण” । गूजर देसि गया गुण-भाण ॥३०॥

अंवावतीइ पुहुता छेह । देहरइ जई तइ बइठा तेह ।
बसंतसेन तिणि नयारि राय । मनमोहनी कु अरी तस ठाय ॥३१॥

पूजा विष्णु-तणी ते करइ । दासी पाचसात-सिउं फिरइ ।
सदयवच्छ-नइ मंत्री कहइ । “एहवी नारि अवर नही लहइ” ॥३२॥

सदयवच्छ मनि मानइ नहीं । तिहायिकी वली चाल्या सही ।
 कुंकणदेसि पहुता तेह । श्रीपुर नयर तणउ नही छेह ॥३३॥
 कामसेन तिणि नयनि राय । निरखइ देहरइ बइठा जाइ ।
 तिलकुमुंदरी राजकुंअरी । देहरइ आवी सखी परवरी ॥३४॥
 देवभवनि ते पूजा भणी । मलपत्ती आवी गजगामिनी ।
 निरखी सदयवच्छ तव रहइ । पुष्पदंत तइ बलतुं कहइ ॥३५॥

॥ झूठा ॥

“ देशविदेशि बहू फिरिया । निरखी नारि अनेकि ।
 अति सुन्दर गुणि आगली । जे सहइ सकल विवेक ॥३६॥
 तुम मनि एकइ नवि बसइ । तु किम सीझइ काज ? ” ।
 पुष्पदंत इम बीनबइ । ‘बलउ अब ती-राजि’ ॥ ३७ ॥
 नगरि अवंती आवीआ । नरवर कीउ जुहार ।
 पूछइ नरवर मंनि तइ । “कहु सुत-तणउ विचार” ॥३८॥
 तव मत्री बलतुं भणइ । “वात सुणउ, तुम्हे राय ।
 कहुं चरित्र कुंअर तणउ । सुणतां अचरिज थाइ ॥३९॥
 चपारि खंड प्रथवी फिरघा । नारि-रूप नही पार ।
 अति सुंदर गुणि आगली । कला-तणउ भंडार ॥४०॥
 मोटा नरपति जे अछइ । तेहनी निरखी बाल ।
 कुंअर-मन मानइ नही । किम किजइ झुपाल ?” ॥४१॥
 इस्यां वचन नरपति सुणी । बोलइ वचन विरुद्ध ।
 ‘कुंअर सुरकन्या वरइ । सार्वलिगि वर सुद्ध’ ॥४२॥

॥ चुपई ॥

तात-वचनि कुंअर चमकीउ । सार्वलिगि ऊपरि चित घरिउ ।
 ‘हवि हू कामिनि एह जि वर’ । कइ प्रवेस अगनि मांहि कर’ ॥४३॥

मदनसिंघ गइ कहि कुमार । 'तात वचन सालइ जिम साल' ।
 सकल मरम मित्र प्रति कहइ । मदनसिंघ हीयइइ संग्रहइ ॥४४॥
 तेहनु काई करुं उपाय । सार्वलिंग जिम ठावी थाइ ।
 म श्री बुद्धि विमासण करइ । हवि ए काम किणी परि सरि ? ॥४५॥

॥ दूहा ॥

होआ मनोय स करइ । जे करवा असमय ।
 तरुअर स्वगिइ मुहुरीया । तिहा पसारइ हत्य ! ॥४६॥

॥ चपई ॥

छातू पार म डाविउ राय । चाटघाट बली विसमइ ठाइ ।
 देरासरना योगी यती । वाभण भाट अनइ बहूमती ॥४७॥
 देइ अन्न नृप पूछइ भेद । इणी परिइ एहुनु लहु विछेद ।
 ततक्षण कुंअर सजाई करइ । अनपान सहइ परवरइ ॥४८॥
 दियस केतला इणि जाइ । आन्याण एक पुहुनु तिणि ठाइ ।
 'कहु जोसी किणि धानकि रहू ?' सकल बात अन्ह आगलि कहु ॥४९॥
 तेह कहइ हवि पूछइ भेद । बलनु उत्तर दिइ विछेद ।
 'सुणु बात, म श्री नृप तुम्हे । सघलउ उत्तर देसिउ अन्हे ॥५०॥
 घक्षिण देस विचक्षण नारि । तेहना गुण नवि लहीइ पार ।
 मुंगीभापुर-पाटण पहिठाण । शालिवाहन राजा आहठाण ॥५१॥
 देवलोकनी उपम लहइ । देखी मुर नर गन गहगहइ ।
 पास-तणु नवि लहीइ पार । नवतेरी नगरी विस्तार ॥५२॥
 लीलावई राणी गुणवंत । सील शिरोमणि सहज रंत ।
 तास कूखि जूअल अवतार । पुत्री पुत्र सकोमल सार ॥५३॥
 शक्तिकुमार बेटानुं नाम । णालामती बेटी अमिराम ।
 रूपवंत नइ हलीयामणी । विद्या सर्वकला अति घणी ॥५४॥

योवनमइ ते कुंभरो हई । तात पासि जई ऊभी रही ।
पुत्री देखि पिता गहगहइ । बर बिता ते मनमाहि बहइ ॥५५॥

ए सरिखु वर अम्ह-नइ मिलइ । मनह मनोरथ सघलु फनइ ।
कही बात ब्राह्मण सचरइ । मन्योसर ते मनमाहि धरइ ॥५६॥

एह बात मनमाहि राखीइ । हुआ बिना ते नवि भाखीइ ।
काज सरइ अथवा नवि सरइ । लोकमाहि हासा विस्तरइ ॥५७॥

कु अर कहइ, "मनी तुम्ह सुणु । सारउ काज तुम्हे अम्ह तणउ ।
तुम्हबिण किम्हइ न सीभइ काज" । सद्यबच्छ कहि छाडी लाज ॥५८॥

सीध थई तइ पुहुतु तिहा । मुगीपुरपाटण छइ जिहा ।
पाणीपथा घाडा लेय । पवनवेगि चालइ छइ जेय ॥५९॥

सवा कोटि दीधु बरवीर । जोईइनु बली लेयो धीर ।
दाइ उपाइ करयो काम । बहिलु बलण करयो आम ॥६०॥

मदनसिंह चालिउ तिणि बारि । सद्यबच्छ नइ करी जुहार ।
"हेज मछइ कु अर ! तुम्हे । निअइ काज करवु अम्हे" ॥६१॥

इम कही चालिउ मनीस । बाटिइ बहइ राति नइ दीस ।
धनुक्रमि पुहुतु पुर पहिठाणि । शालिवाहन राजा अहिठान ॥६२॥

देखी नगर-मनी गहिगहिउ । मदनसिंह हीमडइ हरखीउ ।
नगरी जोता दुष्टि पडी । कामसेना गणिका मुखि चडी ॥६३॥

मोहिउ रूप देखी अपछरी । कुंअर बान सवे बीसरी ।
तिणि मदिदि ते पुहुतु जाम । वेशा आदर दीइ ताम ॥६४॥

मदनसिंह गणिका सिउ रहइ । घणा दिवस इणिपरि निरबहइ ।
सकल द्रव्य वेशा नइ दोउ । कुमर तणउ काज नवि कीउ ॥६५॥

एक दिवस कुमरी घर बारि । कामिनि गाइ मगल क्यारि ।
वाजइ पंच शवद वाजित्र । नाटिक नाचइ नव नव पात्र ॥६६॥

सुणी शब्द मंत्री पूछे य । “ए उच्छ्व दृई कुण गेह ? ।
 घउघडीआनी बेला नही” । सवे वात गणिमाइ कही ॥६७॥
 “सावलिगि नृपुत्री-तणउ । लगन लीउ पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
 कामविणाय गछइ ठउ एह” । सुणी वयण दुज पामिउ देह ॥६८॥
 पूछइ मंत्री: “कवणह ठाम?” । काममेना गणिका कहइ ताम ।
 “रयणायरपुर नगर विसेसि । रत्नसारराजा तिणि देसि ॥६९॥
 रत्नसेखर कुंभर तस तणउ” । हुमि वर, पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
 पत्तर दिनि होसिइ घोयाह । मंत्रीसर मनि पडीउ दाह ॥७०॥
 मंत्रीसर तव चितइ इसिउं । “दंय ! सूत्र ए हूऊ किसिउ ? ।
 मि मूरखि ए कोधुं किमिउं ? । घरि जई मुह किम दाससिउं ? ॥७१॥
 नरपति-काज काई नवि सरिउं । एता दिवस रही सिउं करिउं ? ।
 हविऊं काई कहं उपाय । जउ किम्हइ काज सिद्धइ थाइ ॥७२॥
 चीठी तीम लखी मंत्रीस । नरपति ग्राहण नइ मंत्रीस ।
 तेणइ नगरि ते चीठी लेय । तव परोहित-घरि घाविउ लेय ॥७३॥
 करी प्रणाम घइठउ परधान । तव परोहित दीइ बहुमान ।
 “बहु कुंभर, किम आव्या इहां ? । कुणयानकि ? क, मंदिर किहां ? ॥७४॥
 मदनसिंह बलतुं इम भणइ । एक चित्त यई परोहित सुणइ ।
 “मालवदेस नयर ऊजेणि । पाय न छीपइ नासि तेणि ॥ ५॥
 पहुवच्छ राजा पालइ राज । लोक सवेना सारइ काज ।
 सुमंगला पटराणी तास । सद्यवच्छ सुत लीलविलास ॥७५॥
 योवनयइ कुंभर देखीउ । राइ मंत्री बोलावीउ ।
 कहइ, कुंभर-नइ गमती जेह । मंत्रीसर परणाबुं तेह ॥७६॥
 तु मंत्रीसर साथिइ लेय । मही सघली कन्या निरसेय ।
 कुंभर मनि एकइ नवि गमइ । ऊजेणी बली आव्या तिगइ ॥७७॥

सुणी पिता रोस मनि घरइ । कहइ कुंअर देवकन्या वरइ ।
 सार्वलिंगि वरसिइ सही वारि । रंभ तिलोत्तम नइ अवतारि ॥७६॥
 तात वचन श्रवणे सांभली । सार्वलिंगि नामि मनि हली ।
 ते विण अवर न परणुं नारि । एह विण हूं न रहूं संसारि ॥७७॥
 तिणि कारणि अम्हे आव्या इहां । कहु पुरोहित ! ते कन्या किहां ? ।
 अम्ह परोदिति तुम्ह घरि मोकल्या । चीठी लेई तुम्ह भणी चल्या ॥७८॥
 पुरोहित चीठी दि परधान । वांची लेख लहिउ अनुमान ।
 “तिम करयो जिम सीभइ काज । घणुं किसिउं ? तुम्ह-नइ
 छइ लाज” ॥७९॥
 पुरोहित कहइ, “तुम्हे सांभलु वात । हवइ किसिउं न चालइ रात ।
 मास दोइ पहिला आवता । मेलापक जोई थापता” ॥८०॥
 पुरोहित कुंअर मंत्रि-घरि गया । करि प्रणाम तिहां ऊभा रहिया ।
 “बुद्धिसागर मंत्री ! तुम्हे सुणु । एह लेख वाचउ तुम्ह-तणु” ॥८१॥
 वांची लेख लहिउ सवि मरम । तव मंत्रीसर भाजइ भरम ।
 जिणि कारणि तुम्हे आव्या हेव । एह काज तुम्ह नु हुइ देव ॥८२॥
 अवर कहु तुम्हे जे वान । रूपवंत कला गुणमाल ।
 छल बल करो देवाहं अम्हे । काज करीनइ जाउ तुम्हे” ॥८३॥
 मंत्री नृप मंदिरि लेई जाइ । राज-सभा जिहां बइठउ राय ।
 चीठी दीधी करी प्रणाम । नरपति लेख बंचावइ ताम ॥८४॥
 सुणां लेख नृप हरखिउ घणु । बलतु लेख लखिउ आपणु ।
 “जिणि कारणि पाठवोआ तुम्हे । सकल वात जाणी नृप अम्हे ॥८५॥
 कनकसेन राजानु पूत । जेहनी आण बहइ रजपूत ।
 सार्वलिंगि-कुंअरी नणइ बरी । एह वात तुम्हे मानउ खरी” ॥८६॥

ए कुमरी जु बीजु दरइ । सद्यवच्छ कुंभर सहो भरइ ।
 सुखि कहं कुंभर प्रति एह । जिम जाणइ निम करनिइ तेह ॥६०॥
 तु कुंभर अवंती जाय । दिन आथिमतइ भेटिउ राय ।
 देखी कुंभर हरख चिति धरइ । सद्यवच्छ आलाचन करइ ॥६१॥
 “जिणि कारणि मोरुनोया नुम्हे । ते सवि दान मुण्डाहुं ग्रम्हे ।
 सोह?सोग्रान?कहु हवि धोर” । कुंभर कहइ “जबूक” घुरिधीर ॥६२॥
 सकल बात मंभोमर कहइ । सद्यवच्छ अंतरि दुग वहइ ।
 “विपम काम नइ थोडा दीह ॥ हुइ काम जु याउं सीह” ॥६३॥
 मदनसिंह तइ कह्यो तब यात । “तुम्हे आगु ग्रम्हारइ साथि ।
 सालिवाहन-कुंभरी हु यइ । नहीतरि अगनि-प्रवेस जि कहं” ॥६४॥
 सुणी वचन नयणा जल भरइ । “एहवां वचन काइ उचरइ ?
 जिहा तुम्ह जीव ग्रम्हार तिहा । एह धोन ग्रम्हार इहां” ॥६५॥
 करी मंत्राणुं दोइ सज्ज थया । अश्व रत्न साथि दोइ लोभा ।
 देवतणी गति चाल्या जाइ । सांभि पुरुता तेणइ ठाइ ॥६६॥
 मुंगोभापुर पाटण छइ जिहां । सालिवाहन राजा छइ तिहां ।
 नगर-मध्य जई कमा रह्या । देवी नगर होमइइ गहगहिमा ॥६७॥
 देखी लोक सङ्ग करइ विचार । “किहांथी ए आग्या अमवार ?
 अमररूप ए आग्या इहां निभुवन-माहि नयो एहना किहां” ॥६८॥
 अश्वरत्न ए नही संसारि । भूपति सयल तणइ धरि यारि ।
 मनुष्य रूप एहवां नवि होइ । नरनारी जंपइ सङ्ग कोइ ॥६९॥
 पूछोइ लोक “ऊनार किहां ?” । “जे परदेसी आवइ इहां ।
 चांदू मालिणि तइ धरि हेव । तुम्ह ऊनारा यानक देव !” ॥७०॥
 चांदू मालिणि तइ धरि गया । दोइ कुंभर जई कमा रह्या ।
 चांदू-नइ तब कहइ दासि । “ऊमा कुंभर दोइ आवसि” ॥७१॥

सुणी वचन आवो घर वारि । तेनलइ कु अरइ करिउ जुहार ।
 "अम्ह ऊनारा थानक कहु । मालणि कहइ "इणि मदिरि रहु" ॥१०२॥
 कु अर कठि मुगताफल हार । ते मालणि नइ दीयु ऊनारि ।
 "सुणु बहिनि, अम्हे ताहरा वीर । परदेशी पहिरावु चीर" ॥१०३॥
 मानणि हीअडइ हरख न माइ । पलिंग तलाई दिइ समुदाय ।
 पुण्यमाल आपइ तिणि वारि । जिमण सजाई करइ अधिकारि ॥१०४॥
 सत्तार भक्ष भोजन ते करइ । राजकु अर जिमवा सचरइ ।
 सोवन थाल कचोला सार । वेहू कु अर बिठा तिणि वारि ॥१०५॥
 चादू मालणि प्रीसइ हाथि । बे कु अर बट्ठा इक साथि ।
 निज करि करी पवन ते करइ । कु अर नइ मनि आनद घरइ ॥१०६॥
 आरोगावी आप्या पान । इणी परिइ दीइ सनमान ।
 चूआ चदन अगर कपूर । कस्तूरी परिमलगुण भूर ॥१०७॥
 सुख सज्जाद पुहुडया जाम । चादू मालणि पुहुती ताम ।
 चादू पूछइ मननी घात । "एणइ नगरि किम आव्या आत?" ॥१०८॥
 सवि सखेपि ऊत्तर देय । कारण-तणु कहिउ सवि भेय ।
 सावलिनि कु अरी ए वरइ । कइ निश्चि अणखूटइ मरइ ॥१०९॥
 सुणी वयण मालणि भुरकाइ । "निरास्वाद आव्या इणि ठाइ ।
 जिणि वारणि आव्या मळ वीर । सावलिनि दीधी बडवीर ॥११०॥
 नेमु लगन लीउ तस तणु । [चादू कहइ] कु अर 'तुम्हे सुणु' ।
 भदनसिंह मालणि प्रति कहइ । "करु उपाय कु अर जीवतु रहइ १११
 एक अम्हार करु तुम्हे काज । सावलिनि देखाडु आज" ।
 तिणि वयणे रीसिइ घडहडी । कु अर-नइ कहि कोपिइ चडो ॥११२॥
 "तुम्ह कारण मळ मरि ठाइ । अम्ह मदिर वली मूसइ राइ ।
 एह वात अम्हि नवि थाइ । तुम्ह वाति मळ जीवज जाइ" ॥११३॥

कुंभर हाथि अछइ मुंद्रही । सवा कोटिनी हीरे जडी ।
 चादूनइ बली दोघी तेह । “कहइ, तुम्हरी हुइ काम ज एह?” ॥११४॥
 मुद्रा देखि हीइ गहगही । “एह काम हवि होसि सही ।
 तु तुं माहरुं लेजे नाम । सार्वलिंगि आपउ एणइ ठामि” ॥११५॥
 ततधए मालिणि करी सिणगार । जाई पुहुती राजदूभारि ।
 घरभीतरि + + + + + + + + + ॥
 + + + + + + + + +
 + + + + + + + + + ए जिमए करीसि इहाँ ॥११६॥
 भरहुटि बइठउ गाइ गीत । तिणि राणीनुं मोहिउं चीत ।
 राणी तणउ चित तब चलिउ । मनमय सैन्य अति सलमलिउ ॥११७॥
 तु दीनवचन ते आगलि बचइ । बली बली राणी बीनबइ ।
 तीणइ बचनि ते पुख ज हसिउ । एक वार तइ कारण किसिउ ॥११८॥
 निरास्वाद पापिइ छूडीइ । थोडइ केहवइ सत न छाडीइ ।
 जे माणस नबि लागइ छेह । तिह सिउं किमइ न बीजइ नेह ॥११९॥
 बलतुं राणी बोलइ इसिउ । जेहनुं मन जे सावि बसिउ ।
 तेह तणउ नबि नूटइ नेह । जां लगइ जीव हुइ इणि देह ॥१२०॥
 कहिउ अम्हार तुम्हे कर । माहरइ सायि पंथि अणुमर ।
 भारं राजि एणइ काजि । पछइ होसिइ आपणुं राज ॥१२१॥
 इव्य आपणइ छइ अति घणउ । मनोरथ सारउ तुम्ह तणउ ।
 इसी बात ते सरसी करो । जोज्यो हेज स्त्रीनु चित धरो ॥१२०॥
 १म करतौ राजा आवीउ । भोजन समुद सब ल्यावीउ ।
 राणी कहइ “सुणउ महाराज । बात एक मनि आवी आज ॥१२१॥

• प्रतिमा, एक पत्रनी नुटि होवापी बडी, १२६ यो १२३-२४ मंक सुधी
 खंडित छे. —सम्पादक.

तुम्ह देही सुकोमल जाण । थया एकसा करम विनाण ।
काम काज तुम्हे ढीलइ कर । माहरइ जीवनइ होइ छइ मर ॥६२॥

नफर एक राखीजइ भलु । जि हुइ चीत सदा निरमलु ।
राजा कहि, “सुणि राणी वयण । एहुवु पुरुष राखीजइ कवण ? ॥६३॥

आपणनइ तेहुवु न मिलइ कोइ । भाणस मेहली साधि होइ ।
निराधार एहुवु कुण मिलि । राति दिवस जे साधि पलइ ?” ॥६४॥

राणी कहइ, “राजा साभलु । आ पुरुष विदेसी छइ एकलु ।
मि सधली एहनइ पूछी वात । एहनइ कोइ नभी संधात ॥६५॥

धीतक सुणीआं एहनां घणां । जिम वीतक हूआं आपणां ।
आपणी वात एणि सवि कहि । ते साभली अचभइ रही ॥६६॥

खित्री एक अवंती बास । अछइ घरणी गंगा तास ।
गंगा-मात अवंती वसइ । आणु करवा आवी अछइ ॥६७॥

आणु नही करावुं अम्हे । पाछा धरे पधार तुम्हे ।
लोक कहइ आवी छइ भाइ । ए किम ठाली पाछी जाइ ? ॥६८॥

गंगा-मात पीहरि संवरइ । केता दिवस तिहां निस्तरइ ।
तब कायथ नांमि कल्याण । आणु करवा करइ प्रयाण ॥६९॥

घाटिइ बहिता हुई राति । तेह तरणी हवि सुणयो वात ।
नगर अवंती उत्तम ठाण । चुसठि योगिणीनुं अटिठाण ॥७०॥

बावन सई भइरय कलकलइ । ठामि ठामि तिहां दीया बलइ ।
सिद्ध-बडइ आविउ एकलु । रोती नारि शबद सांभलिउ ॥७१॥

[वस्तु]

तेणि अवस तेणि अवसरि गंधमगाणि ।
 नारीरुदन ते हि सांभलिउ । करइ आक्रंद बहू परि ।
 ते निसुणइ ऊभउ रहिउ । चुणी साद चीतवइ चित्त धरि ।
 साहस घरी तिहा आवीउ । रुदन करइ जिहां नारि ।
 इणि वेलां रोइ इहां । ते मझ बहइ विचार ॥७२॥

[श्रृंखला]

बलतुं नारी इम भणइ । “सांभलि साहसधीर ।
 कहुं धीतक जे माहसुं । तुं सांभलि घरधीर ॥७३॥
 एणइ नगरि एक नर दसइ । तेह तणी हुं नारि ।
 पतिवरता पालुं सदा । आण बहू निरधार ॥७४॥

ते बिण भोजन नवि कहं । न पीउं वारि लगार ।
 अणि काल पग पूज करि । नाम जपुं भरतार ॥७५॥

चोरी - आन ज तेहनइ । मूली दीधु कंत ।
 दिवस अणि इणिपरि हूआ । किम्ह न जाइ जंत ॥७६॥

अन्नपान मि आणीउं । जाणिउ दिउं आहार ।
 मुखि एहनइ पुहुचउ नही । किम करि दिउं आहार ? ॥७७॥

तिणि कारणि हुं टलवलुं । सांभलि साहस धीर ” ।
 वचन सुणी नारीतणी । दया ऊपनी वीर ॥७८॥

कंधि चडावी आपणइ । कहइ करि निश्चल चित्त ।
 “भगति करे भरतारनी । किसी म राखसि अंति” ॥७९॥

पुरुष कधि नारी तव चडो । काती लेई मडा-नइ अडो ।
 मांस भखइ तइ हउहउ हसइ । पुरुष तणइ मनि कुतिग वसइ ॥८०॥
 आमिप सड विठूठउ तिसिइ । पुरुष पु ठि ते लागु इसिइ ।
 तव ते ऊचु जोइ जाम । आधु मडु भखी रही ताम ॥८१॥
 नारी तिहा अचोडी करो । नाह तउ जाइ ऊजेणी पुरी ।
 तव केडिइ ते नारी घसइ । नगर-गोलि देवराणी तिसइ ॥८२॥
 पोलि तणी जे वारी अछइ । ते उघाडी दीछी पछइ ।
 एक पग तव भीतरि दीउ । वीजउ बाहिरि तिणि स्त्रीइ लीउ ॥८३॥
 पग-विहूणउ आडु पडइ । तिणि वेदनि ते अति आरडइ ।
 पुन्य माटि लिउं प्रगटिउं इसिइ । खेडीदेवति आवी तिसिइ ॥८४॥
 “अहो पुरुष तुभ कुण दुख दहइ ? । ससतु धाई, मभनइ कहइ ।
 किणी परि खाघउ तुभ पाय । किणि परि नगरि पुहुतु आय ॥८५॥
 कथा पाछिली सधनी कहइ । देवि कहइ तु उभु रहइ” ।
 ततखिणि देवति बाचा हुई । नवपल्लव पग आविउ सही ॥८६॥
 हरखिउ हीइ विमामइ इसिउ । नारोगणु पुन्य इहाँ बसिउ ।
 करम-उदय आविउ माहुरूं । नारी पुन्य थयुं वर हुउ ॥८७॥
 इम चीतवतु धर-अ गणि गयु । जाई वारणइ कान ज दीयु ।
 ऊमउ कुतिग जोइ जिसि । सभलजो तिहा वात ज तिसिइ ॥८८॥
 घरमाहि दीवु परजलइ । आमिप खड करो करी गलइ ।
 बेटा प्रतिइ कहइ तव मात । ए आमिपनी कहइ मऊ वात ॥८९॥
 वरस साठि मऊ हूमा इहाँ । अहेवु स्वाद न दीठउ किहाँ ।
 सांभलि माता वात एह तणी । ए तु जाघ जमाई तणी ॥९०॥

वेटा वेटी तेहथी जोइ । जमाई बाहुलु अति होइ ।
 तिणि कारणि ए मीठउ धणु । कह वेटी माता तुम्हे सुणइ ॥६१॥
 वेटी नइ तव माता कहइ । “बुण यानकि ते वेदन सहइ ? ।
 आपण वेहू जइई तिहा । ऊमाडो नइ आणोइ इहा ॥६२॥
 जउ प्रभात किमिइ थाइसि । आपणा हाथ थिक्की जाइमि” ।
 इस्यां वचन श्रवणे सांभली । तव तिहां-थउ नाहठउ खलभली ॥६३॥
 धनु प्रभात तइ धरि आवीउ । सर्व रिद्धि ते बाभण दीउ ।
 मन बइराग धरी चालीउ । फिरतु फिरनु इहा आवीउ ॥६४॥
 बइरागिउ दिन रयणी रहइ । तिणि कारणि हरिना गुण ग्रहइ ।
 माया मोह सवि छाडो कर्म । हवि ए चालइ तपसी धर्म ॥६५॥
 तेह-भणी साथिइ लिउ एह । जिम सुख हुइ आपणइ देह ।
 तु तिहायी तणइ चालीमां । मयुराई अनुकमि आवीमां ॥६६॥
 यमुना नदी कहइ असराल । धरम तणी जिहा बरतइ चाल ।
 नारीय भणइ “सामो सुणु । आदिनवार प्रथइ अति भलु ॥६७॥
 ए तीरथ छइ निरमल नीर । पापरहित कोजइ शरीर ।
 राय तणु चित निरमल जाण । पहिरी पोत नइ करइ सनान ॥६८॥
 राणीइ ठेली नाखिउ तिसि । पूरमांहि तव चालिउ तिसिइ ।
 रायनइ छइ तरवा भम्मास । चालिउ जाइ न सेहलइ साहास ॥६९॥
 बहितु गयु घणी मुंइ राइ । नगर तणइ परसरि तव जाइ ।
 चितइ नारी जोज्यो काज । जेह-नइ भरथि चूकु राज ॥७०॥
 दुख धरतु नगरी-मांहि गयु । राजसभा जई कमु रहिउ ।
 तिहां ते मादर पाभिउ धणु । हवि राणीनी बात ज सुणु ॥७१॥
 पाप तणउ फन तेहनइ भयु । रूप हतुं ते कोडी धयु ।
 पीप तणा ते रेला बहइ । तेहनी गधि कोई नवि सहइ ॥७२॥

कर उमाहि बईसारइ धरी । रुई तणां पुहुल ते कड़ी ।
देस देसाउर इणिपरि फिरइ । करड लेई नइ माथइ धरई ॥३॥

गाइ गीत राग आलवई । तेणइ जननी मन रजवई ।
लोक सहू इम बोलइ वाणि । सती नही ए समबडि जाणि ॥४॥

देश विदेसि फिरतां रहइ । दान मान ते गीतथी लहइ ।
इम करता तिणि नयारि जाइ । आगिल थो आवी जिहा राइ ॥५॥

राजसभामाहि लेई जाइ । सरलइ सादि आनवी गाइ ।
तेणइ राजा-मन रजीउ । घणउ गरथ अरथ तस दीउ ॥६॥

स्त्री-नइ राजा पूछइ वात । कहउ तुम्ह हुउ किम सघात ? ।
रूप-तणु तुज नही छेह । एहवी किम तुम्ह स्यामी देह ? ॥७॥

“सात बरसनी हुई जाम । मावापि दीधी एहनइ ताम ।
रूपि मदन समाणउ जोइ । करम-वसि हवि कुण्ठी होय ! ॥८॥

ओषध तणउ न लाभइ छेह । एहनु तुहिइ न बलिउ देह ।
तीरथ करवा-नइ नीसरी । भली एह राजनि चिते धरी” ॥९॥

बलतु अजितसेन ऊचरइ । “कहु बात जउ सहू बित धरइ ।
एहना सील-तणउ नही पार । यमुना माहि नाखिउ भरतार ॥१०॥

घात कही सघली आपणी । तव लज्जा गई नारी तणी ।
जोउ सतीतणु सनेह । अरघ आयु जिणइ आपिउ देह ॥११॥

जेहनइ मनि अस्त्री कीसास । जाते दीहे सही निरास ।
अस्त्री कूडकपट-को भली । अस्त्री नुहइ कहिनइ भली” ॥१२॥

वात सुणता तव लड्यडी । मूरछा आवी धरती पडी ।
नारी आण गया तिहा सही । सुणी सभा सहू अचिरज हुई ॥१३॥

ते नर मूरख हुइ समान । अस्त्री कारण तजइ पराण ।
सावलिणि ए बातज कही । राजा सरिखु मूरख सही ॥१४॥

सदयवच्छ नव बोलइ हसी । “एह वान तुम्हे कीधी विसी ? ।
सुपुरिस वाचा-लोप नवि करइ । सकल रिद्धि जन तेह परवरइ ॥१५॥

सावलिगि ! निसुणउ तुम्हे वाणि । तुम्ह वारणी आत्मा इणि ठाणि ।
तात वचनि घर छाडी दूरि । तिम आविउ जिम-जन निधि पूरि ॥१६॥

तुम्हविण किम जईइ तिणि ठाणि ? । लोक हासारय अनइ बहू हाणि ।
मान तिजी जीवई नरनारि । निफन जनम तह ससारि” ! ॥१७॥

सावलिगि कहइ, “मासी सुणु । ए उपाय सघलु अम्ह तणउ ।
इणि वार्ति अम्ह आवइ लाज । पिता-तणउ सवि विणसइ काज १८

वर वरीउ किम थाई दूरि ? । ए दुख मोटु जलनइ पूरि ।
इहाँ साप इहाँ मृगराज । ते परि सकल थई अम्ह भाज ॥१९॥

पिता वचन किम परहुं कह ? । किणीपरि हृदया आवह ? ।
वया भया करी दीधी वाच । सदयवच्छ प्रति बोली साच ॥२०॥

लगन तणइ दिनि जायो तिहाँ । बकदूधार अछइ अम्ह जिहाँ ।
साभ समइ तुम्ह थई असवार । ऊभा जइ रहियो तिणि वारि ॥२१॥

तिणि वारि हू आविसु सहो । एह बातनु सासु नहो” ।
वाचा देई कुं भरि घरि जाइ । सदयवच्छ मनि हरख न माइ ॥२२॥

सावलिगि फलहकां फिरइ । सदयवच्छ जोवा सचरइ ।
नर्याण नयण भेलावु होइ । नेह-मरम नवि जाणइ कोइ ॥२३॥

लगन-तणइ दिनि भाबी जान । तेहनइ दीजइ भाभां मान ।
पणइ महोच्छविन्कीउ प्रवेस । ऊतारा आपइ सविसेस ॥२४॥

जिमण तणी सजाई करइ । ततसिण जिमवा तेहा फिरइ ।
सवि राउत कीजइ एक ठामि । रहिउ बीसरिउ सो धावइ ताम २५

(दूहा) :

सदयवच्छ तिरिण अवसरि । अश्वि थयुं असवार ।
मंत्री-सुत साथि करी । ऊमउ बंक दूआरि ॥२६॥

प्रच्छन्नगति जाई रह्या । कोई न जाणइ मर्म ।
अन्तराय फल भोगव्यां । विना न छूटइ कर्म ॥२७॥

(चउपई)

तिरिण धानकि जई ऊमा रहइ । तेहनु भरम कोई नवि लहइ ।
भोजन-सार करइ नरराय । कोई सुमट रखे वीसरी जाइ ॥२८॥

आदर देई आणउ इणि ठामि । अम्ह-सरसा आरोगइ ताम ।
गुंडु नापित तिहां फरइ । कुंवर देखि बहू आदर करइ ॥२९॥

सीध थई पुहुचु धरि धीर । भोजन करवा तेढइ वीर ।
तुम्ह तणी सह जोइ वाट । जु आवउ तु वइसइ ठाठ ॥३०॥

ऊतर करी बुलाविउ तेह । किम आवउ अम्हे नरपति-गेहि ? ।
अम्ह असबाब न राखइ कोई । नापित रिदय विचारी जोइ ॥३१॥

नरपति-सिउ' जई नापित कहइ । “दोइ सुमट एक ठामि रहइ ।
माहरा तेड्या नावइ राय । तु नरपति आवइ तिरिण ठाइ” ॥३२॥

नरवर बचन न लोपिउ जाइ । सदयवच्छ आविउ तिरिण ठाइ ।
नापित हाथि अस्त्र तिरिण दीया । अवर ज वस्तु समोपी गया ॥३३॥

नापित जाति हुइ सत-हीण । सकल सनाह पहिरिउ तंखीण ।
एक अश्व ऊपरि जई चढइ । वीजउ दोरी हाथिइ धरइ ॥३४॥

तिरिण अवसरि आयमीउ सूर । जोवा मिलीउ' माणसपूर ।
लगन तणी सामग्री करइ । सार्वलिगि वाचा चिति धरइ ॥३५॥

लही अवसर चाली सिधार । आवी ऊमी बंक दूआरि ।
नापित तणउ न जाणइ मरम । गुंडु' तिहां न भाजइ भरम ॥३६॥

सावलिनि थई असवार । लेई चाली नगर-दूमारि ।
 रयणि माहि छाडिउ निज देस । अवर देसि कीचउ परवेस ॥३७॥
 रत्नादे पति ठगिउ जाम । तव कुमरीइ निरखिउ ताम ।
 “फटि पापी । कीधु कुणवाज ? । मनना गया मनोरथ भाजि ॥३८॥
 अश्व तणउ अधिपति विहा रहिउ । कइ मारिउ कइ जीवनु घरिउ ।
 गुडु मरम कहइ तिणिवार ? ‘ तें जीवनु छइ गुणवार ’ ॥३९॥
 सबल मरम तव नापित कहइ । सावलिनि हीअडइ सग्रहइ
 तेहगी हवइ किमी तुम्ह आस ? । अम्ह-सरिसिउ तुम्हे कर विलास ॥४०॥
 फटि पापी । निरगुण चडाल । ताहरा जीवनु आविउ काल ।
 अम्ह सरिसु बछइ सयोग । हुइ हांणि तुम्ह आवइ रोग ” ॥४१॥
 बड हेठली लीधु विसराम । नापित हूउ निद्रा-वसि ताम ।
 छेविउ नाक लेई नइ धुरी । इम सीखामण दीधी खरी ॥४२॥ .
 कूक करतु नासी गड । पुरुष वेस तिणि नारी लीयु ।
 एक अश्व कु भरी असवार । बीजउ हाथि कीउ तिणि वारि ॥४३॥
 तिहा थिकी आघी सचरइ । नगर छोडि उद्यानि फिरइ ।
 भूरइ कामिनि मन-ह-भम्भारि । सावलिनि दुख नावइ पार ॥४४॥
 मनमाहि चितइ ‘ किसी परि कर ? । कुण थानकि जाई अणुसर ? ’
 सावलिनि तव करइ विलाप । “ केहा भवनु लागु पाप ? ॥४५॥
 बेहू पक्षयी दूरइ टली । मन आशा एकइ नवि फली ।
 गयु कुमार गयु भरतार । सदयवच्छ विण जीविउ घर ॥४६॥
 दुख घरती आघी सचरइ । बडहेठलि जई घासु रहइ ।
 वृक्ष डालि बाधिया वि तुरी । बड-हेठनि जागइ सुन्दरी ॥४७॥
 गरुड पख तिहा बासि रहइ । तेहनइ च्यारि पुत्र गहगहइ ।
 चुणि काजि ते जूजूभा जाइ । राति आघी प्रणमइ पाइ ॥४८॥

पूछइ पिता: “तुम्ह लागी वार । ते भुं आगलि कहूँ विचार” ।
 आप-आपणा दाखइ मरम । सुणी बात अम्ह भाजउ भरम ॥४६॥
 “दक्खण दिसि पाटण पहिठाण । सालिवाहन राजा अहिठाण ।
 तंस घरणि छइ लीलावती । सार्वलिगि पुत्री गुणवती ॥५०॥
 रतनपुरीनु राजा चलु । रतनसेखर नामि गुणनिलु ।
 तेह-सरिखु मिलीउ वीवाह । आवी जान हूइ ऊछाह ॥५१॥
 कुंअरीइ वाचा अवस-सिउं करी । लगन-वेलां वाहिरि संचरी ।
 गुंडुं नापीतइ वसि पडी । राति समइ चालां चडवडी ॥५२॥
 थयु प्रभात नइ सूर ऊगीयु । कुंअर ठामि नावी निरखीउ ! ।
 नावी पूछिउ वडइ विछेद । सदयवच्छ-नु कहिउ सवि भेद ॥५३॥
 जेतलइ नावी नीद्र-वसि थयु । नाक कान तव बाढी लीउ ।
 तिहां-थकी तव नासी करी । नावी आविउ पाछल फिरी ॥५४॥
 चितइ कुमर विदेसि फिरं । सार्वलिगिनी सुद्धि ज करं ।
 जउ जोतां मभनइ नवि मिलइ । तु करवत मेहलाबुंगलइ ॥५५॥
 मदनसिंह नइ कहिइ घात । घेरे तुम्हारइ पुहुचउ रात ।
 ए देही तुम्ह-सरसी अछइ । तुम्ह-विण सिउं करवी छइ पछइ ? ॥५६॥
 इसिउं कहीनइ ते नीसर्या । कासी तीरथ भणी संचर्या” ।
 बीजा तणी बात साभलु । रतनसेखर जे आविउ भलउ ॥५७॥
 लगन तणउ अवसर वही गयु । मातु पिता-हीअइइ दुख थयु ।
 सकल लोक वाणी विस्तरी । सार्वलिगि कुंणइ अपहरी ? ॥५८॥
 जान तणउं मेहली संधात । अवधूत बेसि बलि परभाति ।
 करी प्रतन्या चालिउ तेह । निश्चि मरुं जउ न मिलइ एह” ॥५९॥
 एहवी बात कही जेतलइ । बीजउ पखी बोलिउ तेतलइ ।
 “मालव देसि अवंती नामि । पहुवच्छ राज करइ तिणि ठामि ॥६०॥

सुमंगला पट्टराणी सुणउ । सद्यवच्छ, कुंभर तस तणउ ।
 वार वरसनु कुंभर थयु । तव ते नारी जोवा गयु ॥६१॥
 जोतां कोइ चिति नवि वसइ । राइ कुय्यर बोलाविउ तिसि ।
 “जो को नारी चित नवि घरइ । तु निश्चि इन्द्राणी वरइ ॥६२॥
 सावर्लिगि कइ परणइ सही” । इसी बात मुखि नरवइ कही ।
 पिता-वचन मन-माहिं राखीउ । तव कुंभर भट्टणउ थयु ॥६३॥
 तु तिहा सहू मनि दुख घरइ । घरि घरि शोक निरंतर करइ ।
 नगर माहिं सवि उच्छव रह्या । ते जोई अम्हे आठ्या घरहा” ॥६४॥
 एवढी बात कही जेतलइ । श्रीजउ भावी कहइ तेतलइ ।
 “पूरव दिसि छइ उत्तम ठाम । चद्रावती नगरीनुं नाम ॥६५॥
 जितशत्रु राय राज तिहां करइ । मैन्य सहित आहेडु करइ ।
 वार वरसना वालो वेस । वनीस लक्षण अयधू-वेसि ॥६६॥
 रायतणी ते नज्जरि पढया । कद्रव-रूप अभिनवा घडया ।
 हठ करी राजा पूछइ तिहां । “अवधू-वेसिइ जाउ किहां ?” ॥६७॥
 सद्यवच्छ बलतु इम कहइ । “सावर्लिगि अम्ह हीमढइ दहइ ।
 मभ सरसी वाचा तिणि दीघ । ते अस्त्री नइ कुणइ लीघ ॥६८॥
 जउ नै कामिनि हुं नवि लहु । तु शिर ऊपरि करवत बहू” ।
 “अरे कुंभर तुं खरु अयाण । अस्त्री कारणे तिजइ पराण ! ॥६९॥
 पुष्पावती कुंभरी अम्हतणी । ते कन्या कर तुम्ह तणी ।
 तुम्ह-नइ सुं पुं सघलु राज । घरे अम्हारइ आवु आज” ॥७०॥
 सद्यवच्छ बलतु इम भणइ । “राजतणी खप नही अम्ह तणइ ।
 सावर्लिगि ते वन-माहिं फिरइ । माय ताय तइ सुख परहरइ ॥७१॥
 सोइ कारणे दुख देखइ सही । सुख भोगवुं हूं किम रही ? ।
 व मर्जादा लोणइ किमइ । तुहि सत्य न चूकुं अम्हइ !” ॥७२॥

इसिउं कही कुअर चालिउ । [कहइ पंखी] हूँ इहाँ आविउ ।”
 कामनि बात सवे सांमनी । चुयु पंखी बोलइ बली ॥७३॥
 “कूंकण देश शंखपुर गामि । नरसिंग राज करइ तिणि ठामि ।
 मतिसागर मंत्री तस तणु । बात तेहनी तुम्हे सुणु ॥७४॥
 प्रांखि नवि देखइ परधान । कुण्डी-राजा रूप निधान ।
 ग्रहनिशि अरति छइ अति घणी । मंत्रीसर नइ राजा तणी ॥७५॥
 जे डाहा वेदन-ना जाए । ति सवि तेडाव्या तिणि ठाणि ।
 मंत्र तंत्र औपध उपचार । पणि ते कहियो नही उपगार ॥७६॥
 तव नरपति दीघउ आदेस । ढढेर फेर कहु बसेस ।
 ‘नृप मंत्रीनु’ जे दुख हरइ । अरघराज्य नइ कन्या वरइ’ ॥७७॥
 बली मंत्रीस्वर कन्या देय । वित सार उपगार करेय ।
 ते निसुणी हूँ आविउ इहाँ । राजा मंत्री दुखी तिहाँ ॥७८॥
 आप तात जाणउ उपचार । अम्ह भागलि तुम्हे कुहु विचार” ।
 पंखराय बलनु’ इम मणइ । [सार्वलिग चित देई सुणइ] ॥७९॥
 “अम्ह विष्टानु संग्रह थाइ । जे लेई तिणि नयारि जाइ ।
 सीतौदक-सिउं खरडइ देह । जाइ कुण्ड नही संदेह ॥८०॥
 उग्रोदक-सिउं अंजन करइ । ततखिण दृष्टि चिहु दिसि फिरइ ।
 दीह्ति तारा देखइ सही । एह बातनु’ संसय नही” ॥८१॥
 श्रीजइ पुहुनु पूछइ बात । अम्ह आगइ तुम्हे भाखु तात ।
 सदयवच्छ सामलि तु कहु । मलवा बात सवे तुम्हे लहु” ॥८२॥
 पंखराय बलनु’ इम कहइ । सार्वलिगि सवे मंग्रहइ ।
 शंखपुरी मिलसि सहू कोइ । सूदु सामलिनु वर जाइ ॥८३॥
 ए सविनु मिलिस्यइ संयोग । भानव भव सुर लहसि भोग ।
 तिणि भवसरि ऊगिउ ते सूर । नाठों तिमिर जिम जलहल पूर ॥८४॥

लेई विष्टा संखपुरी जाइ । सीह-दूआरि पहुँती थाइ ।
 तिणि अवसरि ढंढेर फिरइ । सावलिगि जाई अणुसरइ ॥८५॥
 छवो ढंढेर घाली नारि । जण लेई आध्या राजदूआरि ।
 नरपति-नइ जई करइ प्रणाम । तव आदर दीइ बहू ताम ॥८६॥
 “वेधराय ! किणि थानकि रहू ? । आज अम्हे घनवंतरि नहिउ ।
 तुम्ह आवि अम्ह-सरीआ काज । पूरव पुन्यि प्रगटया आज ॥८७॥
 एह व्याधि जिणि थाइ दूरि । ते उपचार कर जे मूर ।
 पछई कहण न पावइ कोइ । तेह भणौ सहू निमुगुठ सोइ ॥८८॥
 सकल लोक कुमरी-प्रति कहइ । एह व्याधि तुम्हयी नही रहइ ।
 जे जाणउ ते औपच कर । व्याधि एह तुम्हे दूरि हरइ” ॥८९॥
 आप्यउ मनि तव हरल अपार । जे जाणउ ते कह उपचार” ।
 नरपति अणि लेप तव करइ । खिणि खिणि रायतणउ दुग हरइ ६०।
 तिणि औपचि तव गई व्याधि । राजा-सयारि हुई समाधि ।
 मन्त्रीसर कर जोडो कहइ । “अति घणउ नयणां अम्हनइ दहइ ॥९१॥
 मि उपचार करथा अतिघणा । निःफल हुआ सविबहइ तणा ।
 पूरव पुन्यि मित्या तुम्हे आज । निश्चिह सरसि अम्हारु काज” ॥९२॥
 “तु उज्जोदक सिउं अंजन करइ । तिमिर नयण तणां दुख हरइ” ।
 दिवस सात-मई जाठा व्याधि । नरपति मन्त्री हुई समाधि ॥९३॥
 वैधराय प्रति आदर करइ । सार वस्तु ते आगलि घरइ ।
 घनवंतरी परतलि आवीउ । नृप मन्त्री दुख दूरि कीउ ॥९४॥
 विनय कर नरपति इम भणइ । “पुनो एक अखइ अम्ह-तणइ ।
 चन्माला नार्मि गुणवंत । सोल शिरोभणि सहिजि संत ॥९५॥
 कृपा कर अम्ह ऊपरि आज । ते कुंअरी, परणउ गुणराज ।
 त अम्ह घाचा निश्चि पलइ । दुख-दालिद्र सवि दूरि टलइ ॥९६॥”

मंत्रीमर निज कन्या देय । मदन-मंजरी नामि जेह ।
 मया करी अम्ह मोटा कर । अम्ह कुंअरी तुम्हे निश्चि बर ॥६७॥
 उच्छव लगने लीउ तिरिण बारि । नगरी वरतिउ जय-जय-कार ।
 वैद्यराय दोइ कुमरी वरइ । मुखि नरपति मंत्री उच्चरइ ॥६८॥
 गार्इ कामिनि भंगल च्यारि । नृपमंत्री मनि हरख अपार ।
 अरघराज आपइ नरपाल । मंत्रीपद दीई सुविशाल ॥६९॥
 हय गय रथ पायक परिवार । रिद्धि तणउ नवि लहीइ पार ।
 सोवन थाल कचोलां जेह । पलिंग तलाई आपइ तेह ॥७०॥
 एक मंदिर दीइ नरराय । दंपति कारणि रहिवा ठाय ।
 वर परणी चालिउ निज गेहि । निज मंदिरि जई पुहुता तेह ॥७१॥
 अष्ट भोग कुमरी परिहरइ । तजी सेजि संघार करइ ।
 तेहुनु मरम न जाणइ कोइ । इणि परि दिन ते नीगमइ सोइ ॥७२॥
 तव कामिनि मनि विसमय धाय । अहनिस शोक बहइ ए कांड ? ।
 सकल भोग ते दूरि करइ । तपसीनी परि ते रहइ ॥७३॥
 एक चार ते पूछइ मरम । सावलिंगि ते भाजइ भरम ।
 "भोग तणउ मि कीधु नीम । मित्र न पायुं तां मभ सीम ॥७४॥
 दाण-मांडवी अछइ जिहां । निज सेवक मोकलीआ तिहां ।
 कुमरी सीख दीइ अति धणी । सदयवच्छ मेलापक तणी ॥७५॥
 जे जडोआ योगी अवधूत । तपसी लिंगायती नइ भूत ।
 रूपे परावृत फेरी फरइ । एहवा वाटिइ जे संचरइ ॥७६॥
 विण समझि मेहुनउ कोइ । एहवइ वेमि जे जे होइ ।
 छलवल करी करी आणयो इहां । रखे कोइ चाली जाइ किहां ॥७७॥
 केता दिवस इणीपरि जाइ । वरिउ कंत आविउ तिरिण ठाइ ।
 भवधू-रूपि दीठउ तेह । विरहि करीनइ सोसिउ देह ॥७८॥

दाण-मांडवी आगलि जाइ । अवधू-वैसि आणित तिणि ठाई ।
 नव-यौवन देखी सुकमान । पूछइ, “किम मेहलिउ जंजाल ?” ॥१॥
 निज मन तणी बात ते कहइ । “सावलिंगि कुमरी चिति दहइ ।
 तिणि विरहि लीघु ए वेस । हीडुं तेणइ देश परदेस ॥१०॥”
 लहीअ मरम तव नेपुं करइ । घरभीतरि ते लेई घरइ ।
 सुनि समाधि रहइ तिणि ठाई । जे जोईइ ते देई पठाई ॥११॥
 सद्यवच्छ आधु नीसरिउ । दाण-मांडवीआ तेणे घरिउ ।
 “कहु योगो, चाल्या कुण देसि ? । किम तुम्हे छाडिठ सयल
 कलेस ?” ॥१२॥
 सद्यवच्छ बलतु इम भणइ । “कामिनी-विरहु छइ अन्ह तणइ” ।
 संक्षेपि करी उत्तर देय । जाणी मरम चलाविउ तेय ॥१३॥
 सावलिंगि आगलि लेई जाइ । देखी कत हीइ चमकाय ।
 सावलिंगि पूछइ तव भेद । “अवधू ! उत्तर दिउ विछेद ॥१४॥
 सालिवाहन नृप-कुंघरी जेह । सावलिंगि नामि छइ तेह ।
 मालिणि मंदिनि वाचा करी । ते सुंदरि कहनइ घरि हरी ! ॥१५॥
 तिणि कारणि अम्हे लीघु योग । छाडिया बिंपय तणा सवि भोग ।
 तिणि कारणि अम्हे लीघु नीम । न मिलइ कामिनि तां छइ सीम” ॥१६॥
 सावलिंगि कुमरी इम कहइ । “नारी काजि कवण दुख सहइ ? ।
 सवि मूरख-मांहि तुम्ह रेह । बिण-हरणि दुख दाखइ देह” ॥१७॥
 सद्यवच्छ तव बोलइ वारिणि । “ए संसार असारि ज जाणि ।
 वाचा सार एणइ संसारि । ते वाचा दीधी तेणीइ नोरि ॥१८॥
 सावलिंगि जउ जीवइ नारि । वाचा-लोप नही करइ संसारि ।
 ति बिण अवर नारि नवि वरुं । जइ गंगा करवत अणुसरु ॥१९॥
 जीम खंडि करि तजुं पराण । इणि वाति सांसु म म जाणि ।
 “जनमि-जनमि मरु नारि तेह” । इम करवत बाहिसु देह” ॥२०॥

सुणी वयण तव सामलि हसी । कनक-तणी परि जोयु कसी ।
 कंत-तणउ नवि लाघु छेह । मळ कारणि दुख दाखइ देह ॥२१॥
 “अरे कुंअर ! तुं म करि अकाज । सावलिनि तुम्ह मेलिसु आज ।”
 तिणि वयणि हीअडइ हरखीयु । ऊतारा थानक तव दीयु ॥२२॥
 प्रथम कंत बोलावइ तेह । ‘तजो शोक तुम्हे जाउ गेहि ।
 सावलिनि तुम्हनि नही मिलइ’ । सुणी वयण हीअडइ दव बलइ ॥२३॥
 तेहयी रुपि अधिक आगली । राजकुमरि परणावुं बली ।
 गुणमाला-नरपति कुंअरी । परणावी मोकलीउ पुरी ॥२४॥
 हरख वदन तव नयरीइ जाइ । मात पिता नई लागु पाय ।
 अति आनंद हूउ तस घरी । सयल कुटुंबनइ सारी पुरी ॥२५॥
 मदनमंजरी मंत्रि-कुआरि । मदनसिंह परणाविउ मारि ।
 तिहां सहनइ हरख ज करिउ । सावलिनि सद्यवच्छ वरिउ ॥२६॥
 सद्यवच्छ नइ सामलि कहइ । “इणि थानकि रहिवुं नवि सहइ ।
 जउ नरपति ए लहसि मरम । सकल वातनु भांगइ भरम” ॥२७॥
 सकल सैन्य-सिउं चाल्यो राय । सालिवाहन नृप-केरइ ठाइ ।
 मात पिता मनि दुख अति धणु । करता होसि मुं बेटी-तणु ॥२८॥
 नारि-वचनि चालिउ बरबीर । सद्यवच्छ मनि साहस भीर ।
 नयनि पासि जब पुहुता जाण । बागां जांगी ढोल नीसाण ॥२९॥
 निमुणिउं दूत-वचनि तिहां राय । तव बेटी-नइ साहमुं जाइ ।
 पहुवच्छराय-तणउ सुत जेह । सावलिनि वरपरणिउ तेह” ॥३०॥
 इसिउं सुणी मनि हरख न माइ । सावलिनि तइ मिलवा जाइ ।
 सालिवाहन नृप पालु पलइ । सद्यवच्छ साहमु आवी मिलइ ॥३१॥
 सावलिनि तव प्रणमइ पाय । मात पिता मनि हरख न माइ ।
 “कहु कुंअरी ! तुम्ह-उणउं चरित्र । तु अन्ह काया हुइ पवित्र ॥३२॥

कीर्ण करम न छूटइ कोइ । राजा न्दिय विचारो जोइ ।
अम्ह चरित्र नवि लामइ पार । कुमरीइ कहिउ सवि सुणोउ
विचार ॥३३॥

सुगन जोई कीजइ वीवाह । तु हूइ हरस, नइ भाजइ दाह ।
तु हवि अम्ह मनोरथ फनइ । पुत्री-विरह दुख दूरिइ टलइ ॥३४॥

सालिवाहन नृप मांडिउ जंग । नरपति घरिउ छव बहुरंग ।
दान मान दीजइ अतिधर्णा । हूइ उछव वीवाहा तणा ॥३५॥

घर घोडइ हुउ असवार । गायइ कामिनि मंगल-व्यारि ।
छूण ऊनारइ वर कामिनी । वदावइ वाह भामिनी ॥३६॥

नर नारी तिहां बोलइ धणा । जोयो फल ए पुण्यह-तणा ।
सदयवच्छ नइ सामलि नारि । सरिखु योग मिलिउ संसारि ॥३७॥

वर-राजा तोरणि आविउ । इंद्र सरीखु सोहाबीउ ।
वर पूंखो आणिउ मांहारइ । सिंहासनि जई आसन करइ ॥३८॥

विप्र समय वरतावइ जामि । कर-मेलापक हूउ ताम ।
सोवन-चउरो करइ नरेस । तिणि थानांक कीधउ परवेस ॥३९॥

वर-कामिनि तिहां फेरा करइ । ब्राह्मण बईठा वेद ऊचरइ ।
करे भाट तिहा जय-जय-कार । विनइ करी दिइ दान अपार ॥४०॥

कर-मेहनामणि नृप दिइ दान । हय गय रथ परघु बहूमान ।
पाय लागी नृप दि आमीस । “दंपती जीवयो कोडि बरीस !” ॥४१॥

घर लाडी परणी घरि जाइ । हीअंडइ अति आनंद न माइ ।
सदयवच्छ सामलि वर नारि । विलसइ सुरक न लामइ पार ॥४२॥

सालिवाहन लीलावई तणी । मननी इच्छा पुहुती पणी ।
सदयवच्छ सामलि-सिउ रहइ । राति दिवस अंतर नवि लहइ ॥४३॥

केता दिवस इणि परि जाय । सदयवच्छ वितइ मन-मांहि ।
मात पिता दुख होसि धणउ । करता होसि अंदोह अम्ह-तणु ॥४४॥

सावलिगि नइ कहइ वात । “दुख धरतुं होसि मभे ताते ।
 विरेहि करी निज छंडइ प्राण । तु हवि जईइ पुर पहिठाणि ॥४५॥
 इहा रहिवा-नुं युगनुं नही । सुदा रहोइ विचार सहो ।
 सासरइ रहिता हुइ लाज । पिता-पन्ननुं विणसइ काज ॥४६॥

[इहा]

स्त्री पीहरि नर सासरइ । संयमीआं सहि वास ।
 मान-रहित निश्चिइ हुइ । जु मांडइ धिर वास ॥४७॥
 जं जं धोवत मिठडुं । सज्जन तांह विदेश ।
 अंब धरंगणि मुहुरीउ । करुअत्तण पामेसि ॥४८॥

[चउपई]

इम विनी चालिउ तिणि बारि । ससरानइ जई करिउ जुहार ।
 “कृपा कर, अम्ह दिउ आदेस । नयरि ऊजेणी करं प्रवेस ॥४९॥
 पिता अम्हार बहू दुख धरइ । अहनिंसि माता शोक ज करइ ।
 सधि सुख छाड्या तेणे दूरि । ते दुख-सागरि पडोआं भूरि ॥५०॥
 तुम्ह प्रसादि अम्ह पुहुती आस । परणिउ कुमरी लोलविलास ।
 आज अम्हारी बाबा पली । मन-बंधिन कामिनि अम्ह मिलो ॥५१॥
 बलनु राजा एहबु कहइ । “तु रूडूं जउ इहा रहइ ।
 पुण्य-प्रभावि अम्हनइ मिलिउ । कलप-वृक्ष अम्ह अगणि फलिउ ॥५२॥
 इम कांड तुम्हे दाबु छेह ? । खिए एक मांहि छांडु नेह ” ।
 कर जोडी नइ करइ प्रणाम । देई आलिगन चालिउ ताम ॥५३॥
 सावलिगि भोकलावा जाइ । माता पिता-ना प्रणमइ पाइ ।
 सीख लेई-नइ चाली साथि । सदयवच्छ स्वामी नरनाथ ॥५४॥
 सालिवाहन बुलावा भणो । आवि तेतलइ सोम आपणो ।
 करी जुहार नइ पाछउ बलइ । पुत्री-विरहि मोन जिम मिलइ ॥५५॥

मयारि ऊजेणी पुहुतु घोर । सदयवच्छ नृप साहस घोर । .
 मात-पिता-ना प्रणमी पाय । आलिंगन दिइ आधु याइ ॥५६॥
 सारलिंगि सासू-पाए पडइ । आलिंगन देती अडवडइ ।
 सविकर्हान मनि हूउ आणंद । जिम चकार खग देखी चद ॥७॥
 निज कुटंब-भेलापक हूयु । ए अधिकार हूउ छइ जूयु ।
 सुमंगला मनि पुहुती आस । सुख भोगवइ तिहा लील विलास ॥५७॥
 मनगमतर पाग्या सयोग । पाच प्रकारिइ विलसइ भोग ।
 ए पहिलुं हूउ अधिकार । कवि कहि जोई चरित्र आधार ॥३५॥

॥ इति श्री सदयवच्छ सारलिंगि पाणिग्रहण चपई ॥

॥ समाप्तमिनि भद्रम् ॥



परिशिष्ट २

मुनि केशव (कीर्तिवर्धन) रचित

सदयवच्छ सावलिंगा चउपई

[दूहा]

स्वस्ति श्री सोहग सुजस, बद्धित लील विलास ।
दायक जिण-नायक नमुं, पूरण भास उत्थास ॥१॥

‘सरस वचन घो सरसती, सकल कला दातार ।
सुप्रसन्न प्रणमुं सदा, वरदाई सुविचार ॥२॥

जे क्युं जगि दीसइ अछइ, भासति मति गुण ग्यान ।
सो प्रसाद सद्गुरु तणो, धुरि घरुं तस ग्यान ॥३॥

रस नव ही भति सरस हुई, अगणी अपणी ठामि ।
उतपति सवि शृंगार की, सह जन-कूं अभिराम ॥४॥

रसिया विण शृंगार रस, शोभ न पामइ ‘मुद ।
कामिणी विण कामी पुरुष, दीसइ वृद्ध ‘विदुद ॥५॥

निण रस को कारण ‘त्रिया, वली नाथक सु प्रघॉन ।
कविधण तिणि कारण कहइ, रसिक-हेतु धार ग्यान ॥६॥

रस बंछइ जिको रसिक, सज्जन सगुण सुहाउ ।
सदयवच्छ की वारता, सुणु रसिक सिरराउ ॥६॥

[चुपई-राग मार]

व दिसि सोहग सु प्रकास । कूंकण विजयपुर दिविच विलास ।
रमणी पदमणी गुणवत । योगीजण जिहाँ सुख विलसत ॥७॥

१. ‘सरस वचन कपिगुण सुमति’ २. ‘मुद’ ३. ‘विदुद’ ४. ‘त्रिया’

‘महीपाल पालइ तिहाँ राज । राज करइ जाए कि मुरगज ।
 एमात त्याग निकलक अनरेश । सोहग वास विलाम विधेय ॥६॥
 तस कुल-मंडण साहस धीर । निरमल गुण गगानुं नीर ।
 सदयवच्छ तस सुत सुविचार । जाँएक हरिकुन मदनकुमार ॥१०॥

[इहा]

गुण-रागी त्यागी गुहरि, सोभागी सकलाप ।
 सदयवच्छ सोभानिलो, पल पल चडत प्रताप ॥११॥
 तन-सुख मन-सुख नयण मुख, सुख वयणो ही सार ।
 सुख कामि-कामि महाराज-सुत, सह जण-नइ सुखवार ॥१२॥
 बीजोही बालक सदा, दीठाँ जावइ दाइ ।
 राजकुंमर रलियामणो, कहो कियेने न मुहाइ ? ॥१३॥

[चौरई]

तो राजा नइ बुद्धि-भंडार । सोम नाम मंत्री सुविचार ।
 साबलिगा नामइ तस जाणि । पुत्री जीव-पराण-समान ॥१४॥

[इहा]

मधुर चालि लोचन मधुर, मधुर रूप मति माँण ।
 मधुर बोल बोलइ मधुर, रीझइ राँणो राण ॥१५॥
 हिव इक दिन प्रह सम हुवइ, सुंदर सदयकुमार ।
 पिता-माई प्रणमइ जई, जुडियो जिहा दरवार ॥१६॥

[चौपई]

देखी नयणो सुत दिदार । महाराज मनि थयो विचार ।
 पुत्र भणायी करूँ सुजाण । विद्या विण नर पशू समाण ॥१७॥

१. ‘शातिवाहन करइ तिहाँ राज’ २. ‘निसंक’ ३. ‘ससक’
 ४. ‘दिनदिन’ ५. ‘माणइ’

(श्लोक)

* प्रथमे वयसि ना धीतं, द्वितीये नाजितं धनं ।
तृतीये नाजितो धर्मः, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥१८॥

(३६)

सूरवीर अति साहसी, रूपवंत दातार ।
विद्या विण दिलखइ वदन, जिम प्रिय मन विण नारि ॥१९॥

सहु सज्जन सहु प्रापणा, सगनइ ही सनमान ।
एकणि विद्या-तणइ वसि, धरम धरा धन ध्यान ॥२०॥

(उक्तं च)

* विद्या धेणुं जिहा नरां, किंस्यो अणूरो त्याह ? ।
* खिण दूभइ खिण दूभपी, विमूर्खसो सुभाह ॥२१॥

(चोपई)

इम जाण महाराज ति वार, ओभो तेढाव्यो मतिसार ।
भणिवा धाल्यो तिण लेसाल, सीखइ कला सकल सुकमाल ॥२२॥

हिव इक दिन मंत्रीसर सोम, देखि सुना उल्लहसीयो रोम ।
ए गति मति रूप तोहि जमार, जो जाणइ कमुं सास्त्र विचार ॥२३॥

रूपवंत नइ गावइ गीत, इक बल्लभ नइ हुवइ सुविनीत ।
इक विद्यानइ न करइ मान, चतुर अनइ मानइ राजान ॥२४॥

१ माता शत्रु पिता वीरो येन बालो न पाठितः ।

तथा मध्ये न द्योमन्ते हंस मध्ये बको यथा ॥

२ 'ज्युं' निय विग भरतार' ३. 'एकेण विद्या वाहिरा' 'नरदी से
जिय खान ।'

४. 'विद्यादोणा' ५. 'मुक्छोन विमूर्खसि, जो दीसइ पबरोह'

अके सोनू नइ बलि होई सुगंध, सीह भनइ पाखर संबंध ।
 अके सुता नइ सास्त्र-सुजाण, तो वाघइ अधिगे विन्नाण ॥२५॥
 हम जांखो 'ओम्नो मतिसार, तेडाव्यो मुंहतइ तिण वार ।
 आसण बैसण आपि उदार, वचन कहइ करि निज आचार ॥२६॥

(इहा)

कर जोडी मुंहतो कहइ : "सुणि, ओम्ना ! सुविचार ।
 एह भणवो अम्ह तरां, पुत्री रति अणुहार ॥२७॥
 भणइ घणा लेमालीया, ओम्ना तुम्ह लेसाल ।
 तिहा-थी ए मुक्त राखवो, गुप्तपणइ ए बाल" ॥२८॥
 हरखइ हाकारो भणइ, ओम्नो घरि अधिकार ।
 जिम आगो तिम पाठुं, रंगइ राजकुमारि ॥२९॥

(चोई)

हिव सुभ लगन मुहरति धरी, भणवा घातो सा कुंभरी ।
 छानइ तिणि ओम्ना नइ पासि, दिन प्रति करइ कला-अभ्यास ॥३०॥
 तिणि ओम्नानइ अति अभिराम, गृह पासइ इक छइ आराम ।
 बृक्ष अनेक अछइ जेहमइ, जिण दोठा दिन सुख मां गमइ ॥३१॥
 जाई जूही मुचकुंद सकुंद, पुहकरणी-जल-मइ अरविद ।
 बोलसिरी पसरी चहुं आर, मदोन्मत्त नाचइ जिहां मोर ॥३२॥
 मालती तरु महकइ अहुकार, 'गूं गूं' सबद करइ गुंजार ।
 खिण बईसइ, खिण ऊडी जाइ, 'रति वाछिक जिम आतुर थाय ॥३३॥
 नालिकेरी जंमीरी द्राख, 'लूपीलूं'वि रही जिहों साख ।
 कोईल टहुकइ अंव संयोग, 'जिम-नव-नीय करइ प्रथम संयोग ।

१. 'छेडो' २. 'सहकार' ३. 'खटपट गुं गुं' करइ गुंजार' ४. 'रति बंछति' ५. 'लूं'पि रहिया जिहां साख' ६. 'जिम कामणी करइ प्रथम संयोग' ।

शानि-खेत्र तिए वाग-मभारि, 'ओभा' आरोगइ सुविचार ।
 शालि तणी रखवाली भणी, वारी मांडी 'जण-जण' तणी ॥३५॥

(दूहा)

लेसात्या-सिरि 'वड' थयो, 'भणतइ' राजकुमार ।
 पाटी देई अवरों प्रति, सगलो कहइ विचार ॥३६॥
 हिव योवन-वय आवीयो, सदयवच्छ सुविचार ।
 अंग अंग प्रति उल्लहसइ, 'कज्ज' दरसण दिनकार ॥३७॥
 अवरहिं गति मति पिए अवर, अवर रूप गुण ओर ।
 आबो वय योवन अवर, 'जाणि' कि छइ सवि ठोर ॥३८॥
 मान दान महीयल महत, गरुंअ वान गुण ग्यान ।
 आया जोवनि आवतां, ए पांचे परधान ॥३९॥
 वय जोवन अरु निपुण-पण, घरि घण विनय अथाह ।
 ए चपारे तठ पामीयइ, जउ तूसइ जगनाह ॥४०॥
 'गति' मति छति गुण-गण निपुण, राव तणइ परभाव ।
 ओभो पणि अधिकउ गिएइ, दिन दिन दोठो दाव ॥४१॥

(वीपई)

इक दिन पूछइ ओभा भणी, कुंवर वात तिए कुंवरी तणी ।
 'लेसात्या' सहु वाहरि भणइ, मांहि भणइ कह तुम्ह तणइ" ॥४२॥
 कहइ ओभो: "सुणि सदयकुमार, जे छइ माहरइ गेह-मभारि ।
 अ पुत्री साम मनोश्चर तणी, सार्वलिंगा सैज्यम तिए भणी ॥४३॥
 राजकुंमर देखइ नही तिएइ, ते छइ अंधी, मांहि ज भणइ ।"
 इम कहिनइ भाग्यो सहु मर्म, बीजो कपुंही न भाख्यो मर्म ॥४४॥

१. 'ओभा' आरोगण सुख सार' २. 'बेलातणी' ३. 'वट' ४. 'मणतो'
 ५. 'मदन महा मसराल' ६. 'जाणिकि सेस न ठारे' ७. 'घरि घण विज्जू
 अथाह' कडो ४२ केटलोक प्रति० मां नथी ।

कुमरी भनि पनि अलजो थयो, सदयकुमर-नइ देखाए तणो ।
गुरूजी-नइ पूछइ सा इमइ, “कुमर नहु नावइ इहाँ किमइ ? ॥४५॥

ओभो कहइ “सामलि कुंवरो, कोढी कुंवर देही अति धूरी ।
कु वरी न देखइ कोढी मुख, बाहिर तम राखुं तहु दुए” ॥४६॥

हिव इक दिन ओभो मतिसार, जात्रा लागो नगर मभारि ।
जातइ प्राश्यो सूदा भणो, सहनइ दई पाटी आपणो ॥४७॥

पणि मत खोलउ ए ओरडी, आधो-नइ रहिया दीव्यो ऊंढी ।
तह ति कु मर ओभा नइ भणइ, पुरि पुहुतो ओभो तिणि सिएइ ।

(इहा)

तिणि अवसरि सूदा तिहाँ, सावलिंगा-रो साद ।
सुणि भएता, बोल्थो सदय, अधिक धरि उनमाद ॥४८॥

“हे अ धी ! खोटउं भणइ, खरउं न भाखइ काइ ? ।
फुटी चलि तुम्ह यारीली, तिम ही ज गहीजे, माहि” ॥४९॥

कहइ कुमरी: “सुणि केढीया !, खोटउं न भणुं क्यु हि ! ।
पाटी-मइ लिखीउं भइइ, बाचूं छूं हूं त्यु हि” ॥५०॥

सुणि सूदो संकित थयो, २ “भाखइ वात त्युं एह ? ।
अ धी कहु, किम वाचसी लिखीउं छइ जे लेह ?” ॥५१॥

“इम चितवि आवुल अधिक, करि करि ऊंचो वास ।
दीठा निज चलि कुंवरी, कांति वयण सुविलास ॥५२॥

१. ‘खरो भणायो कोढिया, लिख्यो छइ जिममाहि’ २. ‘भाखइ’ ३. भयार
सखिया मेह’

४. “इम चितवी खोली ओरडी, देखी कुमरी रूप ।

कुमरी देखइ कुमर नइ, अ-यो अग्य देखे स्वरूप ॥”

‘हा हा रूप सुख, चखि हसइ, विकसित सुगति विलास ।
सदयकुमार संसय पडचउ, ईपत अधिक उल्हास ॥५४॥

‘जे नर रूपइ आगला, ते नर निगुण न होई ।
कैसर केरी पंखडी, सहि सुरंगी जोई ॥५५॥

(चोपई)

दीठी अपछर नइ अणुहार, सदयवच्छ कुंमरि त्रिणवार ।
चित्र-लिखी जाणइ पूतली, रंग चंग चपकनी कली ॥५६॥
कइ रंभा इन्द्राणी जाणि, कइ गोरी आई घरि माणि ।
कइ रतिपति-रामा रति रूप, चितइ मनि ए किस्युं सरूप ? ॥५७॥

(इहा)

संर वीणा, पद-तल कमल, वयण अभी विस्तार ।
चरिताला लोचन चतुर, नयण न खंडइ धार ॥५८॥
तनु सरली, पूरण रली, सकल रूप सुकमाल ।
कलप-वेलि कहीयइ तिको, एहि ज रूप रसाल ॥५९॥
इण सम संसारि त्रिया, कीनी नबि करतार ।
विगताला वपणइ वदइ, अभीय वयण सुविचार ॥६०॥

(चोपई)

प्रति सुंदर सोहइ आकार, अदभुत तनु सुकुमाल उदार ।
सकुलीणी वाली सुविचार, कामवेलि कवली अणुहार ॥६१॥
फूल तूल मखतूल अमूल, कोमल स्यामल केस ससूल ।
चिहुर-मूल वण्यो चौदलो, सेस सोस मणिमय त्रिदलो ॥६२॥

१-‘हा हा रूप मुखचंद्र हंमे, विकसित युगत रिलास । आहा रूप अरों पखइ’
२-केसलीक प्रति मा० नयी । ३-‘कइ गोरी भरधंम बलाणि’ ४- (दड़)

ओपइ भाल विशाल अनूप, नभ-दीपक टीली ससि रूप ।
 अरुहि पुष्प-गुण करि सुभवास, मधुकर भाइ करइ आवास ॥६३॥
 पांक्ति चकित थकित मृगवाल, लोचन-परि लोचन-सुविशाल ।
 निरमल नौकी जस नासिका, जाँणि अरांडित दीपक शिखा ॥६४॥
 माखण मुखमल परि सुकमाल, कंचण वरण सरीस। गाल ।
 गुह प्रिय वयण वयण सुमार, अमृत पूरण करण उदार ॥६५॥
 चिहुं दिसि चलकइ कुंडल नूर, जाणि कि 'सेवइ ससि नइ सूर ।
 मधुर अघर वर चग-सुरंग, हिंगलू नइ परवाली रंग ॥६६॥
 दंत-पंति दीपइ ऊजली, कइ मोती कइ दाडिम कली ।
 नह केसरि भांगुलि पांखुरी, कर वे नालि सु बाहीं खरी ॥६७॥
 उरवर जोवन राजइ आप, पूरण पण्डित तेज प्रताप ।
 कुच दुंदभि जोडि बाँजति, कंचुकी दल-वादल छार्जति ॥६८॥
 केसरि-लंक नितंब विशाल, केलि-भारभ जघा सुकमाल ।
 रक्त कमल पल्लव परि पाइ, अति कोमल सुचि रंग मुहाइ ॥६९॥
 'मयमती' उनमत गज गेलि, चालि हरावइ हंमौ डेलि ।
 ठमकि ठमकि रिमकिम पय ठवइ, देखो तस वसि कुँण नबि हवइ ? ७०

(दूहा)

मानिनी मोहन-बेलडी, मुखि मलकइ महकार ।
 दंत-श्रेणी दीपइ तिमइ, चपला-को चमकार ॥७१॥
 गिरभा गुण-गण तिणि निपुण, संकेतइ संचारि ।
 चतुराई धरि चूँपसूँ, कीधी ए किरसार : ॥७२॥

(दूहा-सोरठीया)

रमणी सा संसारि, जस त्रिहुं भुवन ओपम नहीं ।
 अवला अवरि विचारि, कहोयइ निज्चइ कवीदण ॥७३॥

१. 'वमइ' २. 'करकज' ३. 'मयमती हाबिगोनी चालि, हालि'

(चाणई)

अद्भुत रूप अनुपम गात, इणिस्युं सुख बोलइ दिन राति ।
देखिदखि तस रूप विलास, कु मरो पणि फिर देखइ तास ॥७४॥

(इहा)

नयण-बाँण नारी तणे, सदयवच्छ सुकुमाल ।
बीध्यो भति व्याकुल अधिक, तेह थयो असराल ॥७५॥

गाहा-रस कवियण वयण, मधुर बाल सलाव ।
हाव भाव हरिणांखीयाँ, क्युं न हरइ मन भाव ? ॥७६॥

उर लागी भति आकरा, नयण बाँण अणीयाल ।
नयण निमेष लीये नही, मगन थयो महिपाल ॥७७॥

तां लज्जा तां सूरपण, तां विद्या तां माम ।
नयण-बाँण नारी तणा, होवइ न लग्गा जाम ॥७८॥

सज्जण दुज्जण सुधिकरण, प्रथम उपावण प्रीत ।
सुखकारण संसार सह, नयण-हू केरी शीति ॥७९॥

(इहा-गाहा)

अण जाणीयाण संगो, नयण कुम्बति धरति बहु पिम्मो ।
लग्गा कह विन फुहइ, अलख गई परम सा भणीया ॥८०॥

पुंवि करेइ पिम्मं, पच्छा पुण गिन्ह .ए मणो तत्स ।
सज्जण जण सुहजणण, चकूख परम वसीरण ॥८१॥

(इहा)

नयण पदारथ नयन रस, नयणे नयण मिलत ।
अणजाण्णा-स्युं प्रीतडी, पहिलां नयण करत ॥८२॥

नयणां सोइ सराहीये, जिण नयण-में लाज ।
बड़े भये अरु बिख भरे, कहो सजन, किण काज ? ॥८३॥

सयण ठगारे ठगी गई, दे गइ चोट भचूक ।
 वहोत भांति ओखद कीए, मिले न दोउ टूक ॥८४॥
 नयन नयन पै जात हे, नयन नयन-की हेत ।
 नयन नयन की बात हे, नयन नयन कह देत ॥८५॥
 नैनो बह्यो नैनो सुएयां, उत्तर दीयो नैन ।
 नयन नयन सँ मिल गए, कहे कोसू वयण ? ॥८६॥
 कृतावला न भलूभीइ, सनैः सनैः सब होय ।
 सदेव बाढी हखडाँ, सफल फर्यतां जोय ॥८७॥
 नयणाँ केरी प्रीतडी, बूझे बीरला कोई ।
 जे सुख नयणे पाईइ, ते सुख सेज न होई ॥८८॥
 सज्जन दुर्जन सबजन करण, प्रथम उपजावण प्रीति ।
 सुखकारण संसार सह, नयणाँ केरी नीति ॥८९॥
 नयण मिलतां मन मिने, मन मिले वयण मेलत ।
 वयण मिलतां कर मिले, इम काया गढ भेलत ॥९०॥
 जोर रखवाला पंच जण, समदाँ जेहा सयण ।
 कायागढ़ तोहि मिले, जाँ भेदे समये नयण ॥९१॥
 नयण समो बेरी नीकी, प्रत्यक्ष लागे घ्याय ।
 भाग पराइआ तणी, आप अग लगाय ॥९२॥
 नयण बाण जिएकुं लगे, ओखद-मून न ताँह ।
 ससक ससक मरी मरी जीवे, उदत कराह कराह ॥९३॥
 नयण बाण जिएकुं लगे, कीधो ओखद ताँह ।
 कूच टको पर पेटी भुज, अधर-पान पग बाँह ॥९४॥

नयण मिलंतइ मन मिलइ, मन मिलि वयण मिलंति ।
वयण मिल्यइ सहू संपजइ, कारिज सिद्ध चढ़ंति ॥६५॥

(चोपई)

कुंमर कहइ : "इम घरीय उमेद, इतरा दिन नवि लावो भेद ।
जीवन विण योवन सुविलाम, आज सफन मुक्त थया सु प्रकाश ॥६६॥

(दूहा)

अतरा दिन ओझा मुक्तइ, भोल्यो भोलइ भाव ।
हिय मे तुक्त बोलण सणी, डोल पलक न खमाय ॥६७॥

घन भाणस तेही ज घरा, सहुकवि दइन सु-साखि ।
चाहि करइ तिण-भुं चतुर, हिसि बोलइ हित दाखि ॥६८॥

हाम राम भासा गुपरि, सयणांतणो सभाव ।
बोलण हसण धुन छज्जही, जांणे मूरिख राव ॥६९॥

तन-विलमण मन-उल्हसण, वयण सयण सम वाणि ।
चप-निरखग घन विद्रवण, मानव-भव सुप्रमाणि ॥१००॥

सयण सरूप सोहामणो, मेला विण किणि ज्ञान ? ।
कायइ विण मेलइ क्रियइ, जांणे चोली पान ॥१०१॥

हास भाम नही जास मुखि, गया जंम्मारो त्याह ।
जांण कि महकी मालती, सूना जंगल-माहि ! ॥१०२॥

विरस-भ्यूं नहो जस विरस, चाहक-भ्यूं नही चाहि ।
गाहला योवन-नी पारे, गयो जम्मारो त्याह ॥१०३॥

पालइ निनु अति प्रेम रस, आंखि वयण अदीण ।
अवसरि मेलो अप्पही, ते साचा मुकुलोण" ॥१०४॥

ययण नयण सयणह तरो, इंगित नइ आकारि ।
कुमरी ज्याण्यउ कुंवरनउ, चित ययु सुविकारो ॥१०५॥

(चोपई)

वार-वार मन कुंवर विचार, कुमरो जाण्यो एस विकार ।
कुमर चित आवइ जेतलइ, सांम्हो तन कुमरी भोकलइ ॥१०६॥

(द्रहा)

'आउ' नहीं आदर नही, नेह-हीण निरखंत ।
तिण दिसि कदे न जाईये, जा कंचण वरखंत ॥१०७॥

आउ कहे आदर दीये, आसण बैसण सार ।
उठि मिले मन मेलिनइ, तिहां जाईये सो वार ॥१०८॥

नयण नयण मिलिया नि हसि, पूठे मन परधान ।
नयण नयण मन मिल्या, सयण थया सुविहांण ॥१०९॥

(चोपई)

निरख्यो कुंभर कुंभरी नयण, मोहाणा मनि जाग्यो भयण ।
पल पल देखइ नयन पसारि, खिण विहसइ खिण बिलखी नारि ॥११०॥

मालस मोडइ भांजइ अंग, मरट धरइ लेवा मन द्रंग ।
खिण नीतास करे कससे, कामदेव जागत कसमसे ॥१११॥

धाम चरण भंगूठा नखे, खिणि नीचो जोइ भूमि लिखे ।
कुमर-नि जरि सांम्हो ते देखि, संभालइ निज चीर विशेषि ॥११२॥

प्रेम प्रकास करइ मनि रली, कुमरो तस विरहइ आकुली ।
कुमरइ दीठो तस आकारि, धनि धनि ए नारो संसारि ॥११३॥

घातुर हुवइ बोलइ अकुलाइ, कुंभर-वतइ खिणि नचि रहिवाइ ।
प्रीति नीति मन धरि आपणी, गाहा रस बोलइ ते गुणी ॥११४॥

(गाहा)

विण दीहे ग्रह मणीयं, विण महुरे होइ अमीय सारिन्छं ।
रे कव्व-रेण-महियं, ग्रह चुंबुं मो सही देहि ॥११५॥

[सार्वांगिणी वाक्यं]

(इहा)

अमीय-निवासो ग्रहरि सुणि, गुण आस्सव सम जास ।
चख-मिमल मन विहलपण, तिण जणि हुवइ परगास ॥११६॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

पत्थर विण्णण चसोयं, विण गंधेण सौतलं होइ ।
कान्हा मान सहितं, सखो मो चंदनं देहि ॥११७॥

[सार्वांगिणी वाक्यं]

चंदन चतुर विचारि सइ, चतुरंगां चतुरंग ।
चंदो विण चंदण दीपुं, पडहो वजाडइ द्रंग ॥११८॥

(चोपई)

इस बोलइ खोलइ मन वात, हसि घसि रसि जब बोलइ गात ।
आलिगन चुंबन जब करइ, थोभो आवइ तिणि भवसरइ ॥११९॥

कुंबरइ गुरु दीठो आवंत, मत जाणइ आणइ मन आंति ।
हलफल करि आवइ घर-बार, भूंकत मनवि लहइ लगार ॥१२०॥

(इहा)

भाणा-खडहड खग-भड, घाल्हां-तरा बिछोह ।
एतां वानां जे सहइ, तिण-रा हियडा लोह ॥१२१॥

रेहा नेहा मन-तरा, प्रिय तिय नयण सुहाउ ।
ए छूटंतां दोहिला, जइ सिरि जाइ तो जाउ ॥१२२॥

(चोपई)

सदयवच्छ व्याकुल अति घणूँ, हिय बरएण फिरीयउ मुख तएउ ।
तिण अयसरि ओम्हइ मतिसार, दीठा कुमर तएण आकार ॥१२३॥

ओम्हे ते दीठी कुंअगी, सदयवच्छ विरह करि मरी ।
घास भास दीठो तस चेत, ओम्हइ जाण्यउ विणुठो वेत ॥१२४॥

यतः

आकारैरिगितैर्गन्या, चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्र वक्त्र-विकारेण, शायतेऽन्तर्गतं मनः ॥१२५॥

(दीहा)

ओम्हइ सगलो अटकल्यो, मनमां विहुँ-रो मेल ।
मुहि वयुं ही आख्यो नही, एह विधाता खेल ॥१२६॥

गिरुमा सहजइ गुण करइ, जो अयगुण लख होइ ।
सांगी बाँको ही लखइ, मरम न छेदइ तोहि ॥१२७॥

(चोपई)

ओम्हे मरम बिहुनो लह्यो, तो परिण मुखि वयुं ही नबि कह्यो ।
सावलिंग नो थयो वियोग, सदयवच्छ^१ मन हूवइ शोग ॥१२८॥

आसए वेसए पाँन फूलेल, मूवयाँ काम-वतूहल बेलि ।
न करइ वयुं ही बीजूं काम, जप-माला फेरइ तस नाम ॥१२९॥

(दूहा)

सातां पीता खेलतां, वयुं ही तृपति न थाइ ।
सदयवच्छ सावलिंगा-तणो, खिएण विरहो न. खमाइ ॥१३०॥

१. 'मयया सवि भोग'

भरण गुणण भोजन भगति, हास भास हित होंम ।
सदयवच्छ नवि संभरइ, इक निस-दिन तस नांम ॥१३१॥

सोकि तणो संगम सुणी, नीद पुरातन नारि ।
निमख लगइ ही निस भरइ, भोटइ नही भरतार ॥१३२॥

यतः

एक द्रव्याभिभाषित्वं, परमं वैरि-कारणं ।
विशेषेण सपत्नीनां, भाषाया सरलता कुतः ? ॥१३३॥

(चोपई)

घटा जिके भएता चट शालि, एकेकणि रखवाली शालि ।
भौभइ कुमरी-नइ दीयो आदेस, राखण तिण वनि कीयो प्रवेश १३४

भौभो भाखइ रूदा भणी, “कुमर ! आज वारी तुम्ह-तणी” ।
मान्यो कुंभरइ वचन ज तेह, अंतरगति थयो अंदेह ॥१३५॥

(दूहा)

आज किहिनइ स्युं हतो, रखवाला नो हेत ।
करतां एम विचारतां, कांइ धरइ नही चेत ॥१३६॥

हूँ उणिरों उवां माहरो, साद सुणंता सार ।
इतरो हो सुख अम्ह-तणो, साख्यो नही करतार ॥१३७॥

नयण रहो, मन ही रहो, रहो सुवयण विचारि ।
सयण रहइ जिण दिसि तिका, कांइ खोस्यइ करतार ? ॥१३८॥

(चोपई)

मन दृढ़ करि पुहुतो मतिमंत. तिण वनि तिहां मुणिय्यो विरतंत ।
तिणखिणि तिहां जाइ ऊमो रहइ, तिणखिणि वयणसयण सर
दहइ ॥१३६॥

(दूहा)

कइ कोइल कुहका करइ, कइ वंशी वीणानाद ।
सुणि सुदो संकित थयो, अनि चित-मां उन्माद ॥१४०॥

(चोपई)

चतुर चूँप पेखइ चिहु ओर, चातक जिम पेखइ घनघोर ।
तिहां-थो ते भाषो संचरइ, सा दोठी चंपक-भांतरइ ॥१४१॥

(दूहा)

न्यानी नयनां सारिखो, नहीं कोई संसारि ।
विकसइ प्रिय-जन देखिनइ, सो वरसे ही सार ॥१४२॥
विह आणइ विह मेलवइ, विह मंडइ उपचार ।
अलगो ही नैंडो करइ, ए विधि-वणउ विचार ॥१४३॥
तन मन जीवन-दिन सफल, आज कीया करतार ।
बीछडोया साजण मिल्या, पुहुतइ पुन्य प्रकार ॥१४४॥

(चोपई)

कुंमरी पिण चिता थो घणी, हुँतो निज प्रिया मिलिवा तणा ।
ते आंणी मेल्यो जगदीस, गई आरति, पूगी सुजगीस ॥१४५॥

प्रिय दिट्ठो भर प्रेम प्रकास, अंगि अंगि वाघ्यो उल्हास ।
रूंकट कंचु अति उल्हसइ, प्रिय संगति हुई तिण हसइ ॥१४६॥

(गाहा)

पुर पट्टणे निवास', पंडिय पास' च निश्चला रिद्धि ।
सरणी नयण विलास', पामिज्जइ पुन्न-रेहाइ ॥१४७॥

(द्रहा)

जोराद्धरि लीधो हुंतो, विरह मदन निवास ।
फिर मदनइ पते पुरलीयो, ए विधि-नो सुविलास ॥१४८॥

वेढ मन मिलिया बहसि, साईं आई दीघ ।
घण दिवसो विरहो हुंतो, नयणे तृपति न कीघ ॥१४९॥

(चोपई)

अति सुंदर मदिर आराम, निपुण नाह वामा अभिराम', ।
देखि देखि एकंतइ ठाम, कहु किणनो नवि जागइ काम ? ॥१५०॥

यतः

दृढ़-कच्छा कर-वरसणा, बोलेंता अंह मिट्ट ।
रण सूरा जगि बल्लहा, ते मइ' विरला दिट्ट ! ॥१५१॥

(चोपई)

विरह-चित्त हुंती ते गई, कामिनी परिण काम बसि अई ।
बेक नयण मुखि बेका नयण, इणिअहिनीणि ३जोणि मयण ॥१५२॥

१, 'जाणे'

कुंमरइ ताव तिणि कुंमरी तणो, कर पकडयो मनि ठलट घणो ।
दीण मधुर बाला दाखवइ, मुत्ति सोहग अमृत रस खवइ ॥१५३॥

मन आनपि कीयो वसि प्राप, थयो अंगि उनमाद अमाप ।
स्पर्णलिगन चुंवन सार, वहि-रति सात करइ तिणवार ॥१५४॥

(दूहा)

"सावनिगा !" सूदो कइइ, "एह वयण अवधारि ।
ए अवसर आराम ए सकन करा सुविचार ॥१५५॥

(गाहा)

जच्छ विजलं न छाया, छाया जलं न सीतलं होई ।
छाया जन-मनुता, ए सजोगो दुखहा होई" ॥१५६॥

[सावनिगा वाक्यं]

नयण चमकयो वयण रस, सगुणो एम सुहाइ ।
'नाउ' अज्जाणो-ह-सू, चम्मो चम्म घसाइ ॥१५७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

अंव पक्के बहु भांति, कि टूक इक खाइये ।
वाडी वन-फन होइ, तो तोडि चखाइये ।
गागर पांणी होइ, तो पंथी पाइये ।
परिह्रा, रख्यो कहि कहो होइ, मरेई जाइये ॥१५८॥

१: 'मूरत-हंदि प्रीतरी चाम्यो चाम घसाइ'

सो जीवन सु-पसाउलो, सो तन धन गुण-ग्राम ।
पर-काजे पूरा करे, प्रीन तणो तस नाम ॥१५६॥

[कुमरी वाक्यं]

“लूखो सूखो खाई-नइ, आधी काढइ ऊख ।
काची कली न तोडीयइ, जो लागइ लख भूख” ॥१६०॥

तिणि खिणि वायु-तरणइ वसइ, ऊड्यो कुमरी-चौर ।
सूदमो तस तन देखिनइ, आतुर ययो अधीर ॥१६१॥

वाये ऊडइ पंगुरण, कुंमर चलीयो चित्त ।
प्रथम राति वाधा तिणइ, सदयवच्छ-स्यूं दत्त ॥१६२॥

(चीपई)

शीतल जल चंपक-सुवास । छाया सेज कुसुम सुविलास ।
पोढया वेउं प्रेम पियास । उर मेनी अधिको उत्थास ॥१६३॥
ओम्हे चटडा मेलहया चारि । सेवा तिहां वेऊं नी सार ।
जोई तिहां खिण इक नवि रहइ । पाछा आई ओम्हा-नइ कहइ ॥१६४॥

(मेसालीया वाक्यं)

“गुरुजी ! उइ सूओ उवा सूई । कुसुम सेज पाथरे सूइ ।
ग्रहरे ग्रह बिलंबीया । सागरे खालि खनि सूईय ॥१६५॥

(इहा)

सांभ समइ जाग्या सही, अंतरगति एकलास ।
बोछटतां बोलइ वयण, सावलिंग सु-विलास ॥१६६॥

‘सूदा !’ [सावलिंगा कहइ], ‘एह’ ज अधिक सनेह ।
राखो भाखो मत किहां, दाखो कदहि न छेह ॥१६७॥

ए चंपक आराम ए, बलि मत्त-मेलो एह ।
जिहां तिहां चीत धारिनइ, धरिज्यो अधिक सनेह ॥१६८॥

(चौपई)

स सनेही आया घटसाळ । ओम्हो चित संकयो ततकाल ।
पूछइ ओम्हो कुमरी प्रतइ । ऊरी मई आणुण-रे मनइ ॥१६६॥

(श्लोक)

पय-पत्री विसालाशी, कएँ सोमंति फुंडला ।
येन कार्ये बने गता, सर्काम सफलं कृतं ? ॥१७०॥

[सार्वलिगा वाक्यं]

“अजेस कुंभर आयाणो, कर ग्रहि लीडंति छंडिया सांमा ।
त्रिया एह सभायो, ना ना करता वाघए प्रेमो ॥१७१॥

(चौपई)

सांम समइ आया निज गेह । विहुआं विरह त्रिमाकुल देह ।
सार्वलिगा भोजाई पासि । वईठी अवर सखी सुखी वास ॥१७२॥
निज भत्रीजो लेई उछंग । खेलावइ अधिकइ मनरंगि ।
खिएमइ लावइ अघर पियास । मिडइ काम जणावइ तास ॥१७३॥
आंचल मुखि आपइ उल्हसइ । मुग-स्पूँ मुख मेलीनइ हसइ ।
नएँद प्रति भोजाई कहइ । “लाज सह तुम्ह अलगी रहइ ॥१७४॥

(गाथा)

घाला मुख म लाइस वालं, अपजस वज्जसी नयर मभालं ।
बालो लहनी अवर सबांद, ते बालो तजसी सोर-सवादं ॥१७५॥

(चौपई)

“किस्पूँ करो ? रहो सांसतां, दूरि करो बालक-मुख हूँ ।
पूरण लखण थयां तुम्ह-वसां, वयण कहइ कुमरी आपणां ॥१७६॥

(चौपई)

[सावलिगा वाक्यं]

(दूहा)

घण जोवण भींअल छिले, विरह अंगि न समाइ ।
सखी सलज्जी गोठडी, कहता किएहि न जाइ ॥१७७॥
सखी सलज्जी गोठडी, नीलज नयण निहीर ।
तुम्ह ज्यूं अम्ह पयोहरां, कदे वहेसी खीर ? ॥१७८॥

(चौपई)

तिण अबसर तस बंधव सार । सिंह आवइ तिए महल मझारि ।
सावलिगा जाइ अलगी रहइ । तव भाभी सह वारता कहइ ॥१७९॥

“सुणि पीतम ! बाई तुम्ह तरणी । कामवती मनि इच्छा धरणी ।
जोवन विरहइ अे व्याकुली । परणावो पुरो मन रलो” ॥१८०॥

सिंह सुणि मनि थयो विचार । ब्राह्मण इक तेढयो तिए वार ।
सात दिने साहो थापीयो । पुहुपावती पुरि कागल दीयो ॥१८१॥

सावलिगा परणावण काजि । सिंहइ सगला कीया ममाज ।
उच्छव मंडपा अधिक ऊछाह । निस दिन कुमर निहालइ राह ॥१८२॥

खातां पीतां भोग विलास । रलीयाली तरुणी रंग रासि ।
हय गय रय सोहग परिवार । राय न करइ सूदो तिए वार ॥१८३॥

(दूहा)

रजवट, घट, हय गय तरणा, नव परणी वर-नारि ।
सूदो सावलिगा विना, क्युं नवि मातइ सार ॥१८४॥

सगलइ, गज-सामइ, सदा, खान पात-सन्मान ।
पिए, रेवा, तिए, हेना नही, तिम समु कुमर निदान ॥१८५॥

मन बंको मन बावलो, चंचल चपल सुचार ।
 पेसव मन जिहां रय करइ, ते गति अलख अपार ॥१८६॥
 सो घर सो पुर नगर सो, ज्यासूं सयणा चार ।
 जिण-सूं मन लागो रहइ, सो कोईक संसारि ॥१८७॥
 सारीखो राचइ सदा, सारीसि सद भाई ।
 सारीसा संगम विना, फल कच्चइ मन जाई ॥१८८॥
 महीयल जण बहुला मिलइ, अद्भुत रूप उदार ।
 मनगमता भाणस विना, सूनो सह ससार ॥१८९॥
 भाषइ दिन-प्रति सदय नृप, लुवघ थको लेसाल ।
 विण कुमरी व्यापइ विषम, विरहानल असराल ॥१९०॥
 जिम चातक जलहर सदा, चाहइ चंद्र चकोर ।
 कुंवर सुकुमरि न देखतो, ईपइ ज्यारों ओर ॥१९१॥
 ना घरि, ना पुर नारिस्पुं, नवि नेसालइ नेह ।
 विण तिणि स्तिर वेवइ नही, सूदो सुख-ची रेह ॥१९२॥
 दीठो सुदय दयामणो, इक दिन ओझइ आप ।
 मिसि करि सुदय दयामणो, एहवो करइ अलाप ॥१९३॥

[प्रीक्षा वचन]

“आज कालि नावइ इहां, सावलिगा पढ़वाह ।
 सात दिवसमां तेहनो, मंडाणो बीवाह ॥१९४॥

(घोषाई)

सुणि सूदो इम वयण विचार । आतुर मिलिवा थयो अपार ।
 तिहां थी आयो वेस्या तणइ । धन आपि मांनइ अति घणइ ॥१९५॥
 राजपुत्र आयो इम जाणि । आपइ आदर करइ प्रमाण ।
 सवि शृंगार बिछावइ सेज । हाव भाव-सूं मंडइ हेज ॥१९६॥

ततखिए बोलइ सुदय नरेस । “काम नही रतिनो, सुणि वेस ! ।
 अवर काजि आया अम्ह आजि” । कहइ वेस्याः “फुरमावो राजि” ॥१६७॥
 अरथ किस्तू आवेस्यइ पछइ, वात जणावो पुण ते अछई ।
 राजि तरिण नवि आवइ कामि, जलि जावो गुण ते सुणि सांमि ॥१६८॥

(दूहा)

ओ बाल्हो निय सयणो, ओ बंधव अभिराम ।
 लाखीणो अवसर लहइ, आवइ आपुण काम ॥१६९॥

यतः

अपसर चुक्कइ रस गयइ, आदर करइ अर्याण ।
 जे रिण गुण-विण बाहीयां, ते किम लगइ बाण ॥२००॥

(चौपई)

“तेह तणो मंडयो बीवाह । हुं जाई न सकूं तिण राह ।
 जनम जीव मुक्त तो परमाण । देखूं जो ए कुमरि सुजाण” ॥२०१॥

वेस्या कहइ हीयडो उल्हस्यो । “एह बातनो बोहिलो किस्त्यो ? ।
 [ते कहइ] वयण हीयइ निज धरो” । कुंमर कहइ, “ढील
 सी करो ?” ॥२०२॥

“कुंमर ! वैश करो स्त्री-तरणो । आवइ तसू ऊलट धणो ।
 वेस्या बे सार्वलिगा पासि । आवे बोलइ बचन विलास ॥२०३॥

(गाहा)

पावस रुद्रो रयणी, पिय परदेस विम्महा पंथो ।
 पर पुरुषाणइ नेहं, पामिज्जइ पुत्त-रेहाइ ॥२०४॥

(चोपई)

सार्वलिगा सुणीयो तस वयण । फिरि बोली बंकी करि नयण ।
 मनि भावइ पणि नवि जाणवइ । तेहवो वयण कहइ ते हवइ ॥२०५॥

(गाथा),

पिय-मिलणी कुल-छनणी, अपजस-पडहो, वज्जमी नयरे ।
सरसव-पमाण सुखं, दुखं तह होइ . मेरु-सारिच्यं ॥२०६॥ .

(चौपई)

मुह गारी वेस्या नइ तिणइ । पाछी फिर आई तिण खिणइ ।
फिरतो बोल्यो सद्यष्टुमार । हरसि निरसि ससनेही नारि ॥२०७॥

[सद्यवच्छ वाक्य]

(गाथा)

नव सत्ता ससीवयणी । हार आहार बाहणा नयणी ।
जलचर मग्गा गमणी । सा मुंदरि कच्छ पामेसि ? ॥२०८॥

(दूहा)

जाण्यो ए तो वल्लहो, जिणि-सूं कीधो बोल ।
निरसि मुल कि कट्टइ माननी, एक ज वयण अमोल ॥२०९॥

नगर मज्जे सालूरं, सगति रूप पाडिया विवं ।

[.....] ॥२१०॥

[सार्वलिगावचन]

(दूहा),

"देहू नगरी-मंही अछइ . जस) सालूम्ह नाम ।
सगति रूप देवी जिहां, तिहां पामिसि ते ठाम" ॥२११॥ ,

सुणि वांणी हरसित थयो, करि संवेत्त सुकतय ।
वेम देई वेस्या तणी, भाग्यो निज घरि जत्थ ॥२१२॥

मोरां जिस मेहीं तणी, ईपइ घाट कछाह ।
राह तिमइ जोवत्त रहइ, कदि आवइ दिन ताह ॥२१३॥

(चोपई)

दिन जाणी आणी उल्हास । आज हुस्यइ कुमरी मुक्त पासि ।
आवइ ठामि इक चूँप धरणी । करइ सझाइ अमर्णा तणी ॥११८॥

(दूहा)

आफ विजयादिक अमल, चूरण करि खलबोल ।
सदयकुमर बैठो जई, देवल अधिकइ लोल ॥११९॥

(चोपई)

सगन दिवस आइ तस जोन । सारबलिगा परणी सुभ वान ।
सयण भुवण ति नारी नइ नाह । आया अंगि अधिक उछाह ॥१२०॥

धूवा चंदन मृगमद घनसार । सू घा पहिरया तन सुखकार-
सखरो सीसा अधिक सुचंग । परिमल कुसुम सुवास पालिग ॥१२१॥

तिण उपरि बैठो जई आप । मदनराय केरी सिर छाप ।
जाग्यो मयण दीठी प्रिय नयण । कहइ, "अरहा इम भावो इम अण" २ ।

(दूहा)

नाहइ तिण नारी-तणइ, कर करीयो उरसार ।
सारबलिगा तिण अवसरइ, सको चित्त मझारि ॥१२२॥

[सारबलिगा स्वयं वचन]

"बालपणइ बोल्यो हुतो, वयण सुदय-चूँ सार ।
ते जो निर्वहूँ नही, तो मुक्त नइ धिक्कार ! ॥१२३॥

सुंदर निपुण सरूप सुभ, नितु मव नेह निघोल ।
निज बाधा पालइ नही, ते माँणस के हइ ग्यान ॥१२४॥

'जावो धन घरणी घरम, गुण 'गाढिम मति' प्रेम ।
'सति आ सति जावो सहू, पिण वाच म जाग्यो तेम ॥१२५॥

मुक्त वाची साची कहूँ, संगति सदयकुमार ।
इम चींतवि प्रीतम प्रतइ, वाचइ वचन विचार ॥२२३॥

(चंद्रायणा)

“अंव पका बहु भांति, मरुंगी डालीयां ।
मेरे हीयडे हाथ न घालि, कि छुंगी गालीयां ।
गहिला मूढ अचूक, अयाण कि बावला ।
परिहां, हुं मालणि रखवाल, कि भांवा रावला ! ॥२२४॥
मुणि बोल्यो सारथ सुतन, एहो वयण म आखि ।
अम्ह अमोलिक अंव ए, लीघा जाणइ लाख” ॥२२५॥

(चंद्रायणा)

रहु मूष ! अयाण, वात न अखीये ।
एणि समइ रस-रीति, कि प्रीति सु रक्खीये ।
वात न अखइ फोइ, किमा खासह जणा ? ॥
परिहां, कुण रावल रखवाल, कि भांयो अम्ह तणा ?” ॥२२६॥
कहइ सावलिगा कांमिणी, “आई मुंही ज इण हीय ।
मै आप्यो तिण वचननो, मुणि परमारथ प्रीय ॥२२७॥

(चोपई)

बालापणो हुं रमती बाल । संगति-पूज करती प्रहकाल ।
देवी तूठी प्रेम प्रकार । “सुंदर वर पांमिसि मुविचार ॥२२८॥
मुणि कुंमरी ! तूं रति-अवसरइ । पहिलो जात्र अम्हारी करे ।
जात्र विना जो करसि संमोग । पति मरिस्वइ पडिस्वइ घर सोग २२९
आखूं हूँ तिणि एहवी वात । संगति-तणी मुक्त करिची जात ।
सेवक महइ : “वेगा हवइ । रंगरली रयणी बालिवइ” ॥२३०॥

कुमरी कहइ: "हिव डांस्यो काम । प्रह जाई करिखूँ प्रणाम ।
 "ना हिवणाँ जावो " कहइ नाह । सारविगा ओठि लीधउ राह ॥२३१॥

(इहा)

निज मंदिर सुंदर निपुण, नाह व्याह उच्छाह ।
 तजि तृण जिम ए सह सुरत, पाली बोल प्रवाह ॥२३२॥
 भासा करि यूँ ही रहइ, वहसि न पालइ बोल ।
 पुहवी ते पापी प्रथम, माँएस कवड्डी-मोल ॥२३३॥
 बोलइ थोडा बोल, बिहचइ निरवाहइ घणा ।
 ते माँएस-रो मोल, लाखेही लाभइ नही ॥२३४॥

(चोपई)

ऊमगि मगि चालइ मयमति । राति अंधारी अतिभय अति ।
 चोर खापरो नइ कोडीयो । देखि कु मर साह मनि कीयो ॥२३५॥
 बोली तिरु अवसरि सा बाल । करि करि ऊषा सगति विसाल ।
 हाकाँ करि मुखि बोलइ हसइ, धू कल करि कूदइ घसमसइ ॥२३६॥
 'माँगि, माँगि तूठी हू माय ।' तिरु खिरु बे प्रणमइ तस पाय ।
 'जो माँग्यो तूँ आपइ दान । जीमण आपि मलीदो दान ॥२३७॥

(इहा)

नक-भोती दीयो नवो, देवी रूपइ दाखि ।
 भोजन करिज्यो भगतिसूँ, मोल इयें-रो लाख ॥२३८॥
 धरघो कज्जल सावलो, धरघो कुंकुम-यन्त्र ।
 चोरे ले पाछो दीयो, ए चिरु भी नर-तन्त्र ॥२३९॥
 हहा जेज्जो गुण निपुण, कडीयो निपुण हत्य ।
 मोती ही घण मोलनो, मिल्यो गुंजाहल सत्य ॥२४०॥

सोवन-नेउर निज पगनणो । देवी दीय तउ माहिं घणो ।
देवहरइ भाई तिणवार । दीठो वंठो सुदयकुमार ॥२४१॥

पासि जाई ऊभी खिणभणो । बोलइ नही, थई वेला घणो ।
ठुमरी कर लीघो तस हाथि । तो पिण कुंमर न घालइ बाथ ॥२४२॥

(दूहा)

नवि धोन्नइ चालइ नही, न घरइ तिमभरि नेह ।
'धुणि साहिव ! [कुमरी कहइ], मजी किमूं ग्रंदेह ? ॥२४३॥

भीम भुयंग भेदीयो, छनीयो किणहि छलाव ।
घम टेरें घूमइ घणूं, ज्यूं तरवर बसि वाव ॥२४४॥

ग्रहि खीत्यो गारुड ग्रधिक, नवि बाहइ विस भाट ।
हाय लाचि रहीयो हिवइ, सूदो केही माट ? ॥२४५॥

"सूदा ! [सावनिगा कहइ], हिवइ पूरो हाम ।
है भाई हेजा लबी, किसी रीस विण काम ? ॥२४६॥

"सूदा ! [सावनिगा कहइ], समरइ केही रीसी ? ।
चूक पडयो बगसो चतुर, विलसो सुख सुजयोस ॥२४७॥

तजि निज मंदिर नाहलो, सरर तुलाई सेज ।
तुम्ह कारण भाई त्रिया, जोवइ हिवइ सीजे ज ॥२४८॥

तुम्ह मुम्ह वेउ मन तणी, अधिकी हुंती भास ।
भवसर मुंकी आजनो, नाह ! कांइ हुवइ निरास ? ॥२४९॥

आज लगइ तुम्ह मुम्ह अछइ, परघल प्रीति अपार ।
एक रूखो आदर भणी, आज जिस्यो अधिकार" ॥२५०॥

भेल किस्यो भूषयो कहघो, भामिणि सेती भाउ ।
बोलायो बोलइ नही, भखि भखि सहुं जण जाउ ॥२५१॥

(इहा)

म जाणसि वीसरीयं, तुह भुह-कमलं विदेस गमणंम्भ ।
सूनो भमइ करंको, जत्य तुमं जीवियं तत्थ ॥२५२॥
जम्मंतरे न विहडइ, उत्तम महिलाण जं कियं पिम्मं ।
कालदी कण्ह-विरहे, अज्जवि कालं जलं वहइ ॥२५३॥

(इहा)

नेह सुकुल नारी तणो, नवि विहडइ प्रिय विट्ठ ।
त्युं सूदा-सार्वलिगा-तणो, जांणो रंग मजीठ ॥२५४॥
म जांणो प्रिय मेहणो, दूरि विदेस गयांह ।
विमणो बाघइ साजणां, ओद्यो होइ खनांह ॥२५५॥
जोगीसर जोगासणइ, मंत्री जिम आलोच ।
तिण परि सूदा ! ताहरी, आज पडयो सो सोच ॥२५६॥
आज निहोरा मति घणा, नवि लायह सूदो नाम ।
घात न मंडइ कावली, करि लिखीयो चित्रांम ! ॥२५७॥
उंचो लेईनइ जोईयो, सूदा सुदय नरेस ।
जिणि उरि दोइ नारिग फल, सो तूं कत्थ लहेसि ? ॥२५८॥
“सूदा ! [सार्वलिगा कहइ], हवइ एवढो स्यो हठ ? ।
मोडी आई मांनिनी, तिण घरयो मन मठ ! ॥२५९॥
“सूदा ! [सार्वलिगा कहइ], कुमर न जांणो कत्थ ।
जिणि कारणि मइ लाईया, छाती चंदन हत्य ॥२६०॥
नीद्रइ कवण न छेतरया ?, जोवन कुण न विगुत्ता ? ।
जो प्रिय भीडूं उरह-स्यूं, तोही सुवइ नचित ! ॥२६१॥
जिमं सालूरां सरवरां, जिम घरती अरु मेह ।
अपावरणा वत्सहां, इम पालीज्जइ नेह” ॥२६२॥

उर भीड़इ चुंवन करइ, बलि बलि करइ विपास ।
 गूदो अमलि सके लीयो, नारी थई निरास ॥२६३॥
 बोलायो बोलइ नही, नयणे नोद निपट्ट ।
 जाती ए गाहा निसी, कुमरि भेल्हि कपट्ट ॥२६४॥

“मूदा ! [सावलिगा कहइ], साची प्रति संसार ।
 देखइ देव मिलावढो, पुहपा-नयर-मभारि !” ॥२६५॥

मुरा नीसासा मूंकती, नयणे नीर प्रवाह ।
 गाहा लिखी पाछी वली, मूंकी मन उच्छाह ॥२६६॥

(चोषई)

थाई सावलिगा आवास । फीकि भनि थई अधिक उदाम ।
 प्रीय कहइ, “करि आया जात्र ? बिलखा किम दीसो ?
 कहो वात” ॥२६७॥

कुमरि कहइ, “पाली मई वाच । तोही सगति न मानी साच ,
 मूल नगर तुम्ह पुहपावतो । देवि कहइ मुक्त तिथि तिहां हतो ॥२६८॥
 देवल नवो करावो तिहां । मूरति करो सरीखी इहां ।
 तिहां मानिसि यात्रा तुम्ह तणी । तव लगि मत भेटे तूं धणी ॥२६९॥
 बिलखी हूं तिणि सुणि वालंभ ! । दिन एहया जायइ किम अंत ? ।
 हिवइ हालो नगरी आंणणी । यात्र करीं जिम देवो तणी” ॥२७०॥

भोजन भाते जीभी जान । उपरि दीघां फोफल पान ।
 भगति जुगति भल भूपण भेद । ले चाल्यो निज नगर उमेद ॥२७१॥
 हिव चाल्यो ते सदयकुमार । अमल ऊनार हूमो तिणवार ।
 नोद गई विकसी दुइ नेत । भालस मोडि थयो सावचेत ॥२७२॥
 विकस्या कमल सुपरिमल वास । पोली दिसि पूरव सुप्रकास ।
 तिणि खिणि मति विकसि पणि तास ।

‘हा’ मुक्त मूक्यो तिणइ निरास ! ॥२७३॥

(दूहा)

पीपल पाँन जु खण्ण्या, निसि आंवरी लोई ।
 रहि रे होयडा ! मुटु करि, इहा न आवइ कोई ! ॥२७४॥
 किहां नारी ? तू किथि गयो ? रहि हीया, म म भूरि ।
 पीड न जाणइ तांहरी, सहू निज कारिज सूर ॥२७५॥
 करियल करियल उर आपरयो, बलि रस्याथनो ब्रहे ।
 तिसी नेह नारी-तणो, भटकि दिखाडइ छेह ॥२७६॥
 निज प्रिय मारइ हत्यसूँ, अनाचार आचार ।
 नि-सतेही नारी-समो, सुणीयो नही संसार ॥२७७॥
 नीची गति भति निरति रति, नीचह-सोती नेह ।
 ऊँच तणो आदर नही, अचरिज त्रियनो एह ! ॥२७८॥

(यवः)

सीयां सीयां पांणोर्यां, इयाँ त्रिहुँ एक सभाव ।
 ऊँचा ऊँचा परिहरइ, नीचाँ उपरि भाव ॥२७९॥

(दूहा)

रवि-चरीयं गह-चरीयं, तारा-चरीयं च राहु-चरीयं च ।
 जाणति बुद्धिमता, महिला-चरियं न जाणंति २८०॥
 जल-मन्त्रे मच्छ पर्यं, आकासे पंक्षीयाँ पय-पंती ।
 महिलाए पहिब मग्नं, तिघ्नवि सोए न दीसंति ॥२८१॥

(चंद्रायणा)

जाँणकि रंग पतंस, को दिन दुइ प्यार हइ ।
 पावस मास सु पूरन, बलहाँ ठरहइ ।
 पूरव प्रेम प्रवाह, कि 'बहताँ ही बहइ ।
 परिहां, निचल नारी नेह, कदेही नाँ रहइ ! ॥२८२॥

मुखि कहइ 'तू' मुक्त यार', अरु नहु प्यार हइ ।
जाणइ मुग्धा लोग, किए सह सार हइ ।
मन तन अवर, अनेरा सूं करइ ? ।
परिहां, नारी तणो सनेह, न को जन मन घरइ ॥२८३॥

मांडइ प्रीति असंड, कि जाणइ साच हइ ।
आउंगी तुभ पासि विलास, कि मेरी वाच हइ ।
मेलही तास निरास, कि और स्यूं भोगवइ ।
परिहां, एकणि बार अपार, चरित प्रीय केलवइ ॥२८४॥

एक समि मइं आस, आस की पूरवइ ।
ताकूं दाखि सराप, कि आप सती हुवइ ।
खिणिक दोस, खिणि रोस, खिणिकि इकमां वहइ ।
परिहां, काती कुत्ती जेम, फिरती तिम रहइ ॥२८५॥

(इहा)

जोहा मुखि जाती रहइ, नेह न धारइ चित्त ।
तल काठइ गल लेइ नइ, एहवउं नारी-चित्त ॥२८६॥

अणमिलतां आयो मिलइ, मिलतां घरइ जु मान ।
ए गति नारी नी अछइ, सुणिज्यो चतुर सुजाण ॥२८७॥

तिय, बैसास मत को करो, तियों किसकी-नाहि ।
मुक्त मूकयो इहां विलवतो, रंग रली रस-माहि ॥२८८॥

धिग तेहनइ धिग मुक्तनइ, धिग मन जनम धिक्कार ।
वाप्ता करि आइ नही, नीलज नारि निक्कार ॥२८९॥

रोस भरी नइ उठीयो, जंपइ सदयकुमार ।
... तिसो त्रियनो पियार ॥२९०॥ ;

आयो तिहां ऊठनइ, सदयकुमार निज - गेह ।
पग लडयड भड धूमतो, नारी-स्यूं निस नेह ॥२९१॥

गलइ हार लागी रह्यो, नयणइ रंग तंबोल ।
कज्जल अहरे देखिनइ, बोलइ निज श्रीय बोल ॥२६२॥

“विण लगाइ गलि हार, कि कंत किहां पावया ? ।
नयणे भय्या तंबोल, मुखि नहु भाविया ।
कज्जल काली रेह, कि दीसइ अहर-तले ॥
परिहां, जइ खाई जइ पर मांस, कि भूढ म वांवी गले ! ॥२६३॥

(दूहा)

सुणि सूदो मनि संकीयो, ईपि सहव आकार ।
अत-रंग आलोचिनइ, वाचइ वचन विचारि ॥२६४॥
‘रहु रहु’ ‘भूच’ अयाण, कि हासा जि न करो ।
आपण जाघ उघार, लाजां नाँ मरो ।
बालक पट्टा चीर, कि पत्यय किम ताडीयइ ?
परिहा, गायइ गिल्या रतन, उदय क्युं फाडीयइ ? ॥२६५॥

[पुनः स्त्री वाक्यं]

“हमस्यूं छाँडि कि प्रीति, अतेरा-स्यूं करइ ।
हम हइ तुम्हचे दास, और जि न मनि घरइ ।
उहा हइ नेह अछेह, इहा नहु लेखीयइ ।
परिहा, रोटी मोटी कोर, पराई देखियइ” ॥२६६॥

(दूहा)

सुणि वाणी नारी तणी, बोल्यो सदनकुमार ।
दुस्त मन ए भूली गये, ठाँमि ठाँमि करतार ॥२६७॥

(चंद्रायणा)

सारंग नेत सुचंग, काँम नहु आवीया ।
सोवन गयो निगंध, वास नहु पावीया ।

—१६७—

नागरवेलि कीय निफल, सफल वीय गांविली ।
परिहॉ, रांकां दीघ रतन्न, विघाता वावली ! ॥२६८॥

(दूहा)

कर भारी पांणी भरी, ग्रम्ह दांतण नइ सरथ ।
दासी लेइ आणी दीयइ, कुंअर-ह-केरइ हत्य ॥२६९॥

कर ये वे भेला कीया, चलू करेवा चाह ।
तेणि समइ नारी तणा, अत्यर दीठ उद्याह ॥२७०॥

धल लगी तिण चाह-सूं, न लीयइ निमल-मेख ।
“सूरति भूरति आगलि सही, जिम भाविक सुविसेप ॥२७१॥

सावलिगा आई सही, पाली पूरी प्रीति ।
निरभागी जाग्यो नही, तिण ए अत्यर नीति ! ॥२७२॥

फाटि फाटि रे तूं फाँटि तूं, हीया ! हिवइ भर हेसि ।
उ देवलउ वा कांमिनी, बलि कथ लहेसि ? ॥२७३॥

हीयडा ! फूटि पसाव करि, केता दुख सहेसि ? ।
सावलिगा विरहि सगुण, जीवी काहु करेसि ? ॥२७४॥

(गाहा)

रे हीय वंकि न लज्जसि, नहु जाणी जेण आगयां सामा ।
अनह कि न कहिज्जइ, सो भूलो चंप लोवि तुम्ह ॥२७५॥

रे हीया ! यज्जह घडीयं, अहवा घडीयं खिबज्ज सारित्यं ।
बल्लह-वियोग काले, कि न हुयं खंड खंडेण ? ॥२७६॥

रे नयणां ! तुम्ह घिण हूअ, नवि लखी आई नारि ।
पेम उपायो पहिल यी, किण कारण विण कारि ? २७७॥

(इहा)

करवतडा करतार, जो सिर दीजइ ताहरइ ।
तो 'तू' जागइ सार, वेदन मोछडीयां-तणो ॥३१०॥

हसत बदन हे जालवी, हरखवंत हितकार ।
बवरंगी नारी मुणो, किहों पाँमिय करतार ॥३११॥

चंदा-वयणी मृग-नयणि, वे पक्ष-वंस-बिगुद ।
हंसि हंसि नेह न दाखवइ, मेलि विधाता मुद -- ॥३१२॥

बहु गुणवंशी शशि-मुखी, रंगि रमे रस-लुद ।
चंपक-बरणी प्रति चतुर, मेलि विधाता ! मुद ॥३१३॥

शीन हुवइ कर देखि, वेदन भंगि न खमाइ ।
नीकालइ नीसास-मिसि, पिण्ड न बि छापी जाइ ॥३१४॥

एक दुखीयां वैरागीयां, जो नीसास न हुंति ।
हीयडो रत्न-नलाब 'व्यू', फुट्ट बि 'दहदिसि' जति ॥३१५॥

(बीपई)

नारो मालमु लोक परिवार, हय गय रथ पायक विण पार ।
चंदन चीर पटंबर वास, सूँघा वास सुवास बिचार ॥३१६॥

भाय साय निज राज भूँ काज, बंधव मित्र कुटुंबह लाज ।
सहू मूक्या वोर सेबइ वाग, कंचुक जिणि परि मूकइ नाग ॥३१७॥

नीकलीयो मूँकी नरदेव, सावलिमा-री करिवा सेव ।
कर घरि एक करवाल सहाय, प्रिया-नेह बीजो संगि थाइ ॥३१८॥

इम कहिनइ आषु संचरइ, पुहपावती चय दीठी नरइ ।
 पुर बाहरि सरवरनी पालि, सूतो देवल पढीय बियाल ॥३३७॥
 , पंधोडा देवल सरण ॥३३८॥

(इहा)

"कहा मुझ मंदिर मालीया, हय गयह सम हजार ।
 मा हूँ ज सूतो एकलो, जोन्यो नेह विचार ॥३३९॥
 सूरवीर साहस सबज, जस जस रस जग-भक्ति ।
 नर ते पणि नेहइ निपट, बिकल हुवइ बिण-बुझि ॥३४०॥
 गति मति छति सत महत गुण, दीपति गुन्दर देह ।
 खिण खिण सगला छूटनइ, नारी—केरो नेह" ॥३४१॥
 नीसासा भूकइ सवल, निसा बिहावइ निट्ट ।
 घर घण देखुं नाह बिण, घण बिण नाह न दिट्ट ॥३४२॥
 बिरहानल वेध्यो बिहल, साल्यो कुंमर साल ।
 बिलवइ सूतो मूघ बिण, सदय थया बिहवाल ॥३४३॥
 सो कीवि नट्यो सयणो, जस्त कहिज्जंति हियय दुखयांइ ।
 भावंति जंति कांठ, पुणो बितयेव तत्येव ॥३४४॥

(इहा)

केलि देलि मिलि करण, सगुणी छति ससनेह ।
 रस-सुपी रमती रमणि, देहि बिधाता तेह ॥३४५॥
 सिरज्या किमि संसार-भइ, बिण त्रिय-रसइ छयल्ल ।
 रूप कला गुणनइ भनइ, काँ नचि कीया बयल्ल ? ॥३४६॥

केता सुणि विह कूक्या, सांमी करुं पुकार ।
 मेलि केलि करती मुभनइ, नवल सुरंगी नारि ॥३४७॥

(चोपई)

इम बनेक तिहां करती विलाप, पुण्यवंत लागा किरि पाप ।
 कसमस करि ऊगायो भाण, गई राति फूल्यो सुविहाण ॥३४८॥
 ठटथो सदयकुमार दुख घणउ, उमाहो पणि देखण-तणउ ।
 करि दांतण कुरला ससि सार, तिहां थी आयो नगर-मभारि ॥३४९॥
 गाम नाम सगलो पूछीयो, कुंभकार घरि डेरो लीयो ।
 ततखिण गृह सार्वलिगा तणइ, चुणीयइ अंग रहण आपणइ ॥३५०॥
 लागइ तिहां सिलवट घणी, बनि जे अरधी रोजी तणी ।
 सार्वलिगा नइ तस भरतार, चोपड खेलइ मेइसइ मभारि ॥३५१॥

फिरयो पुर-मांहि कुमर प्रभाति, देखण तणी न पूजइ घाति ।
 कुमरी देखण मलजोयो घणो, कीघ्यो वेस मजूरां-तणो ॥३५२॥
 तेवे जिहां खेलइ नर नारि, लागइ जण जिण महल अपार ।
 पूछि मजूरी लागो तेह, खेलत श्रीय दीठी ससनेह ॥३५३॥

(दूहा)

द्वैलना दीठी खरी, सार्वलिगा ससनेह ।
 हरखित बोल्यो हैजस्पू, जाणा विण निज देह ॥३५४॥
 “सार्वलिगा !” सूदो कहइ, ओ चंपलो चितारि ।
 नयणां तणा पसाव करि, भइ बइदानो गारि ॥३५५॥
 महल सहल भइ मुकुले, खेलत पासा रारि ।
 तुरित श्रिया सुणि वचन, ते सकी चित-मभारि ॥३५६॥

जाण्यो ररो जणावसी, फोडक एह्वी किज्ज ।
 पासा मिस बोली प्रिया, राखण लज नइ फज्ज ॥३५७॥
 “रे रे पासा गमण करि, बाघी जोढी म मारि ।
 पासो तो परवसि पढयो, सकइ तो सीस ठगारि” ॥३५८॥

(चोपई)

इम कहिनइ बोनिइ ‘पो-वारि’, प्रियनइ कहइ, हिवइ सारी मारि ।
 सूदो वयण सुणी तेहनइ, मतउ करइ विष त्रिय भैहनइ ॥३५९॥
 महल-भकी वेस निवारि, निज डेरे आयो तिए वार ।
 आई वैस कीघा अदभूत, मारि लगोटो लगाइ भूमति ॥३६०॥
 रुदि सुत्तका अरि कोटिअ काजि, लेख लेख जणायो महाराज ।
 भरि कर-महि खण्ड सुविसेस, घाबि तिएइ भरि कहइ ‘अलेख’ ३६१
 कण घातण एक आई दास, घुरि ‘माई मूंडी’ कहइ तास ।
 एक भवरले आई मील, तिए नूं पणि ते दीयी सीस ॥३६२॥
 हाकां करि कूदइ हल फनइ, गाल बजावइ नइ ऊछनइ ।
 सार्वलिंगा-विण धरनउ साथ, कण घइ पणि नवि मडइ हाथ ॥३६३॥
 न ल्यइ दान किएही हाथ नो, थयो दुमन मन सहू सायनो ।
 पुंही जाण न बाँ तेहनइ, ‘जिम ल्यइ तिम आनो एहनइ’ ॥३६४॥

यतः

प्रतिथि यस्य भग्रासो, गृहात्प्रतिनिवर्तते ।
 स तैव पातकं दत्त्वा, पुण्यमादाय गच्छति ॥३६५॥

(दूहा)

ततखिण सार्वलिगा तुरत, सरस सुरंगी साल ।
लेइ भावी देवा भणी, हाथे थाल विसाल ॥३६६॥

उवां दायक उवो लायक, उपर नीचइ हृत्य ।
कर को नवि पाछो करइ, जांणकि लोभी सत्य ॥३६७॥

नारी निरखे ना हले, नारी निरख्यो नाह ।
प्रेमोदधि पेखत तिहां, उलटयो घणूं भयाह ॥३६८॥

घोर घोर निरखइ नही, न करइ अवर विचार ।
उ उणमइं डवा तेहमइं, धिणत थया सुबिकार ॥३६९॥

लख देखइ लख जण हसइ, लख बारइ लख हेलि ।
सुवध थका नवि क्युं लखइ, मिलिया नयण मेलि ॥३७०॥

नां ओ ल्यइ नां उवां दीयइ, इयुंहि कर जोडि ।
ते भख लेवानइ तुरत, कागा पडइ करोडि ॥३७१॥

तव तिहां तिण राजा तणी, कुंभरी उपरि नेह ।
काग पडंता देखिनइ, आपइं वचन सु एह ॥३७२॥

“इण नगरी भुरिख बसइ, पंडित बसइ न कोइ ।
कर उरि कागा भखइ ‘को को’ ‘करइ न कोई’ ॥३७३॥

वांणी सुणी तिणकुं अवरनी, कुंवरइ धरीयो कोप ।
बीजो को बोल्यो नही, इणिनइ केही ओप ॥३७४॥

पुहपावती-थी निज पुरइ, जाठं करूं बल जोर ।
मो रूठइ इण कुंवर नइ, लागीं पाप अघोर ॥३७५॥

धोल करी निज ध्वज बिन्हे, आयो नगरी बहार ।
 धोतवतां ईं चित्त-मई, आई मित्या ध्रमवार ॥३७६॥
 हीसा नेह हय पट पटे, कटक नही को ग्यान ।
 सुत बांसइ मूखयो पिता, स आई मित्यो परधान ॥३७७॥
 पुन्य प्रकार पोते प्रबन, हई सम पूगी हामि ।
 आई मिलइ चित चाहतां, मनवच्छित सहू कामि ॥३७८॥
 पूछइ निज परधान तूं, लिखियो कुंवर लेख ।
 पुरे भोजराजा दिसे, बांचइ विगति विशेष ॥३७९॥
 दूत जिहूँ अन्ह दाखवइ, सो जाँणे सहू वाच ।
 नही तो ऊडंतो लखे, नगर-मुहे नाराच ॥३८०॥
 प्रभु-कागल ले दूत सों, आयो पुरि अधिकार ।
 सामि कामि आखइ करी, आप तणउ आचार ॥३८१॥
 "भुक्त राजा सुणि राजबी !, इम आखइ अन्ह साधि ।
 कुमरी कुक्त बांधी करो, आपे एणइ साय ॥३८२॥
 खुसाय वे-नुमीमे करो, जो न कीयउ ए काज ।
 तातूं जाँणे तो भणी, रुठो सही जमराज !" ॥३८३॥
 सुणि राजा अति कोपीयो, सहीयो वयण न तास ।
 सीह कदेई ना सहइ पाखर भनइ पर-धास ॥३८४॥

यतः

तेजी न खमइ साजणो, ॥३८५॥
 जा जा रे चर जाह तूं, तोस्यूं केही रोस ? ।
 धायो जाणइ सदय नं, पूरण भोज जगीस ॥३८६॥

भोजराज रण-भूँभण काज, कीघो सगलो ही तव साज ।
गिर समवडि गड हति, मदोन्मत्त बहु मधुप भ्रमंति ॥३८७॥

काठी अति ऊँचा कूदण, ते तेजो देखीता भला ।
चंचल चपल चलत चनुरंग, धग तुरंग कि गंग तरंग ॥३८८॥

पयदल सबल विमल चनवंत, चढीयो नृप दल मेलि अनंत ।
सदयकुमार चढियो इणि वार, सिधूडइ बाजंतइ सार ॥३८९॥

कंचुक कवच कसइ कसमसइ, घरे घोर पणि अंग घसइ ।
सामिल बरण धरण मद घोर, सुभट घटा घन घट गंभीर ॥३९०॥

(दूहा)

अनए रावण सम समुद, मदवारण मातग ।
चढीयो तिण गज सदय नृप, सिर सिद्धर मुरग ॥३९१॥

वेऊं दल मिलिया यहसि, मिलिया वे रणभूमि ।
परसिरि खुरसाणे चढे, हूअ हयिधार सधूम ॥३९२॥

धगति इंद्र सुरगण सकल, सूरिज थयो सकस्त ।
घर कंषइ गिर थरहरह, इसीयाँ सूरौ रस ॥३९३॥

घर धूजइ दल धूंकनइ, कायर चित कंषाइ ।
सूर पतंगा रंग-स्यूं, भुकि भुकि माकि भंषाइ ॥३९४॥

घड कूदइ सिर ऊछनइ, गूथो हर वरमाल ।
सगति रगत पांसी करी, घाइ-तिण धकचाल ॥

धनि वृषाँलु सोमर घर कुंत, तोर बहद किरि गगन सहंत ।
 मुमट-मुमट गज-गज धग-धास, बहद भाग रगता मिय राग ॥३६५॥
 बहद धेपू डी दम बार, सदय मटक सवम तिणवार ।
 भाजे कटक गयो तब भागि, छूटो भोज सुदय पनि लागि ॥३६६॥
 शोण्यो सदय भोजद निज पुगे, परणार्ई सा निज कुंधरी ।
 कर मूँकायण करकेकाँण, छद पण कुंधर न करद प्रमाण ॥३६७॥
 कुंधर कहद एहने घरबार, जे छद नर नारी परिवार ।
 पील्हो गहु पाणी महि घाति, मन राग्यो एहनो तिन जाति ॥३६८॥
 सवय कहद छो मुम समनेह, बाँसी धनदत्त मेघ सगेह ।
 यात गैर कीधी तब ताम," सेठि बाधि प्राण्यो नृप पामि ॥३६९॥
 सेठ कहद "ल्यो धन भण्डार, खून बिना ए बडी मारि ।
 भोजराज परधानि फिरद," इसी बात साहिव किम करद ॥३७०॥
 प्राणइ कुमार सुणो नृप बात, सावलिगा नारी विल्यात ।
 जो धतेइह तो छूटो एह, आपू धन नइ मूँ शेह ॥३७१॥
 भोजराज धनदत्त-नइ कह्यो, सेठइ पनि ते सहं सर दह्यो ।
 समझाया सुत वधव याति, सगले ही मानइ ए बात ॥३७२॥

(स्तोक)

त्यजेदेक कुलस्यार्थं ग्रामार्थं च कुलं त्यजेत् ।
 ग्रामं जनपदस्यार्थं आत्मार्यं सकलं त्यजेत् ॥४०३॥

[धनदत्तश्रेष्ठ वचन]

(दूहा)

“पायो सुख इण्णी नही, कदे नवि घरीयो तिण नेह ।
घतग्राही परि बोलव्या, इणि दिन अपणइ गेह” ॥४०४॥

(चीपई)

इम घालोचि दोघी सा बाल, नर नारी मिलिया सु-रसाल ।
परहत्य चढी ए कीधी मोल, जोअ्यो इहा विधाता-खेल ॥४०५॥

(दूहा)

किण-रो हो किणनइ दीयइ, आणइ बलि तमु पासि ।
जन कोई न बिलखि सकइ, जे विधि तणउ बिलास ॥४०६॥

(गाहा)

राड करैई रंको, रंको पुण करइ राज सारिस्तो ।
जंन घरिजइ हीयए, विहिणा तं किजए सब ॥४०७॥

कह मंती कह राया, कह उभायस तहय अभयए ।
कह पुष्पावई मिलणं, पिच्छिबह विहिए रि सासंती ॥४०८॥

नियडं करेइ दूरे, दूरत्यं चेव आणए नियडं ।
जह सो वाय नरिदो, मिलीयो विहि बिलसीया तत्य ॥४०९॥

जं चंदणम्मि अहिणो, संभा समयम्मि भाग्रवंत्या ।
मिलियो बहु दिवसाउ, तहेव कुमरो रमारम्म ॥४१०॥

(दूहा)

“सूदा ! [सावलिगा बहइ”] घन्न सुवासर आज ।
 प्रीतम मिलिय धृति हुई, बज्जई सहसरीया ज ॥४११॥
 पुनिग-बैद मयक जिय, दिमि च्यारे फनीयाँह ।

(चोपई)

• ले रमणी उच्छक अति घणइ, चाल्यो कुमर नगर आपणइ ।
 चढि साथि सेना प्रति घणा, मुणि लीयइ ततगिण सावली ॥४१२॥
 मादल संख दमा मा बीण, मगन गीत अनइ जुग मीन ।
 पुत्र सहित युवती स्त्री गाई, विप्र तिलक मुघि वेद मुहाई ॥४१३॥
 हाथी, पूरण घट कन्यका, दधि फल पुष्प दीप बन्दिवा ।
 बेस्या सूरव स्त्री सुकमाल, पुलकित नयणी वयण रसाल ॥४१४॥
 हरित द्रोव भक्षत ऊजला, सपलाँण तेजी अति भला ।
 भद्र पीठ चामर नइ छत्र, गोरोचन घृत मइ सितपत्र ॥४१५॥
 इम अनेक तम नगर मझार, सकुन थया अति घण सुखकार ।
 दक्षिण-धी वामी दिसि जाई, मंगल तो कारिज सिध थाई ॥४१६॥

(दूहा)

अंगत घूणह मंडलह, जउ निगमण करति ।
 जे घण नाह विवज्जोया, घरि कदही नावति ॥४१७॥
 जउ मंडल दाहिण सरइ, नयर-प्रवेस घराँह ।
 तिहा जयमंगन सिर विजय, बिद्धि वृद्धि नरोह ॥४१८॥

ग्राम प्रवेसि त्रिया-कजि, भय करइ नीसारि ।
दाहिण सुण होए रमो, लीजइ सार विसार ॥४१६॥

वायस जिमणा उत्तरइ, हुवइ सावहु ज स्वान ।
सावलिगा '[सूदो कहइ], पणिपणि पूरिस प्रधान ॥४२०॥

एको बेढी लूकडी, अर सावहु सियाल ।
सावलिगा [सूदो कहइ], फलइ मनोरथ मात ॥४२१॥

डावो राजा जीमणी जइ भैरख किल लाइ ।
सावलिगा [सूदो कहइ] अफल्या वृक्ष फलाइ ॥४२२॥

वानर नकुल रु चीवरी, बले दाहिणो चास ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], फनइ मना-री आस ॥४२३॥

सड वह सार सखर तुरी, डावा लाली हुंति ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], अफल्या वृक्ष फलंति ॥४२४॥

स्याल सूण काली चडी, वायस राजा तेम ।
ए सुंदरि वामा सदा, दीयइ अचित्यउ प्रेम ॥४२५॥

(दृश)

जंजू हास भूपुरे, भैरदा हेत वै हेव नोन लेय ।
वसण मेव पसिद्ध, दाहिणे सत्र चास वर्स नीपती ॥४२६॥

खर खमावि सहर जीमणो, डावा लाली हुंति ।
कंत मलेज्यो संवलो, संवल तेह दीयंति ॥४२७॥

कृभ वरे वो चीवरी, हणमंत नइ हिरणांह ।
एता लेई जीमणा, बीजा सह वामाह ॥४२८॥

हावा उपरि जीमणो, जो वहि भैरव हँति ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ, कारिज सवे सरंति ॥४२६॥

जो परभाते स्वेत चिट, वामी दाहिण जाइ ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], लाभइ राज-पसाइ ॥४२७॥

हावा भला न जीमणा, लानी जरय सोनार ।
फेकारी बोलो छुटो, चिट्ठुं दिसि एक विचार ॥४२८॥

भलप भएँती उदो, जोगणि जीमणी जाई ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], संपति सुख बहु थाई ॥४२९॥

(गाथा)

वामोय खरो, वामोय वायसो, महय चैव मेलंकी ।
वामा धूपड रडियं, पुत्राहि विण ना पावति ॥४३०॥

(श्लोक)

करे दंड घरइ सोढ्यं समभाव प्रसन्न-इक् ।
'धर्मं लामं' वदम् सम्भक्तु, थोष्ठः श्वेताम्बरः स्मृतः ॥४३१॥

विप्र. सतिलकः थोष्ठः, सदंडो मुनिपुंगवः ।
नापितो दर्पण-करो, रजको धौतशिकः शुभः ॥४३५॥

(चीन्ई)

इम अनेक शुभ हुकने करो, भायउ सुदयकुमर निज पुरो ।
बिलसइ दिन दिन सुख सुधिलास, रलियाला निस दिन रंग रास ४३

(गाथा)

जहर मैं न लणि भभरो, रेवातईय कुंजरो रमए ।
सावलिगा मरिदो, रमइ तह चैव दिण रति ॥४३७॥

मांणस-सरे स हंसो, रमति कमलाणि नीर पूरम्भि ।
अहिणोहि चंदण वणे, ए सितह चेव सस ए राया ॥४३॥

(दूहा)

रति-स्यूं जिम रतिपति रमइ, इंद्राणी जिम इंद ।
महादेव गोरी परइ, बिलसइ सुख आणंद ॥४३६॥
संसारी सुख अनुदिनइ, बिलसइ ते वरो याम ।
सखइ न ऊगों मायम्यो, करइ कतूहल काम ॥४४०॥

(चौपई)

घरस मास सम दिन सम मास, दिवस मास प्रहर परि उलास ।
प्रहर पलक पल क्षिण सम जांण, बोलावइ सुख मई गुणजांण ४४१
दिन दिन प्रीति वधइ अति घणो, ओछो नवि हुवइ मन तणी ।
अधिक अधिक वाघइ जंस प्यार, ए सुणिज्यो उत्तम आचार ॥४४२॥

(श्लोक)

सज्जनानां गुणज्ञानां, महतां मानसोद्भवा ।
सर्वदा सुखदा प्रीति, वर्तते क्षीयते न च ॥४४३॥

(दूहा)

घण-लच्छी सु-गुणी तरुणि, समय सरस सुख प्रीति ।
पुन्य बिना नरि पाभीयइ, कहइ कवियण ए नीति ॥४४४॥
कवहु रति हासी सुरस, कवहीं करइ गुण ग्यान ।
कवहु बहु प्रेमि करी, बूमइ मन संधान ॥४४५॥
कवहु बोलइ वक्र विधि, कवहु कीक की बात ।
कवहु पहेली बहु कहइ, बिलसइ सुख बहु भांति ॥४४६॥

कवहू हय फेरइ हरषि, कवहूँ गज रमणीक ।
सांमी ना वइसी करो, ब्रूअइ प्रेम विभोक ॥८१७॥

(यतः)

भीयरस तीव-रस सप्रसन्न रस, हय-रस होयइ न जास ।
संकल-बंधा सुणह-ण्यूं, गयो जंमारो तास ॥४४८॥

उवा रजवटि उह रसिकता, दोउं मनज विलास ।
सावलिगा उर धको भए, पुत्र ज्यारि सुप्रकाश ॥४४९॥

पीति नीति राजा रमइ, पासइ ज्यारे पुत्र ।
मानू हेमाचल मित्रे, दिगात्र ज्यारि पतत ॥४५०॥

सदयवच्छ राजा सुपरि, भामणि-स्यूं बहु भाव ।
प्रतपइ ज्यारि पुत्र-स्यूं, दिन दिन दोढइ दाव ॥४५१॥

(चोपई)

श्रीखरतर गच्छ गगन दिणंद, प्रतपइ श्रीजिनहर्ष सुरिंद ।
शिष्य तास बहु विबुध विचार, दीपक दपारल दिनकार ॥४५२॥

मुनि कीरति वरपन शिष्य तामु.बंधव जे राखए रंग राशि ।
शुरू अनुमति निम्र मति उल्हास, एह कोषउ मई प्रथम अख्यास ४५३

पामइ नर पदमणि सुविलास, पदमणि पामइ नर सुख वास ।
भएतां लाभइ वर्धित भोग, सुखतां प्रीतम-तणउ संयोग ॥४५४॥

बालम प्रेम तणी विहणी, जेहना बलि परदेसइ घणी ।
रति-बंधक जा निसुणइ सदा, पामइ पदि पदि सुस संपदा ॥४५५॥

६ ७ ६ १

संवत निधि मुनि रस ससो (१६७६), विजयदत्तम सतिवार ।
 चर चाहि चोपई रची, मुनि केसव सुविचार ॥४५६॥
 वेधक जो वाचइ सुणइ हुई तस वंछित हांम ।
 ज्युं सार्वलिंगा सुख लह्यो, सद्य मिल्यो सुम घांम ॥४५७॥
 तब मइ यह रचना रची, कविजन परम कृपाल ।
 सुणि कि सीखहु रसिक जन, कीज्यो दया दयाल ॥४५८॥

इति श्री सद्यवत्ससार्वलिंगा चतुपई सम्पूर्णा ।



टिप्पणी

मगलाचरण में क्रमानुसार ओकार, अह्वाणी, सरस्वती, गौरीनदन गणेश ओर, 'पूर्व सूरि' कहने योग्य कवियोंको प्रबन्धकारने बदन किया है।
कड़ी १ - महामार्द्ध-महामातृका ।

- ६ खित्तोय क्षत्रिय । पहु-प्रभु ।
- ७ पर्यतई-प्रार्थयताम् । प्रार्थना करने वालो का अभिलाष (अर्थ) पूर्ण करता है ।
- ८ चउवैई-चतुर्वेदी-चौवे ।
- ९ निदण-निर्धन । कणवितिया जोबो-कण वृत्तिआजीवी ।
देखिये कड़ी २४, कुलवित्ति ।
घरणि-गृहिणी । नराहिब नराधिप ।
पचूसे प्रत्यूपे । प्रभात में ।
- १० पयासिय-प्रकाशित ।
- ११ सुविजजउ-मुविद्य ।
- १२ प्रच्छइ-वृच्छति । जवइ-कवयति । कप् धातुका प्राकृत आदेश ।
दिट्ठि दृष्टि ।
- १६, बरलिउ-उक्तवान् । तुम जो बके हो ।
- २० बिह-पाहिइ-तीन पेर वालेसे (अधिक) ।
- २२ सरिस सटण । देखिये, 'सुपुरिस-सरिसी' कड़ी १३ ।
- २३ भु हिरइ (स) भूमिगृहम्-भूमिहर (गु) भोगरू ।
- २४ अलोम (स. अलीक)-मिथ्या । (गु) अले, आले, आलें ।
देखिये 'आलि,' कड़ी ९८ ।
- २५ तिलय नइ ठामि-तिलकनइ ठामि-सलाटे ।
- २७ मुणइ-संज्ञा धातुका आदेश । गज-पाखलि-गजके पक्षमे आसपास
- २९ सलसलो सकइ-हाली चाली सकइ ।

लिलिचित्रामि-(स.) चित्र-+चित्रं (प्रा.) चित्र-अम्म, चित्राम् ।

३१ घाइ-‘घाइ’ वाचिये । (सं) घावति) किरि-उत्प्रेक्षाके सूचक पद ।

३२ स कल- (सं.) सुदृढता । धार-अणी ।

३३ पगर-(सं.) प्रवर-संगूह ।

३४ रेवणी-(सं.) रेव घातुसे ।

लाख हुआख । ‘न’ वा ‘ल’ ।

३५ दोसी-(प्रा. दोतिस, स. दूप्य-वस्त्र, दूप्येन व्यवहारित स. दीप्यव.)
दूप्य के व्यापारी ।

परिलि-परीक्षक । मुन्ना चांदी के ।

फडीआ-(फा) अन्न विक्रेता । फोफलीआ-(स) पूष फल (प्रा.)
पोफल (जू.-गू.) फोफल, उनके व्यापारी । सार- (सं.) सहकार,
(प्रा.) सहआर, सार, साहाय्य, रक्षा ।

३६ हालकलोल-(प्रा. हल्लवल्लोल)

पोता-(स पोतानि) वस्त्र । किरियारां-(स. कयाणवानि)

३७ पाधरि-(स) पाधरे । सरन मगां में । लूसइ-नूटे ।

सोकिइ-ध्या-(स) शिकवे ।

३८ गयद-(स) गजेन्द्र । सुर-हट-मुरा के हाट ।

३९ पचायण-(स) पचानन, सिंह । पाखरिउ-स्वारी बिपा हुआ ।

४० सुं डाहुल-(स) सुं डाफल, दन्तुमाल ।

४१ पसाउ-(सं.) प्रसाद, भेट-रूप पदार्थ ।

४४ नवद्वारहि-(सं.) द्वार । देखिये, गीता । ‘नवद्वारे पुरे गेह’ ।

आघरणि-(सं.) अग्रगमिणी, पहली बार गमं धारण करनेवाली
कुलस्त्री ।

धवल-धूणि-धवल, भगन गीत के ध्वनि (धूणि) ।

देख-वेद ।

४६ सइहधिई-(स) सीमन्त केशो का ग्रथन । देखिये कड़ी ८४ ।

पस पूरइ-(सं.) प्रसूति । मगड श्रीफल और अन्य द्रव्यों से हस्ततल का पूरना ।

४७ घाट-रेशम का वस्त्र ।

४८ असुरा-(सं.) शकुन, (प्रा. सउण) अपशकुन । देखिये कड़ी ८१ ।

४९ गजर-(सं.) गर्जना । सगूँ सणीजूँ-सं. स्वकम्, सगूँ । सं. स्नेह जं-सनेह, सणेहजं) देखिये कड़ी ९० ।

५१ राउत-सं. राजपुत्र, प्रा. रा+उत ।

वसह विशुद्ध- (सं. वंशस्य) विशुद्ध वंश के ।

५३ आहवि अहग-युद्ध अभंग ।

५४ जूवटइ-(सं. द्यूत+वर्त्म, प्रा. जूवट्ट) द्यूत मार्ग, द्यूतस्थान ।

पहुवच्छ-जाइ-प्रभुवत्स जातः, प्रभुवत्स का जाया, सदयवत्स ।

दूहबइ-(सं.) दु स्वयति । डारिड-डर बताया ।

५५ बाहर-साहाय्य ।

५७ जम-मुहि-यममुखे ।

५९ असिभर-‘असिबर’ चाहिये । असिभोमिं श्रेष्ठ । देखो कड़ी १४६

६० करिमालि-(सं.) कारवालेन ।

६२ मेगल-(मं.) मदकल, मदसे कल मनोहर हस्ति । और ‘मदगल,’ जिसके गंडस्थल से मद गलता है ।

पवरिस पार-(सं.) प्रवर्षका पार ।

६४ पुहइव-(सं.) पृथिवी, प्रा. पुहवी, पृथ्वी ।

६५ समोपी-(सं. समर्प) सोप दी । जुहार-(सं. जयकार) प्रणाम ।

बिमराउ-(सं.) द्विगुण, (प्रा.) विउणव, दुपट्ट ।

६८ लज्जरयउ-पढिये । लज्जित हुआ । देखिये कड़ी ६९ ।

सोसारी पंक्ति-सुधार के पढिये । गजगंजण। लज्ज जइ (लज्ज किमइ ।’

चतुर्थ पंक्ति-सुधारके पढिये । ‘किम वि जय-सइ सुसमर तिमइ

७० राणिमनइ-‘राणिम नइ’ पढिये, राजत्व, राणाका पद ‘राणिम’ ।

- ७१ पयाडउ-(सं.) प्रवाद प्रशस्ति ।
- ७१ पसाहं-प्रसादेन । कृपा से । पहीस-(सं.) पृथ्वीश ।
- ७३ चाचरि-(सं.) चत्वर, अपन मे । लुहट (लट्ट) पणा (सं.) लघुवत्त्वेन, छोटेपण । अंगी-कर अंगीकर । देखिए बड़ी ८७ ।
- ७९ गूडीय वन्नर वालि-(सं. वन्दनमाला) देखिये । नन्दामृत मानमंजरी । “शुद्रावलि जनु मदनगूह.योधा वंदनमाल” । छोटी घजा और तोरण ।
- अगालि (सं.) थकाले ।
- ८० बट्टावणी (सं.)वर्षापन, (प्रा) बट्टावणी बघावा निमित्त । पडसहे-(सं) प्रतिघम्द, पडघा ।
- ८१ कइवार-सत्कार ।
- ८३ कणाय-(सं.) वनक, सुवर्ण । कच्छाहि केकाण-कच्छ देग के प्रसिद्ध अश्व ।
- ८५ मुत्ताहल-(सं) मुक्तापल, मोती ।
- ८६ मुहुत्ता-(सं.) महामात्र, अथवा महत्तर से संबंधित मुख्यमंथी । महत्तर, महत्ता, मुथा आदि अपभ्रंश रूप प्राप्त है ।
- भूप जमलउ (सं.) यमल, बराबरीके, एक जोड़ीके, एक सरीखे ।
- ९१ रुसह (सं.) रूप धानु रोप करे ।
- ९२ मतिपयइपरू-(सं.) मंथी पद । इधर पंथीके द्विर्भाव प्रयुक्त है, ‘ह’ (स्व) और ‘पणू’ (सं) त्वन, पण) ।
- ९३ पाली-एक नाव जिसमे सात सेर कच्चा रहता है ।
- अरक-(सं.) अर्क-सूर्य ।
- ९५ कालमूहुअ-(सं. कालमुख.)श्याम वर्णः ।
- ९६ ताग- अत ।
- १०० अहिठारिण-‘आ’ प्रतिका पाठ ‘अप्पाणि’ विशेष युक्त है । सं. अधिष्ठान । उलग-सेवा ।
- १०३ सुरक-मु रक मु-शत पदिये । सुतरां रंकः अत्यंत रंक, ऐसा अर्थ

भी हो सकता है ।

चितारण-चितारन, चितामणि । जो चितवन करे सो प्राप्त कराने वाला अमूल मणि । कित्तज-(सं. कियत्), कितना भी । वीय मयक(सं.) द्वितीया (बीज वीय) का मयंक (सं. मृगांक), चन्द्र । शुक्ल द्वितीया की चंद्रलेखा घड़ी भर के लिए दृश्यमान होती है ।

१०६ घमी घमाविज-धमीधमाविज (एक शब्द), धमधमाया ।

सदस्यवत्स-‘सदयवत्स’ पढ़िये ।

१०७ ऊलग- सेवा ।

जुहार जयकार, जयहार, जउहार, जुहार, प्रणाम ।

१०८ रुड्ड- रौद्र, रुद्र स्वरूप, भयंकर ।

हासामिसिह (सं. हास्यमिषेण) हास्य का निमित्त बताकर ।

१०९ नीच-नीचु । दृष्टांत अलकार । निठाडइ-निदाडइ । तिरस्कार करके निकाल देना ।

११० जीहां-(सं. जिह्वा) ‘जीहा’ पढ़िये ।

१११ भमहि-भ्रू, भृकुटि ।

अचरिज-(सं. आश्चर्यं, प्रा. अचरियं) ।

११२ ऊहटइ-(सं.) अबघटयति ।

११४ ताजणउ-(सं. तर्जनकम्) चावूक ।

११७ राजल-(सं. राजकुल) राजका निवास-स्थान ।

राम-(सं.) अरण्य; (प्रा. रण, जू. गू. रान) जंगल ।

११८ दूसरी व कित मुभापित के रूप में प्रसिद्ध है ।

सबल-(सं. शम्बल) भायुं ; (सं. भक्तोदेनम्) । भत्था

११९ प्रणीमू-प्रणामू पढ़िये ।

१२२ मइमारिउ- मई मारिउ । पढ़िये ।

छरइ-घरइ पढ़िये । सयल-सकल ।

१२३ आयस-(सं. आदेश) आज्ञा ।

- १२४ वंधेया-(सं. बद्धम् प्राकृतमें तुम्का एवं एम्बा) हवयं वृद्धं ।
 सन्धन करने के लिये । देखिये कड़ी १३४, 'आपेवा भणी', और
 कड़ी २६४ ।
 केत्यउ-(सं. कृत्य, प्रा. कत्य) किहां ।
- १३६ (राज अन्याय) जिसां सहइ-जि, सासहइ, जे को सहन करे ।
 देखिये कड़ी १३८, 'किम सासहइ' ।
- १२८ पयड-(सं. प्रकट) स्पष्ट रूप में ।
- १३० राजा-पाहिइं-(सं. पाश्वं; प्रा. पास पाह-पाहि, पई, पे) एवं
 अनेक रूप में प्रयोग मिलते हैं ।
- १३६ महि हत्थिइं-'सहि हत्थिइं' पढ़िये । (सं. स्वहस्तेन) अपने हाथमें
- १३९ मइलउ-(सं. मलीन) अपवित्र, दोषयुक्त ।
- १४० सइइ-'सप्प' पढ़िये (सं. सर्प) ।
- १४१ पहिली पंक्ति सुधारके पढ़िये । 'नह मांस मेय जणणो, दो मुहलो
 हडि खंडण समत्था ।'
- १४३ मंड-ग्येहु की मिष्ट रोटी । गुजराती में मुह्वरा है 'मनने गम्मा
 ते मांडा, ने लोक कहे ते गांडा ।'
- १४३ सउणभणी-(सं. शकुन प्रा. सउण) शुभ शकुन माननेके लिए
 देखिये कड़ी २४६ ।
- १४४ सह-(सं. शब्द) आवाज । धवलहर-धवलगृह ।
 अतरि-(सं. अंतःपुर, प्रा. अन्तेउर) अन्तेउरि पढ़िये । स्त्रियों
 का निवास स्थान ।
- १४६ असिमर-'असिवर' पढ़िये । श्रेष्ठ तलवार ।
- १४९ सूर-'सुर' पढ़िये ।
- १५३ माइ-माई । पीहर-(सं. पितृ गृह, प्रा. पीइहर) पीहर ।
- १५४ पृठ्ठि-'पुट्टि' पढ़िये ।
- १५९ जंघजूअल-जंघ जुअल (सं. जंघा युगल) ।
- १६० निलवट-(सं. नलाट पट्ट) ललाट में ।

ताडोक-‘ताडक’ पढिये।

१६१ मयरकेत-(सं. मकरकेतु) कामदेव ।

१६२ खड-‘खड’ पढिये ।

१६६ ‘उदउ’ भणइ- उदय हुआ ऐसी आशीष भणती जोगिणी दाहिनी जाती है ।

१६९ डाउ-‘डावउ’ (वाम बाजु) पढिये ।

१७५ देवा-देवी ।

१७६ सविहंगमइ-सविहू गमइ ।

१७६ सुर-(सं. सूर्य) ‘सूर’ पढिये ।

१८८ पलीथ-‘पलीय’ पढिये ।

१८९ बिलकिलिउ-व्याकुलीउ व्याकुल हुआ ।

१९१ नस मास ‘नस मास’ पढिये ।

१९४ अहिठाण-अधिष्ठान । पहिठाण-प्रतिष्ठानपुर ।

१९५ पबरिस-पौरुष ।

१९७ कउडी-(सं. कपर्दिका प्रा.) कवडिया कउडा । काँडी ।

घूत खेलन मे इसका उपयोग होता है ।

१९८ भब भगति-सारा आयुष्य भरणी की हुई भक्ति ।

हेलां-रमत मात्र मे ।

२०१ पचार उपचार अर्थ मे समझना चाहिए ।

२०३ उलगि-‘उलगि मु’ पढिये । उजगि स्यूं मेवा करू गी ।

२०५ अखाणउ (सं. आभाणकम, प्रा. आहाणउ) उपाख्यान, लोकोक्ति । देखिये कडी ३४६ ।

२०६ रण्य-(सं. अरण्य) । देखिये ‘रान’ कडी ११७ ।

२०९ सुरहा-सुरहि (म. सुरभि) सुग धा ।

२१२ फुलंब-‘फुलव’ पढिये । नायवेसि-नागवेसि ।

२१४ वंकडीपाकुलीय पयडोय पलास-समान भाव के लिये देखो ‘वसन्त विलास’, लिपिसंघत १५१२ का दूहा ।

‘बेगू-बखी अति बाँटुही, आँटुही मयण ची जाणि ।
विरही नां इणि बालि, बालिज बाढ़द साणि ॥’

तिथास निवास पढिये ।

२१६ फफक ‘बबर’ पाठ होना चाहिये ।

२१९ धजबड (मं. ध्वजपट) । पढिआर—(मं. प्रतिहार) मन्दिर के
प्रतिहार के रूप में स्थित ।

२२३ सूंदा पाहि—‘गूदा पाहि’ पढिये ।

२३२ आलबड—(सं. आलपति) आलाप करनी है ।

२३३ पांगति (मं. पंक्ति) ।

२३६ सांइ—(सं. स्वामी) स्वामीने माबलिभीरी सावि लीपावनीको सी

२४२ जुहार—(सं. जयवार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।

२४३ पुहर पंथ एक प्रहरमें पहुच सके इतना दूर । अति दूर नहि ।

२४४ धूम्रा—(सं. दुहिता का ये प्राकृत रूप है) पुत्री ।

धरू—‘बछू’ पढिये ।

२४६ अबदडी—(सं. अबधि) ।

२४९ माडलड—(सं. मातृकुल प्रसिद्धः) ।

२५४ परतु—(मं. प्रतीन) सच्चाई का अनुभव ।

२५९ गुजभ (सं. गुह्य) छुपाने लायक कोई बात ।

२६० सउकि (सं. सपत्नी) ।

२६६ सीली-गई—‘लीलागई’ पढिये ।

२७३ सपराणी—(सं. सप्राणा) चेतनवती, उत्तम थैल ।

२७८ जमहर (सं. यमगृह, प्रा. जमहर) राजपूत इतिहास में शत्रु
का विजय देख के राजकुल की महिलाये ‘क्षमोर’ करती थीं ।
ये अग्निकुंड में भस्मीभूत होती थीं । यमगृह प्रवेश अथवा
आत्मघात का अर्थ में प्रयुक्त है ।

२८६ भीदाता—(सं. सीद् शत्रु) दुखित होना, दुस पाते हुए ।

२८७ गागेय-भीष्म । साणि बभिमान रखने में । कविका महाभारत

के पात्रों का अच्छा परिचय इस प्रशस्ति से प्रतीत होता है ।

२९१ वड वाह्मि-वड़े (संदेश) वाहक ने वद्धापनिका दी ।

वद्धामणी (सं. वर्धापनिका) अभिनन्दन ।

२९३ सौकिइ-सौमिइ (सीमाओं में) पाठ ठीक रहेगा ।

२९९ पाधरउ-(सं. प्राध्वरक.) रास्ते में पाद से चलने वाला मामूली आदमी ।

३०० बारहट्ट-(सं. द्वारभट्ट, प्रा. में बारहट्ट) जो लोकभाषा में 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है ।

३०१ मेलउ- 'मेलउ' पढ़िये । मिलाप कराया । हर हेत हर (ईश) के कारण से ।

३०६ पंगुरण-(सं. प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र ।

३०७ मउडद्वय-(सं. मुकुटद्वय, प्रा. मउड गू मांड) । मुकुट को धारण करने वाले । 'मुडूघा' शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है ।

३०९ सेणाहिब-(सं. सेनाधिप) ।

३१० वेयभूणि-(सं. घ्वनि; प्रा. भूणि) वेद का घोष ।

३१२ उपान्त्य पंक्ति को सुधार के पढ़िये - 'आगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसंतनिसि-ऊजली ।'

३१४ रलीयाइति-('रली' आनन्द के अर्थ में) आनन्दित ।

३१८ लेवि-(सं. क्षेप) वेग में जो चढ़ते हैं । सालिहुंत-(सं. शालि होत्र) अश्वशास्त्री । लक्षणा से सर्व धुम लक्षणोपेत अश्व का बोध होता है ।

३१९ पात्र-नतंकी । इस शब्द अपभ्रंश के रूपमें पातर अर्थात् सामान्य गणिका का अर्थ में होजाता है । नृत्य शास्त्र का संपूर्ण अम्पास के बाद नतंकी को 'पात्र' पद प्राप्त होता है । देखिये 'समस्ताभ्यास-संयुक्ता, नतंकी पात्र मुच्यते' । मुद्राकलशविरचित 'संगीत सारोद्धार' में ।

- ३२५ ग्रहिण्युत्तर (न अभिनव) गयीन ।
 दोपि भरन्ती-गुमार के दोनों हाथों में सम्बन्धी जन मागलिन
 पदार्थ भरते हैं ।
- ३३३ पट्ट-जाउ-(प्रभुवत्त-जान-) प्रभुवत्त का पुत्र ।
- ३३६ फईछार-(मं.) बकित्य उच्चार ।
- ३४० योलाविउ ग्रहनेशी-(मं. भगिनीपति, प्रा. बहिणी + पद)
 ग्रहनाइ ।
- ३४० छःदरशन-जोय जगन और ईश्वर सम्बन्धी निम्नका छ प्रमुख
 भाग' को 'दर्शन' कहते हैं ।
 सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय पूर्वमीमांसा अथवा धर्ममीमांसा,
 और उत्तरमीमांसा अथवा ब्रह्ममीमांसा माने वेदान्त । दूतरी-
 गिनती में बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन को भी शामिल किया है
 और श्लोष चार्वाकमत को भी शामिल करते हैं ।
- ३५४ देसाउर-(सं. अपर देश.) परदेश ।
- ३५९ सुपुरुष और नृसिंह (नरसिंह) नामसे सयर (स्वेरे) स्वतंत्र है ।
- ३६३ घसाहस-घसाघस पठिये ।
- ३६५ साविज-(सं. द्वापद, हिंसक पशुः पक्षी के अर्थ में) । इसका
 प्रयोग देशी भाषाओं में उपलब्ध होता है । स. सु-वाज
 (पास ?) से व्युत्पन्न होना सम्भव है । देखिये, भाषणवृत्त
 'कादम्बरी', पूर्व भाग 'शुक सारिवा साविज माहि, बोलि पद
 प्रकाश ।'
- ३७३ पडमोंहि-(सं. सूतपट) चीपट की बाजी ।
- ३८७ घाघलहर-'धवलहर' पठिये । (सं: धवलगृह; प्रा. धवल हर
 सुपापवलि गृह) ।
- ३९१ लच्छि-(सं. लक्ष्मी), देखिये गुजराती गौरीगत में लक्ष्मीवन
 के पुत्र का उत्तरेख 'ओ लाछाकुंवर' । देखिये बड़ी ४०२ ।
- ३९७ आचर्जन-अनुब्रूय करने के लिए उपचार ।

- ४०२ दोसो-(सं. दोशिकः) कापड के व्यापारी ।
- ४०३ मास-ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान ।
- ४०४ नातरु-(सं. नात्रकम् ? जानेय ?) स्नेह-सम्बन्ध ।
- ४१२ दव-'देव' पढ़िये ।
- ४१३ कलास-'कलास' पढ़िये ।
- ४१८ ढोणां ढोईइ (सं. ढौकनानि) 'भेटणां'-उपहार अप'ण कीजिये
- ४२० मुडधा-(सं. मुकुटधारी; प्रा. मउडधा मुडुधा) देखिये
'कान्हडदे प्रबध' में खड २ कडी ६९ ।
- ४२६ मुन पकखेसि-'मु न पकखेसि' पढ़िये । मुझे नहि देखेगा ।
- ४३२ सपराणी-(सं. प्राण) प्राणवान अत्यंतका अर्थ में 'सबिहु सप-
राणी' वाक्य खड में 'श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ ध्वंजित होता है ।
- ४३६ पढम-(सं. प्रथमम्; अपभ्रंश, पढम) पहिला ।
सरडु-(सं. सरटः) काफोडा ।
- ४३७ असुउणि-(सं. अशकुन, अपशकुन) अपशकुनकी वेला में ।
- ४३३ ऊहुडोनइ-(सं. उद्धृत्य) ।
- ४४६ रडिल-अति आग्रही । डोह-दोहन ।
- ४४७-४८ छोह-ओभ । वाउ-वात ।
- ४५२ झारीसउ-(सं. आदर्श; प्रा. आयरिसउ) दर्पण ।
एकदन्ती-एक दन्त अवशिष्ट रहा है ऐसी परमश्रद्धा गणिकाकी
माता ।
- ४६० संपरदाउ-संप्रदाय ।
मत्तवारणउ-शरूखा में । मूधा-मुग्धा । दीति-देदिष्यमा
- ४६१ सधुडिउगीत-ध्रुवा सहित गीतम् ।
- ४६५ पात्र-देखिये कडी ३१९ ।
- ४६६ गुज'र वैद्य का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता ।
- ४७४ हलई-(सं. लघुक; प्रा. लहुआ) हलकी, मानमंग ।
देखिये 'मुदामासार' काव्य में । 'याच'ता जे निमुंस जाइ,

मृण-मदं से हलूत थाह ।

४७९ समान विचार का अनुसंधान के लिए देखिये 'माधवानल काम-
कन्दला प्रबन्ध ।' अंग ६, दूहा ५४-१०४ ।

४८१ सुरहां-(सं. सुरभिक्षानि, प्रा. सुरहिआ) मुगंधी मुवासमुक्त ।

४८६ अनोप-(स. अन्यत्र, प्रा. अन्नत्य) ।

४९१ वेश्या-निदा के लिए देखिए 'माधवानल कामकन्दला प्रबन्ध'
अङ्ग ७, दूहा २४३-२४६ ।

४९५ लाचि-(सं. सचा) अनधिकृत द्रव्य की लासच ।

५०० आपणापू-(स. आत्मीय, आत्मान अपना) ।

५०१ आचरजह देखिए-बड़ी ३९७ । अनुकूल बनाती है ।

जूजई-(प्रा. जुम जुय) निम्न, पृथक् ।

५०२ आयस-(स. आदेश) आज्ञा ।

५०३ असूर-(स. उत्सूर्ध्व) सूर्य को अस्तमान होने से वाद । विलग्न
न करो ।

५०७ सपराणा-देखिए बड़ी ४३२ ।

५१४ आयि-(स. अर्थ) अर्थ से, द्रव्य से हार कर उठ गया ।

५१९ आफणो-(प्रा. अप्पणीयम्) स्वयं, खुद ही ।

५२४ अलविह-(स. धल्पेन आयासेन) सहज ।

५२९ अहिनाण-(सं. अभितान, प्रा. अहिनाण) निशानी, एयाणी
परिचय ।

आत्र-(सं. सन् धातुसे शब्द बनता है) ।

दिवार में खुदने से प्रवेश होकर भीर्य कार्य होता है ।

५३५ सभेरह-(स. संहरण) माल का संकलन करता है ।

५३६ हडताल-(सं. हट-+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर
देना ।

५४० नन्दलोकनद्वणिको को 'नन्द' शर्म दिया जाता है । इससे नन्द
शब्द से वैश्य का बोध होता है । गुजराती में मुहावरा है

“नन्दना फंद गोविंद जाणे ।”

५४३ लांभा-कनिष्ठ ।

५४७ पूछम- ? । विनडो-विडम्बित की । सात-मुल ।

५५० कमिणी ‘कामिणी’ पढिये । अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

५५४ सातो-याचो । सच्चा, पक्का, चोर ।

५५६ केत-(सं. केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है ।

५६३ तलार (सं. तलारस) नगर-तलकी रक्षा करने वाला । भाषा में ‘तलाटी’ शब्द से बोला जाता है ।

मोलगु-सेवक

५६८ मोकलि जे-‘मोकलिजे’ पढिये ।

५६९ फेडेसिइ-त्याग करायेंगे ।

५७९ अर्थांतर न्यास । सुभाषित रूप में ।

५८१-५८३-वणिक-श्लाघा ।

ऊडइ-(सं. उद्वहति) ।

५८५ कदल-कलह ।

५८७ परीछयउ (सं. पृष्ठम्) पूछताछ की ।

५९४-९५ परतनउ-परकीय परका । पीहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है ? ।

५९९ तरणि-सूर्य । त्रिकम-(सं. त्रिकम) तीन ढग में स्वर्ग मृत्यु पाताल में व्याप्त होनेवाला विष्णु ।

६०१ बाहुण-वहाण यान-यात्र । नोजामा-(सं. नियामक, प्रा. निज्जा-भय) कर्णधार, केवटिया ।

६०६ उपांपला-व्याकुलता

६०७ अणोसरा-(सं. अनाद्यया) आश्रय रहित की ।

६१० थापणि-न्यास । मोस-मृषा, मिथ्या ।

६१३ मांटी-भुरूप, शूर पराक्रमशील मनुष्य ।

उसरावण कीघउ (सं. उत्सर्जन) भुक्त किया ।

- ६१४ परा-महत्त-पग, प्रतिज्ञा वा महत्त्व ।
 ६१६ कसौ-(सं. कप् धातु) कप, कटोरी करी ।
 ६१८ तलवार की उपर नाम-मुद्रा अंकित करने की रीति प्रतीति होती है ।
 ६१९-आपोपद्-स्वयमेव ।
 ६२१ अर्थांतर ग्यास । मुभापित ।
 ६२३ सुंढाहति-(सं. सुंढाफल) ।
 ६२६ सद्दहयि-(स्वयं हस्तेन) खुद अपने हाथ से ।
 ६२८ सौजन्य-मूचक मुभापित ।
 ६३२ भडिवाउ-(स. भटवाद) अपने को शूर मानने का अभिमान ।
 ६३४ सेलहत-(स. सेलन हस्ते यस्य, प्रा. सलहरय) गुटराउके खंटावाल ब्राह्मणों में 'सेलत' की अवटक प्रसिद्ध है ।
 ६३५ कीधारेवणी-(सं. रेव् धातु) पत्तापन घर दिया ।
 ६४० सांध-'स धि' पडिये ।
 ६४४ उलवण-(सं. उल्लपन) आलाप संसाप ।
 ६४७ आणू -(सं. आनयनम्) ।
 परिवह-(सं. परिग्रह, प्रा. परिगह) परिवार ।
 ६८३ उदाहरण-दृष्टांत । पुरावा । गवाहि ।
 ६८५ सोधइ-'सोचइ' पडिये ।
 आदीसर-(आदीश्वर) जैनों के प्रथम तीर्थंकर, आदिनाथ ऋषभदेव ।
 ७०४ पुरिसत्तण-(सं. पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम ।
 ७०६ आस-भूमि का जो सड़ दान में दिया जाता है । 'आस' पाने वाला 'आसिया' कहलाता है ।
 ७१० साय समाहरण-साधन सामग्री ।
 ७११ बन्न अठार-चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र 'नव नाह', और 'पंच काह' कारीगर वर्ग, समेत अठ्ठारह वर्ण कहलाती है ।

- ७२० बजा बार तउ भाजन कर-इम प्रकार का प्रतिज्ञा ग्रहण
 'कान्हडदे प्रबन्ध'मे पाया जाता है। देखिये खंड १, कडी १८०
- ७२३ पोयाणे-(सं. प्रयाण)।
- ७२६ करह-(सं. करम) ऊंट।



- पृष्ठ १०४ पंक्ति ४। 'प्रमेमोऽयं'-'प्रमोदाय' पढ़िये।
- १०५ कडी ७। चग-'चग' पढ़िये।
- १०६ कडी १३। मयाल-(सं. मृदु, प्रा. मउ) मायालु।
 कडी १६। पुष्पदंस-'पुष्पदंत' पढ़िये।
- ११० कडी ४७। शत्रुकार-(सं. सत्रागार) सत्रकार पढ़िये।
- १११ कडी ५६। घाडा-'घोडा' पढ़िये।
- ११८ कडी ७२। तेणि अवस 'तेणि अवसरि' पढ़िये।
 सेडोदेवति-'क्षेत्र देवता।'।
- १३५ कडी ६। घार-'घारि' पढ़िये।
- १३७ कडी २३। सुना-'सुता' पढ़िये।
- १८५ कडी सख्या ४५५, ४५८, ४५९, को एक सुधार के पढ़िये।



पुर्ति-प्रस्तावना पृष्ठ 'ओ'

'पद्मावत' में सदयशर्म कथा का उल्लेख
 अब जो मूर गगन चढ़ि धावहु ।
 राहु होहु तो ससि कह पवहु ॥
 विक्रम पैसा पैम के बारा ।
 मन्नावती कहं गएउ पतारी ॥
 सदैवच्छ मुगुपावति रागी ।
 व चनपुर होइगा बैरागी ॥
 राजकु वर व चनपुर गएऊ ।
 मिरगावति कह जोगी भएऊ
 भाषाबु वर मनोहर जोगू ।
 मधुमालति कह कीन्ह वियोगू ॥
 प्रभावति कह सरगुर साधा ।
 उखा बागि अनिरुधवा बांषा ॥
 ही रानी पद्मावति, सात सरग पर वास ।
 हाथ बंदी सो तेहि के, प्रथम जो आपुहि वास ॥

—पद्मावती, दो० २३३-१७

समाप्त